

अक्टूबर 2024 ■ वर्ष : 70 ■ अंक : 01 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹70

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि



अणुव्रत



बुराई पर अच्छाई की जीत
अणुव्रत एक नवनीत

अणुव्रत पुरस्कार 2023 श्री रतन टाटा को भेंट



समाचार
पृष्ठ 43
पर...

2024 के लिए अणुविभा के पुरस्कारों की घोषणा

अणुव्रत पुरस्कार



जस्टिस
दलवीर
भण्डारी
जोधपुर

अणुव्रत गौरव सम्मान



श्री
के.एल.
पटावडी
दिल्ली

अणुव्रत लेखक पुरस्कार

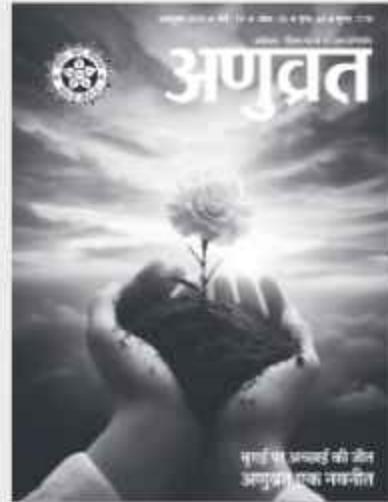


डॉ.
कुमारपाल
देसाई
अहमदाबाद

अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार



श्री
अरविन्द
वर्मा
न्यूयॉर्क, अमेरिका



वर्ष 70 • अंक 01 • कुल पृष्ठ 60 • अक्टूबर, 2024

■ ■ ■
अणुव्रत एक त्याग और संयम का आंदोलन है। परम पूज्य अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाया। उसके अनुरूप यदि आदमी की जीवनशैली होती है तो यह वर्तमान जीवन भी अच्छा बन सकता है और उसका प्रभाव अगले जन्म पर भी पड़ सकता है। आदमी की जीवनशैली संयम प्रधान हो जाये तो उसका जीवन अनेक समस्याओं से मुक्त रह सकता है और आदमी-आदमी अच्छा बन जाये तो समाज, राष्ट्र, विश्व भी अच्छा बन सकता है।

-आचार्य महाश्रमण

■ ■ ■

सम्पादक

संचय जैन

सह-सम्पादक

मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट

मनीष सोनी

क्रिएटिव

आशुतोष ठार्य

चित्रांकन

मनोज त्रिवेदी

| | |
|-----------------------------|---|
| अविनाश नाहर अध्यक्ष | भीखम सुराणा महामन्त्री |
| राकेश बरड़िया कोषाध्यक्ष | सुरेन्द्र नाहटा संयोजक, पत्रिका प्रसार |

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

| | | | | |
|---------------|-----------|-----------|---------|-----------------------------|
| एक अंक | - ₹ 70 | एक वर्षीय | - ₹ 750 | अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी |
| त्रिवर्षीय | - ₹ 1800 | | | केनरा बैंक |
| पंचवर्षीय | - ₹ 3000 | | | A/c No. 0158101120312 |
| दसवर्षीय | - ₹ 6000 | | | IFSC : CNRB0000158 |
| योगदानी (15%) | - ₹ 15000 | | | |

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::



इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें



आणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली-110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org

www.anuvibha.org

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



अणुव्रत | अक्टूबर, 2024 | 03

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाठ्येय

| | |
|---------------------------|----|
| ■ संकल्प-शक्ति का चमत्कार | 07 |
| आचार्य तुलसी | |
| ■ अहिंसा की मर्यादा | 10 |
| आचार्य महाप्रज्ञ | |
| ■ एकला चलो रे | 15 |
| आचार्य महाश्रमण | |

आलेख

| | |
|----------------------------------|----|
| ■ जीवन की सफलता का मापदण्ड | 17 |
| मुनि राकेश कुमार | |
| ■ हृदय परिवर्तन से... | 20 |
| मुनि कमल कुमार | |
| ■ अणुव्रत : भाव-क्रांति... | 21 |
| हरिशंकर द्विवेदी | |
| ■ भरत : एक अद्वितीय चरित्र | 22 |
| डॉ. योगिता जोशी | |
| ■ गांधी मार्ग और आत्मनिर्भर भारत | 23 |
| डॉ. सी. जयशंकर बाबू | |
| ■ जिन्दा समाज के लिए... | 25 |
| मनोहर चमोली 'मनु' | |
| ■ एआई, तू क्यों आयी! | 28 |
| जय बोहरा | |
| ■ क्षमा करना स्वयं... | 29 |
| डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट | |

कहानी

| | |
|---------------|----|
| ■ यात्रा | 32 |
| प्रगति गुप्ता | |

गीत

| | |
|-----------------|----|
| ■ सुख के दिन | 19 |
| मनोज जैन 'मधुर' | |

लघुकथाएं

| | |
|---------------|----|
| ■ अहं विसर्जन | 24 |
| हरदाम हर्ष | |
| ■ कपाट | 27 |
| बीनु जमुआर | |

| | |
|-------------|----|
| ■ सम्पादकीय | 05 |
|-------------|----|

| | |
|------------|----|
| ■ परिचर्चा | 35 |
|------------|----|

| | |
|-----------------------------|----|
| ■ बच्चों का देश : रजत जयंती | 41 |
| विशेषांक लोकार्पण | |

| | |
|-------------------------|----|
| ■ अणुव्रत पुरस्कार 2023 | 43 |
|-------------------------|----|

| | |
|------------------------|----|
| ■ अणुव्रत बालोदय शिविर | 46 |
|------------------------|----|

| | |
|----------------------------|----|
| ■ पर्यावरण जागरूकता अभियान | 47 |
|----------------------------|----|

| | |
|--------------------------------|----|
| ■ बच्चों का देश : काव्य गोष्ठी | 50 |
|--------------------------------|----|

| | |
|--------------------------------------|----|
| ■ संयुक्त राष्ट्र अधिकारियों से भेंट | 51 |
|--------------------------------------|----|

| | |
|-------------------|----|
| ■ अणुव्रत संरक्षक | 52 |
|-------------------|----|

| | |
|------------------|----|
| ■ अणुव्रत समाचार | 53 |
|------------------|----|

| | |
|------------------|----|
| ■ अणुव्रत की बात | 55 |
|------------------|----|

| | |
|------------|----|
| ■ पाठक परख | 56 |
|------------|----|

■ अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकता।

■ anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रवित करें।

■ इमेल द्वारा संप्रेति कर्म्मोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राधिकृत दी जायेगी।

■ पोस्टो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में उसमर्थता रहेगी।

■ घास्टरएप पर फोटो न भेजें।

■ अनिमत्ति सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।

■ प्रकाशित रचनाओं में यकृत विचार लेखकों का निती चिंतन है। प्रकाशक

एवं सम्पादक द्वारा लिए जावाबदेह नहीं हैं।

■ इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विचार का न्याय दोत्र दिल्ली रहेगा।



चरैवेति चरैवेति...

क हते हैं - किसी भी बड़े कार्य की शुरुआत एक छोटे, सुविचारित कदम से होती है। यह भी उतना ही सत्य है कि निरंतर उठाये गये ये छोटे-छोटे कदम ही कालांतर में एक सुदीर्घ सफर का रूप लेते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है 'अणुव्रत' पत्रिका का प्रकाशन।

लगभग 6 दशक तक पाकिस्तान के रूप में और पिछले लगभग एक दशक से प्रति माह प्रकाशित हो रही इस पत्रिका ने अब 70वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। कल्पना कीजिए, एक पत्रिका जो लगभग 1500 अंकों का गौरवशाली इतिहास अपने में समेटे है। 'अणुव्रत' अंकों का यह संकलन एक मायने में सम्पूर्ण अणुव्रत आंदोलन का विहंगम लेखपत्र है।

अणुव्रत आंदोलन और इसके अंतर्गत अनेकानेक प्रकल्पों की परिकल्पना परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के दूरदर्शी चिंतन की परिणति थी। 'अणुव्रत' पत्रिका भी उहीं का एक अवदान है जिसने अणुव्रत विचार को जन-जन तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभायी है। बुद्धिजीवी वर्ग व साहित्य जगत को अणुव्रत आंदोलन से जोड़ने में इसका अतुलनीय योगदान रहा है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण का आध्यात्मिक पथदर्शन इस पत्रिका की थाती है। अनुशास्ता औं के प्रेरणादायी आलेख प्रत्येक अंक को गरिमा माडित करते हैं। इनके माध्यम से पाठकवर्ग अणुव्रत के मूल हार्द को सहजता के साथ आत्मसात कर पाता है।

अणुव्रत के महारथी आदरणीय देवेंद्र काका 'अणुव्रत पत्रिका' के प्रथम संपादक थे। उन्होंने वर्षों तक अपने चिंतन-कौशल व अपनी श्रम-बैंदों से इसे सीधा। सम्पादकों की यशस्वी शृंखला में मैं सर्वश्री सत्यनारायण मिश्र, छानलाल शास्त्री, बुधमल शामसुखा, मोतीलाल रांका, यशपाल जैन, धर्मचंद चौपड़ा, अजय चौपड़ा, विनोद मिश्र, डॉ. महेंद्र कर्णावत, महेंद्र जैन, अशोक संवेती की सेवाओं को याद करना चाहूँगा, जिन्होंने अपनी विशिष्ट शैली में 'अणुव्रत पत्रिका' के स्वरूप को निखारा-संवारा।

अणुव्रत संस्थाओं के एकीकरण के साथ ही 'अणुव्रत पत्रिका' के प्रकाशन का दायित्व जनवरी 2021 से अणुव्रत विधि भारती सोसायटी के पास आया। किसी भी प्रकाशन में गुणवत्तात्मक संवर्द्धन एक निरंतर जारी रहने वाली प्रक्रिया होती है। पिछले इन वर्षों में पत्रिका की लेआउट डिजाइनिंग में व्यापक बदलाव किया गया और लेखकीय आधार को व्यापक बनाया गया। आज देश के लगभग 500 साहित्यकार अणुव्रत के प्रकाशनों - 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं से जुड़े हैं। मई-जून 2022 के 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' एवं मार्च-अप्रैल 2024 के 'अणुव्रत अमृतविशेषांक' को जिस सनेहव सम्मान के साथ साहित्य जगत में स्वीकार किया गया, वह निश्चय ही गैरव की अनुभूति करता है।

अणुव्रत के मूल आधार - संयम और साटी को अंगीकार करते हुए अक्टूबर 2022 से पत्रिका के बहुरंगी स्वरूप को बदल कर श्वेत-श्याम कर दिया गया। प्रत्येक अंक में समसामयिक विषयों पर आयोजित परिचर्चा लगभग 200 चिंतनशील पाठकों को अणुव्रत के वैचारिक धरातल से जोड़ने में सफल हुई है। अणुव्रत अमृत वर्ष के दौरान अणुव्रत इतिहास की खोजपूर्ण सामग्री हो या लम्बे समय तक 50 वर्ष पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री का प्रकाशन, इन नवाचारों ने पत्रिका को अधिक पठनीय व रोकव क बनाया है। अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्टजनों के परिचय का क्रमिक प्रकाशन भी विशिष्टता लिये रहा। प्रतिमाह प्रकाशित 'अणुव्रत समाचार' का प्रखंड देशभर में चलने वाली अणुव्रत की गतिविधियों की सजीव चित्रात्मक प्रस्तुति करता है।

वर्तमान समय में पत्र-पत्रिकाएं कई चुनौतियों का सामना कर रही हैं। डिजिटल युग में पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम हुई है, यह एक निराशाजनक सम्भाव्य है। लेकिन यह भी सत्य है कि एक जागरूक समाज में साहित्य का महत्व सदैव रहा है और रहेगा। जिस घर में श्रेष्ठपुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की उपस्थिति होती है, वहाँ सद्संस्कारों का पल्लवन सहज सुयोग पा जाता है। हमें यह समझना होगा कि पढ़ने-लिखने के प्रति अधिकावकों की घटती रुचि बच्चों पर भी नकारात्मक असर डाल रही है। हमारा एक सही कदम नयी पीढ़ी के भविष्य को संवारने में सहायक बन सकता है।

यह हम सब की साझा जिम्मेदारी है। अणुव्रत आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं, अणुव्रत दर्शन के समर्थक सज्जनों और कलमकारों पर तो यह जिम्मेदारी और भी अधिक है कि वे 'अणुव्रत' और 'बच्चों का देश' जैसी पत्रिकाओं को घर-घर पहुँचाएँ। मेरा आपसे यह विनम्र आह्वान है कि आप कम से कम 5 व्यक्तियों तक 'अणुव्रत' और 'बच्चों का देश' पत्रिका को पहुँचाने में योगधूत बनें। अणुव्रत का सन्देश अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे, इस उद्देश्य से मई 2023 से "अणुव्रत ई-मैगजीन" का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया है। यह व्हाट्सएप गुप्तों के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुँच रही है। इसे भी अपने-अपने नेटवर्क में प्रसारित कर हम स्वस्थ समाज निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

सं. जै.

sanchay_avb@yahoo.com





आइए, आप भी इस वैश्विक शृंखला का हिस्सा बनिए। एक जवाबदेह विच्छ नागरिक बनने की रिश्ता में आपका यह दृढ़ संकल्पित कदम मील का पत्थर मिल देगा।

अणुव्रत संकल्प शृंखला

अणुव्रत आचार सहिता

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।

■ मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा। ■

■ मैं भूष-हत्या नहीं करूँगा। ■

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।

■ आक्रमक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। ■

■ विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा। ■

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लौगा।

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।

■ जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। ■

■ अस्पृश्य नहीं मानूँगा। ■

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।

■ साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा। ■

मैं व्यवसाय और व्यवहार में ग्रामाधिक रहूँगा।

■ अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। ■

■ छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा। ■

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

मैं सामाजिक रुद्धियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा।

■ मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा। ■

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।

■ हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। ■

■ पानी, विजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा। ■



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

निष्ठा का पीरा विलोग, राजसमन्वय (राजस्थान)
head.office@anuvratvaha.org | +91 91166 34515, +91 91166 34512

www.anuvratvaha.org/pledge

अनुव्रत विश्व भारती
सोसायटी के
लिए पैली जाए।



संकल्प-शक्ति का चमत्कार

आत्मा में निराशा और साहस, दोनों हैं। वह जितनी कमज़ोर है, उतनी ही शक्तिशाली भी है। शक्ति सब आत्माओं में होती है, पर उसे कोई-कोई व्यक्ति ही पहचान पाता है। पहचानने के बाद उसे काम में लेना तो और भी आगे की बात है। अपने विकास में शक्ति का उपयोग करना ही मनुष्य और पशु के बीच की भेद-रेखा है।

आत्मा के दो प्रकार हैं - स्थितात्मा और अस्थितात्मा। जो आत्मा स्थिर है, वह स्थितात्मा है। अस्थितात्मा उस आत्मा को कहते हैं, जो अस्थिर है, चंचल है, प्रकृपित है। आत्मा का प्रकंपन क्या है, स्थिरता क्या है, उसका मूल स्वरूप क्या है - ये कुछ चिंतनीय प्रश्न हैं।

इन प्रश्नों को समाहित करने के लिए मुक्त और बद्ध - आत्मा की ये दो अवस्थाएं समझना जरूरी है। सब प्रकार के बंधनों से रहित आत्मा मुक्त आत्मा कहलाती है। उसके कर्म नहीं होते, कथाय नहीं होता, शरीर नहीं होता। मुक्त आत्मा को हम परमात्मा, परमेश्वर, बुद्ध, सिद्ध, सर्वज्ञ आदि कुछ भी कह सकते हैं।

बद्ध आत्मा का मतलब है - बंधी हुई आत्मा। प्रश्न होगा कि आत्मा किससे बंधी होती है। आत्मा किसी दूसरे से नहीं, अपितु स्वयं से बंधी होती है। मैं पूछता हूँ कि रेशम का कीड़ा किससे बंधा होता है? आप कहेंगे, रेशम के जाल से। पर ध्यान दें, वह जाल/बंधन स्वकृत ही होता है। किसी दूसरे के द्वारा बनाया हुआ नहीं होता; और यही जाल एक दिन उसकी मृत्यु का कारण बन जाता है। आत्मा उसी प्रकार अपने ही विकारों से बंधी होती है। ये विकार ही उसके पतन का कारण बनते हैं।

सांख्य दर्शन की मान्यता है कि आत्मा अविकार है। उसके किसी प्रकार का बंधन नहीं होता, परंतु यह बात तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, क्योंकि यदि आत्मा अविकार है, अबद्ध है तो वह मुक्ति का प्रयत्न कर्यों करती है?

आत्मा और बंधन

पूछा जा सकता है कि आत्मा के बंधन कब से है? जैन दर्शन की मान्यतानुसार जब से आत्मा संसार में है, वह बंधनयुक्त ही है। आत्मा अनादि है तो बंधन भी अनादि है। आत्मा का सबसे पहला बंधन शरीर का है। शरीर के दो प्रकार हैं - स्थूल और सूक्ष्म। स्थूल शरीर बहुत जलदी छूट जाता है। प्राणी जब एक भव से दूसरे भव में जाता है, तब स्थूल शरीर वहाँ रह जाता है, परंतु सूक्ष्म शरीर की स्थिति भिन्न है। तैजस और कार्मण - ये दो सूक्ष्म शरीर हैं। आत्मा के एक भव से दूसरे भव में जाने के बक्त भी ये दोनों साथ रहते हैं और जब तक ये आत्मा के साथ रहते हैं, तब तक वह मुक्त नहीं हो सकती। जिस दिन आत्मा इन दोनों शरीरों से मुक्त हो जाती है, उस दिन वह इस संसार से भी मुक्त हो जाती है। यानी शरीर-मुक्ति ही संसार-मुक्ति है। इन दोनों सूक्ष्म शरीरों में भी कार्मण शरीर मुख्य है। स्थूल और सूक्ष्म सभी शरीरों का मूल कारण यही कार्मण शरीर है। इसीलिए इसे कारण शरीर भी कहते हैं।

कार्मण शरीर का सीधा-सा अर्थ है - कर्म। कर्म से बंधी आत्मा अस्थितात्मा है। कर्म से मुक्त आत्मा स्थितात्मा है। वृक्ष खड़ा है, तब तक उसकी शाखाएं हैं, टहनियाँ हैं, पत्र और पुष्प हैं। हवा चलती है तो ये सब हिलते हैं। इसी प्रकार आत्मा के प्रकंपन का कारण योग है। शारीरिक, वाचिक और मानसिक - इन तीन स्तरों पर सारी चंचलता होती है, प्रकंपन होता है। इसकी (योग की) समाप्ति के साथ ही सारे प्रकंपन भी समाप्त हो जाते हैं।



सत्ता रूप में प्रत्येक आत्मा में अनंत शक्ति होती है, पर जब तक प्राणी कषाययुक्त रहता है, छद्मस्थ रहता है, वह पूर्ण रूप से अनावृत नहीं होती, उसका आशिक रूप ही प्रकट होता है, पर जितने अंश में वह प्रकट होती है, उससे भी अधिकतर प्राणी परिचित नहीं होते। संकल्प के द्वारा हम अपनी शक्ति जाग्रत कर सकते हैं, विकसित कर सकते हैं।

प्रकृष्ट होने वाली आत्मा है तो उसे प्रकृष्ट करने वाली भी आत्मा है। पच्चीस बोल के पंद्रहवें बोल में आत्मा के आठ प्रकार बताये गये हैं। इनमें एक प्रकार है - योग आत्मा। हमारी आत्मा जब योग-मन, वचन और काया के रूप में प्रवृत्त होती है, तब उसे योग आत्मा कहते हैं। यही योग आत्मा हमारी आत्मा में प्रकंपन पैदा करती है।

योग आत्मा की तरह ही आत्मा के आठ प्रकारों में एक प्रकार है - कषाय आत्मा। हमारी आत्मा जब कषाय में प्रवृत्त होती है, तब कषाय आत्मा कहलाती है। यह कषाय आत्मा हमारी आत्मा की श्लेष्ययुक्त अवस्था का नाम है। हमारी आत्मा में राग-द्रेष की चिपचिपाहट होती है। यह आत्मा द्वारा ही है, उससे अभिन्न है, उसका ही पर्याय है। इसलिए आत्मा ही है। एक आदमी खड़ा होता है, बैठता है, हँसता है, रोता है, बोलता है, चलता है... ये सारी क्रियाएं उसी की विभिन्न अवस्थाएं हैं। आत्मा की विभिन्न अवस्थाएं, उसके विभिन्न पर्याय आत्मा ही है। क्षमा आत्मा का एक पर्याय है। क्रोध भी आत्मा का एक पर्याय है। इस प्रकार आत्मा के अनंत पर्याय, अनंत अवस्थाएं हो सकती हैं। ये सारे पर्याय आत्मा ही हैं। योग आत्मा और कषाय आत्मा अस्थितात्मा की ही दो अवस्थाएं हैं। जब तक कषाय है, तब तक योग भी रहेगा। मन, वचन, काया की प्रवृत्तियां भी रहेंगी। कषाय समाप्त हो जाएगा तो योग भी कमज़ोर पड़ जाएगा।

स्थितात्मा अकंपित अवस्था है। तत्त्व की भाषा में यह स्थिति चौदहवें गुणस्थान में उपलब्ध होती है। यहाँ कषाय नहीं है, योग भी नहीं है। आत्मा अयोग अवस्था में पहुँच जाती है। इसलिए चौदहवें गुणस्थान का नाम ही अयोगीकेवली गुणस्थान है। जब योग का भी निरोध हो जाता है, तब प्रकंपन की बात, अस्थिता की स्थिति तो स्वयं समाप्त हो जाती है। यह भी आत्मा का ही एक पर्याय है। व्यवहार में भी हम दो प्रकार के व्यक्तियों के संपर्क में आते हैं। कुछ व्यक्ति अपने विचारों में स्थिर होते हैं और कुछ अस्थिर। अस्थिर व्यक्ति क्षण-क्षण में बदलते रहते हैं। वे किसी क्षण किसी को धोखा दे सकते हैं। स्वयं को भी धोखा दे सकते हैं। इसलिए स्थिता का होना नितांत जरूरी है। स्थिर व्यक्ति कहीं हुई बात को भी लिखी हुई के तुल्य मानता है, लोहे की लकीर मानता है।

संकल्प-शक्ति का चमत्कार

आप पूछेंगे कि यह स्थिता/अस्थिता कैसे प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए आप वीर्य आत्मा को संभालें। यह भी आत्मा का ही एक पर्याय है, आत्मशक्ति का ही दूसरा नाम है। सत्ता रूप में प्रत्येक आत्मा में अनंत शक्ति होती है, पर जब तक प्राणी कषाययुक्त रहता है, छद्मस्थ रहता है, वह पूर्ण रूप से अनावृत नहीं होती, उसका आशिक रूप ही प्रकट होता है, पर जितने अंश में वह प्रकट होती है, उससे भी अधिकतर प्राणी परिचित नहीं होते। संकल्प के द्वारा हम अपनी शक्ति जाग्रत कर सकते हैं, विकसित कर सकते हैं। यानी उससे परिचित हो सकते हैं।

हमारे धर्मसंघ में एक संत हुए हैं - मुनिश्री कुंदनमल जी। उनके जीवन का एक घटना-प्रसंग है। एक बार संतों ने पचरंगी की तपस्या की समायोजना की। उस समायोजना में सिर्फ एक तेला (तीन दिन का उपवास) कम पड़ रहा था। घोर तपस्वी मुनिश्री सुखलाल जी इस कार्य में अत्यंत उत्साही एवं अगुआ थे। वे कुंदनमल जी स्वामी के पास गये और उन्होंने उनसे निवेदन किया - "आप तेला कर लीजिए। आपके इस सहयोग से हमारी पचरंगी पूरी हो जाएगी।" कुंदनमल जी स्वामी ने कहा - "मेरे से तो उपवास भी नहीं होता, तेला कैसे करूँ?" तपस्वी जी ने कहा - "एक तेले के कारण हमारी पचरंगी चली जाएगी। अतः आप थोड़ी कठिनाई सहन करके भी हमारी यह प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए।" कुंदनमल जी स्वामी ने कहा - "पचरंगी चली जाये तो चली जाये, पर मैं अपने शरीर के साथ इस तरह ज्यादती नहीं कर सकता।" हारकर तपस्वी जी पूज्य कालूगणी के पास गये और उन्होंने निवेदन किया - "हमारी पचरंगी का पूरा ढाँचा बन गया है। सिर्फ एक तेला कम है। आप मुनिश्री कुंदनमल जी को प्रेरणा करें तो हमारा काम बन सकता है। हमने तो उन्हें बहुत कहा, पर वे अब तक इस बात के लिए तैयार नहीं हैं।" कालूगणी ने उसी समय मुनिश्री कुंदनमल जी स्वामी को बुलाया और प्रेरणा देते हुए कहा - "पचरंगी की तपस्या में सहभागी बनना चाहिए। अलग क्यों रहते हो? हिम्मती आदमी हो, एक तेला क्या खास बात है?" गुरु की महिमा अपरंपरा है। उनकी बाणी में अद्भुत शक्ति होती है। पूज्य कालूगणी की पुण्य प्रेरणा ने कुंदनमल जी स्वामी की सुस



तपस्या ही नहीं, और भी बहुत से ऐसे काम हैं, जिन्हें संकल्प-शक्ति के आधार पर किया जा सकता है। वर्षों से तंबाकू का सेवन करने वाला व्यक्ति संकल्प लाने पर उसे मिनटों में छोड़ सकता है। पचास वर्षों से शराब पीने वाला कुछ क्षणों में ही इस व्यसन से मुक्त हो सकता है।

संकल्प-शक्ति जगा दी। दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने तेले की तपस्या शुरू की। उपवास हुआ। बैला हुआ। तेला भी हो गया; और हुआ ही नहीं, सानंद हो गया। संकल्प-शक्ति ने उनकी तपशेतना झंकृत कर दी, सुम आत्मशक्ति जाग्रत कर दी। तेले की संपत्रता के साथ ही पारणे की बात आयी, पर उन्होंने पारणा नहीं किया। घोले (चार दिन का उपवास) का प्रत्याख्यान कर लिया, पर वे यहाँ भी नहीं रुके और आगे बढ़े। उन्होंने पंचोला (पाँच दिन का उपवास) किया; और अब तो मन ऐसा बड़ा कि आगे से आगे बढ़ते ही गये। आखिर तैतीस की तपस्या का पारणा किया। जो मुनि तीन दिन की तपस्या के लिए भी आनाकानी कर रहे थे, उन्होंने तैतीस दिन की तपस्या कर दिखायी। यह संकल्प-शक्ति का ही चमत्कार था।

तपस्या ही नहीं, और भी बहुत से ऐसे काम हैं, जिन्हें संकल्प-शक्ति के आधार पर किया जा सकता है। वर्षों से तंबाकू का सेवन करने वाला व्यक्ति संकल्प जागने पर उसे मिनटों में छोड़ सकता है। पचास वर्षों से शराब पीने वाला कुछ क्षणों में ही इस व्यसन से मुक्त हो सकता है।

आत्मा में निराशा और साहस, दोनों हैं। वह जितनी कमज़ोर है, उतनी ही शक्तिशाली भी है। उसमें एक ओर अनंत दुर्बलता है तो दूसरी ओर अनंत शक्ति भी है। राम के सेनापति कृतांतमुख ने भयंकर जंगल में ले जाकर सीता को जब उनका कठोर वनवास का आदेश सुनाया तो अनायास उसके मूँह से स्वर फूटे-

"हंसन राखी मान में, अपमाने नहीं पार।
दोनूँ पंख पूरो भयो, ओ म्हारो भर्तार।"

- मेरे पति ने मुझे बेशुमार सम्मान दिया। यहाँ तक कि मेरे लिए बहुत बड़ा एक भयंकर संग्राम लड़ा और अब मुझे अपमानित कर जंगल में (चुहिया की भाँति) छोड़ रहे हैं। दोनों ही दिशाओं में वे पूरे बहे हैं। यही बात है आत्मा के संबंध में। वह बिल्कुल अशक्त है तो अनंत शक्ति का कोष भी है।

नर से नारायण

शक्ति सब आत्माओं में होती है, पर उसे कोई कोई व्यक्ति ही पहचान पाता है। पहचानने के बाद उसे काम में लेना तो और भी आगे की बात है। अपने विकास में शक्ति का उपयोग करना ही मनुष्य और पशु के बीच की भेद-भेद है। यों देखा जाये तो मनुष्य

की अपेक्षा पशु में शारीरिक शक्ति बहुत अधिक होती है। एक भैंसा या बैल जितना भार उठा सकता है, उतना मनुष्य नहीं उठा सकता, परंतु पशु अपना विकास करने में सक्षम नहीं। सैकड़ों हजारों वर्ष पूर्व वह बोझा ढोता था, कोल्हू और हल में जुता था और आज भी इसी रूप में अपना जीवन ढो रहा है। कोई विकास नहीं, कोई नयी गति नहीं, प्रगति नहीं, पर मनुष्य ने इतना विकास किया है कि उसे आज घर बैठे सारी सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं - बिजली, पानी, हवा, दूरभाष, दूरदर्शन आदि सब उसे सहज सुलभ हैं। मनुष्य एक दिन आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण बन सकता है, परंतु पशु के लिए यह संभव नहीं है।

जिस दिन, जिस क्षण हमारी आत्म-शक्ति पूर्ण रूप से अनावृत्त हो जाती है, अनंत वीर्य प्रकट हो जाता है, हमें स्थितात्मा बनते समय नहीं लगता। अपेक्षा है, हम संकल्प की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए अनंत शक्ति के शिखर पर पहुँचें। गतिशील चरण देर-सबेर मंजिल तक अवश्य पहुँचते हैं, इसलिए हमें अपने कदम अविश्वान्त रूप से गतिशील रखने हैं।

तुलसी उवाच

यह कैसा नवाचार?

दीक्षा क्या है? दीक्षा तु व्रतसंग्रहः - व्रतों के कवच को धारण करने का नाम है दीक्षा। आत्महित साधने की दिशा में प्रस्थान करने का नाम है दीक्षा। कुछ लोगों की दृष्टि में दीक्षा का अर्थ है संसार को पीट दिखाना। मेरे अभिमत से संसार से भागने का नहीं, जागने का नाम दीक्षा है। वर्तमान युग का नवाचार है चरित्रहीनता। राजनीति, साहित्य, व्यवसाय, कला आदि सभी क्षेत्रों में इसका प्रवेश हो गया है। संचार माध्यमों के द्वारा एक क्षेत्र की बुराई आसानी से दूसरे क्षेत्र में धकेल दी जाती है। देश के लाखों-करोड़ों किशोर हत्या, अपहरण, चोरी, लूपाट, धूम्रपान, मध्यपान आदि अवाञ्छित प्रवृत्तियों के दृश्य देखते हैं और संवाद सुनते हैं। उनके कच्चे मन पर ऐसा प्रभाव होता है कि वे रोमांच, कुतूहल और अनुकरण की प्रेरणा से ऐसे अंधेरे गलियारों में घुस जाते हैं, जिसके किसी छोर पर रोशनी नहीं मिलती। ऐसे प्रसंगों में व्यक्तित्व विकास और मानवाधिकार की चर्चा शून्य में खो जाती है। कुछ किशोर संयम-साधना और चरित्र-विकास के पथ पर अग्रसर होते हैं तो मानवाधिकार आड़े आ जाता है। समझ में नहीं आता कि यह सब क्या है?



अहिंसा की मर्यादा

हिंसा मनुष्य की प्रकृति है। अहिंसा मनुष्य की प्रकृति नहीं है। वह सैद्धान्तिक स्वीकृति और ऊर्ध्वारोहण का प्रयत्न है। उस प्रयत्न की दिशा में मनुष्य प्रेम से क्रोध, विनम्रता से अभिमान, क्रजुता से प्रवचना और साम्य की अनुभूति से लोभ पर विजय प्राप्त करता है। प्रेम, विनम्रता, क्रजुता और साम्य की अनुभूति की एक शब्द में जो पहचान है, वह अहिंसा है।

श वित का उत्तर शक्ति, यह अहिंसा की पराजय नहीं, किन्तु उसके प्रति उत्पन्न भ्रम का निरसन है। अहिंसा के स्वरूप और मर्यादा को नहीं समझने के कारण अनेक लोग अहिंसा और अशक्ति या अहिंसा और कायरता को पर्यायवाची मानने लगे। अहिंसा को समर्थन देने वाले राष्ट्र ने शक्ति का उत्तर शक्ति से दिया तो उन लोगों का भ्रम निरस्त हो गया कि अहिंसा और अशक्ति या अहिंसा और कायरता पर्यायवाची नहीं हैं। कोई भी सरकार, भले फिर वह भारत की हो या दुनिया के किसी अन्य राज्य की, अहिंसा को अपनी नीति का आधार मान सकती है, किन्तु उसे नियामक तत्त्व नहीं मान सकती।

अहिंसा को नियामक तत्त्व मानने वाली संस्था अपरिग्रही होगी, इसलिए वह राज्य पर नियंत्रण बनाये नहीं सख सकती। कोई संस्था परिग्रही है और हिंसा में प्रवृत्त नहीं है, यह उतना ही असंभव है, जितना यह है कि कोई व्यक्ति जीवनधारी है, पर शास लेने की क्रिया से मुक्त है। परिग्रह और हिंसा एक सिक्के के दो पहलू हैं। राष्ट्र परिग्रह है। उसकी रक्षा अहिंसा से होगी, यह भ्रम है। अहिंसा से अपरिग्रह की रक्षा हो सकती है, परिग्रह की नहीं। इस सिद्धान्त के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि शक्ति का उत्तर शक्ति की नीति,

अहिंसा की पराजय नहीं, किन्तु उसके प्रति उत्पन्न भ्रम का निरसन है। जीवन-रक्षा परिग्रह से सम्बद्ध है। अहिंसा से उसी गुण के रक्षण की आशा की जा सकती है, जिसका सम्बन्ध परिग्रह से नहीं है। शक्ति का गठबंधन केवल हिंसा से नहीं है। वह अहिंसा में भी होता है। अल्प हिंसा की शक्ति बड़ी हिंसा की शक्ति से परास्त होती है। इसलिए हिंसा के क्षेत्र में कहा जाता है, शक्ति का सफल प्रतिकार शक्ति ही है। अल्प अहिंसा की शक्ति बड़ी अहिंसा की शक्ति से परास्त नहीं, इसलिए अहिंसा के क्षेत्र में नहीं कहा जा सकता कि शक्ति का सफल प्रतिकार शक्ति ही है। अहिंसा की शक्ति से हिंसा की शक्ति परास्त नहीं होती, किन्तु परिवर्तित हो जाती है। अहिंसा में मारक शक्ति नहीं है। उससे हिंसक का हृदय प्रभावित हो सकता है, परिवर्तित हो सकता है, अहिंसक बन सकता है, पर उसका प्रभावित-परिवर्तित होना अनिवार्य नहीं है।

अहिंसा का स्वरूप है मैत्री का अनन्त प्रवाह। उसका जगत सीमाओं या विभाजन रेखाओं से मुक्त होता है। राष्ट्र एक भौगोलिक सीमा है। इसलिए अहिंसा के सामने इसकी या उसकी सुरक्षा का प्रश्न ही नहीं होता। उसके सामने सबकी सुरक्षा का प्रश्न होता है।





अहिंसा की मर्यादा है सबकी सुरक्षा। एक की सुरक्षा और दूसरे की अ-सुरक्षा यह अहिंसा की मर्यादा का भंग है। अहिंसा की मर्यादा है आत्मिक सुरक्षा। भौतिक सुरक्षा उससे हो सकती है - यह कहने की अपेक्षा यह कहना अधिक सरल है कि उससे नहीं हो सकती। शस्त्र-शक्ति से आत्मिक सुरक्षा नहीं हो सकती तब हम कैसे आशा करें कि अहिंसा की शक्ति से भौतिक सुरक्षा हो सकती है।

अहिंसा की मर्यादा है सबकी सुरक्षा - प्राणी मात्र की सुरक्षा। एक की सुरक्षा और दूसरे की अ-सुरक्षा यह अहिंसा की मर्यादा का भंग है। अहिंसा की मर्यादा है आत्मिक सुरक्षा। भौतिक सुरक्षा उससे हो सकती है - यह कहने की अपेक्षा यह कहना अधिक सरल है कि उससे नहीं हो सकती। शस्त्र-शक्ति से आत्मिक सुरक्षा नहीं हो सकती तब हम कैसे आशा करें कि अहिंसा की शक्ति से भौतिक सुरक्षा हो सकती है।

प्रश्न प्रयोग और प्रयोक्ता का

अहिंसा का अस्त्र आणविक अस्त्र से भी अधिक शक्तिशाली है किन्तु उसका प्रयोग शक्तिशाली व्यक्ति ही कर सकता है। हर व्यक्ति से उसके प्रयोग की आशा करना कठिन है। शस्त्र-शक्ति का प्रयोग एक कायर आदमी के लिए संभव नहीं, वैसे ही अहिंसा की शक्ति का प्रयोग उस शरीर के लिए भी संभव नहीं, जिसके मन में परिग्रह और जीवन का मोह है तथा जिसका मन धृणा से भरा है।

अहिंसा की शक्ति का सामान्य प्रयोग हर आदमी कर सकता है, पर उसके असाधारण प्रयोग की अपेक्षा उन व्यक्तियों से ही की जा सकती है, जिनका प्रेम धृणा पर विजय पा चुका, जिनकी दृष्टि में मनुष्य केवल मनुष्य है जातीय, साम्प्रदायिक आदि बंधनों से मुक्त।

अहिंसा की शक्ति के भिन्न स्तर नहीं हैं, किन्तु उसकी प्रयोग-शक्ति के अनेक स्तर हैं। हर स्तर से समान आशा कैसे की जा सकती है? अहिंसा के प्रयोग की पद्धति भी हर व्यक्ति को ज्ञात नहीं होती। प्रयोग की पद्धति और क्षमता यदि प्राप्त हो तो अहिंसा के सामने हिंसा की शक्ति सफल नहीं हो सकती।

अहिंसा : शक्ति-संतुलन

हिंसा और अहिंसा का प्रश्न अनादिकाल से चर्चित हो रहा है। फिर भी हिंसा की प्रकृति से मनुष्य मुक्त नहीं हुआ है। वह चलता है तो उसके सामने हिंसा का प्रश्न है। खाता है, तब भी वही प्रश्न है। खाये बिना और जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा किये बिना, प्रश्न है वह कैसे जिये? क्या अहिंसा का अर्थ जीवन का उत्सर्ग माना जाये? यदि वही माना जाये तो अहिंसा जीवित मनुष्य के लिए नहीं होगी, फिर वह स्वयं जीवित कैसे होगी? जो मृत के लिए हो, उसका मूल्य जीवित सृष्टि के लिए कैसे होगा?

मैं कोई नयी स्थापना नहीं कर रहा हूँ, जो यथार्थ है, उसे मात्र अनावृत्त कर रहा हूँ। मनुष्य प्रकृति से हिंसा के लोक में जीता है। दूसरे जीवों के बलिदान पर उसका जीवन चलता है। दूसरों के तिरस्तकार पर उसके सम्मान का पौधा फलता है। कुछ भी मन के प्रतिकूल होता है, वह क्रोध से भर जाता है। उसका वैभव प्रवर्चना और शोषण पर फलित होता है। हिंसा की प्रकृति से मुक्त होकर कोई आदमी बड़ा और कोई छोटा हो सकता है। हिंसा की प्रकृति से मुक्त होकर कोई आदमी समृद्ध और कोई गरीब हो सकता है। हिंसा की प्रकृति से मुक्त होकर कोई आदमी शोषक और कोई शोषित हो सकता है। बड़ा और छोटा, समृद्ध और गरीब, शोषक और शोषित - ये सभी वर्ग हिंसा के द्वारा लोक में बनते हैं। फिर भी हिंसा उसको भी प्रिय है, जो छोटा है, जो गरीब है और जो शोषित है। आपके मन में इसके हेतु की जिज्ञासा होगी तो मैं यही कहूँगा कि हिंसा मनुष्य की प्रकृति है। अहिंसा मनुष्य की प्रकृति नहीं है। वह सैद्धान्तिक स्वीकृति और ऊर्ध्वरोहण का प्रयत्न है। उस प्रयत्न की दिशा में मनुष्य प्रेम से क्रोध, विनम्रता से अभिमान, ऋजुता से प्रवर्चना और सायं की अनुभूति से लोभ पर विजय प्राप्त करता है। प्रेम, विनम्रता, ऋजुता और सायं की अनुभूति की एक शब्द में जो पहचान है, वह अहिंसा है। अहिंसा की पकड़ इतनी स्थूल है कि कुछ जीवों को न मारने या बचाने का प्रयत्न कर आदमी अपने को अहिंसक मान लेता है। वह अहिंसा की एक रेखा हो सकती है किन्तु उसकी समग्रता नहीं है। अहिंसा की पूर्णता वृत्तियों के शोधन से प्रकट होती है।

त्याग है, विफलता नहीं

कुछ लोग कहते हैं, अमुक आदमी ने अहिंसा का मार्ग चुना, इसलिए वह पिछड़ गया। हिंसा करने वाला आगे बढ़ गया। उनकी दृष्टि में आगे बढ़ने का अर्थ है वैभव पा लेना, सत्ता हाथिया लेना और अकरणीय कार्य में सफल हो जाना। अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला अशुद्ध साधन का सहारा नहीं ले सकता, इसलिए वह येन



केन प्रकारेण धनाज्जन नहीं कर सकता, सत्ता नहीं हथिया सकता। यह अहिंसा की विफलता नहीं, अपितु उसका त्याग है। जो हिंसक कर सकता है और पा सकता है, वही अहिंसक को करना और पाना चाहिए, तब फिर हिंसा और अहिंसा के उद्देश्य, साधना और प्राप्ति में अन्तर ही क्या होगा?

अहिंसा की अभिमुखता

हिन्दुस्तान के इतिहास में अनेक सम्प्राट ऐसे रहे हैं जिन्होंने जीवन के पूर्वार्थ में साम्राज्य का विस्तार किया और उसके उत्तरार्थ में साम्राज्य का परित्याग कर दिया। साम्राज्य का विस्तार हिंसा से किया और अहिंसा की भावना प्रबल हुई तब उसे छोड़ दिया। बाह्य की दृष्टि से अनुमापन करने वाला इसे अहिंसा की परायन मानेगा। इस मान्यता में अभिमुखता का ज्ञान नहीं है। अहिंसा की अभिमुखता साम्राज्य की ओर हो नहीं सकती। उसकी अभिमुखता उतने स्वतंत्र की ओर होगी, जितना संविभाग से उसे प्राप्त है। एक आदमी साम्राज्यवादी भी हो, संग्रहपरायण भी हो और अहिंसक भी हो, क्या यह संभव है?

समस्या है निष्ठा की

बहुधा पूछा जाता है कि यदि अहिंसक के हाथ में वैभव और सत्ता नहीं होंगी तो शक्ति-संतुलन हिंसक के हाथ में चला जाएगा। हिंसा की शक्ति हिंसक के हाथ में रहेगी ही, पर यह क्यों मान लिया जाता है कि अहिंसा में शक्ति नहीं है, अहिंसक शक्तिशून्य ही होता है। अहिंसक के पास जो नैतिक शक्ति होती है यह हिंसक के पास हो ही नहीं सकती है। प्रश्न यह नहीं है कि अहिंसक के हाथ में शक्ति-संतुलन नहीं है। प्रश्न यह है कि सही अर्थ में अहिंसा में निष्ठा रखने वाले लोग कम हैं। सतही अहिंसा गहराइ में रही हुई हिंसा से निस्तोज हो जाती है। सैद्धान्तिक अहिंसा में प्रकट शक्ति नहीं है। उसका उदय अन्तस् की अहिंसा में होता है। अन्तस् की अहिंसा यानी वृत्तियों के व्यूह को भेदकर आने वाली अहिंसा। वृत्ति के एक पार्श्व की चर्चा मैं अपनी अनुभूति के संदर्भ में करूँगा। मेरे गुरु ने कहा- “किसी व्यक्ति को प्रसन्न रखने की आकांक्षा अच्छी नहीं है।” मैं एक क्षण के लिए विस्मित-सा रहा। मैंने वे शब्द आश्रय के साथ सुने। फिर कुछ समय के पश्चात् मैंने उन पर चिन्तन किया। मुझे लगा, वे शब्द सत्य को अपने में समेटे हुए हैं। मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। उसकी अपूर्णता का पहला बिन्दु भय है।

भय और आकांक्षा

भय का होना और आकांक्षा का होना दो नहीं हैं। जिसके मन में कोई आकांक्षा नहीं है, उसके मन में कोई भय नहीं है, यह स्थापना तर्क से सर्वथा अनाहत है। जीवन की आकांक्षा नहीं है और मौत का भय है, क्या इस उक्ति में विरोधाभास नहीं है?

दुःख का भय उसे कब सताएगा, जो सुख की आकांक्षा से मुक्त हो चुका है। निन्दा का भय उसी को आकलांत करता है, जिसके मन में प्रशंसा की भूख है। मैं दूसरों से इसलिए डरता हूँ कि उनके मन में अपनी पूर्णता का प्रतिबिम्ब देखने की इंसा मेरे

जो आपने को अहिंसक मानता है और अहिंसा के पथ पर निश्चिर गतिशील रहता है, वह आत्मालोचन से तिमुख नहीं हो सकता। व्यवहार की भूमिका में दोष तालते जाना सम्मत हो सकता है किन्तु अहिंसा की पार्श्वभूमि में यह सब बदल जाता है। इस बदली हुई स्थिति में ही अहिंसा वी शक्ति प्रकट होती है।

अन्त करण में विद्यमान है। मैंने आकांक्षा के धारे को जितना बाहर की ओर फैलाया है, उतना ही भय का जाल मैंने बुना है। मुझे भय है कि उस धारे को तोड़कर मैं जी नहीं सकता। इस भय का जन्म आकांक्षा से उत्पन्न भय से हुआ है। इसी भय ने मेरी वास्तविक उपलब्धि पर आवरण डाल रखा है। आकांक्षा का नहीं होना सबसे बड़ी उपलब्धि है। सच्चाई यह है कि आकांक्षा के धारे को तोड़कर मैं जो पा सकता हूँ, वह उसके अस्तित्व में नहीं पा सकता।

पूर्णता का अर्थ

पाना कुछ नहीं है। जो प्राप्त है, वह अन्तस् में प्रस्थापित है। किन्तु बाहर से पाने की आकांक्षा ने कृत्रिम भूख पैदा कर रखी है। मैं जो भी खाये जा रहा हूँ, सब स्वाहा हो रहा है और भूख बढ़ती जा रही है। यही मेरी अपूर्णता है। पूर्णता का अर्थ है आकांक्षा का न होना। आकांक्षा के न होने का अर्थ है भय का न होना। भय के न होने का अर्थ है अहिंसा का होना।

मेरे मन में आकांक्षा है, उससे उत्पन्न भय है और मैं मानता हूँ कि मैं अहिंसक हूँ, क्या ऐसा हो सकता है? जो आपने को अहिंसक मानता है और अहिंसा के पथ पर निश्चिर गतिशील रहता है, वह आत्मालोचन से विमुख नहीं हो सकता। व्यवहार की भूमिका में दोष का आरोपण दूसरों पर करना और अपनी अपूर्णता पर आवरण डालते जाना सम्मत हो सकता है किन्तु अहिंसा की पार्श्वभूमि में यह सब बदल जाता है। इस बदली हुई स्थिति में ही अहिंसा की शक्ति प्रकट होती है।

अहिंसा के दो स्तर

जिस दिन मनुष्य समाज के रूप में संगठित रहने लगा, आपसी सहयोग, विनियम तथा व्यवस्था के अनुसार जीवन विताने लगा, तब उसे सहिष्णु बनने की आवश्यकता हुई। दूसरे मनुष्य को न मारने, न सताने और कष्ट न देने की वृत्ति बनी। प्रारम्भ में अपने परिवार के मनुष्यों को न मारने की वृत्ति रही होगी, फिर क्रमशः अपने पड़ोसी को, अपने ग्रामवासी को, अपने राष्ट्रवासी को, होते-होते किसी भी मनुष्य को न मारने की चेतना बन गयी। मनुष्य के बाद अपने उपयोगी जानवरों और पक्षियों को भी न मारने की वृत्ति बन गयी। अहिंसा की यह भावना सामाजिक जीवन के साथ-साथ



ही प्रारम्भ हुई और उसकी उपयोगिता के लिए ही विकसित हुई, इसीलिए उसकी मर्यादा बहुत आगे नहीं बढ़ सकी। वह समाज की उपयोगिता तक ही सीमित रही।

समाज का अस्तित्व और अहिंसा

सामाजिक जीवन आवश्यकताओं का विकास और प्रवृत्तियों का विकास है। इसमें से दो विरोधी धाराएं विकसित होती हैं, जैसे:-
■ हिंसा और अहिंसा ■ असत्य और सत्य
■ चौर्य और अचौर्य ■ संग्रह और असंग्रह
■ स्वार्थ और परार्थ

यदि हिंसा आदि तत्त्व ही विकसित होते तो सामाजिक जीवन उदित होने से पहले ही अस्त ही जाता और यदि अहिंसा आदि तत्त्व ही विकसित होते तो सामाजिक जीवन गतिशील नहीं बनता। इस तथ्य की स्वीकृति वास्तविकता की अभिव्यक्ति मात्र होगी कि हिंसा और अहिंसा - ये दोनों तत्त्व सामाजिक अस्तित्व को धारण किये हुए हैं। ये दोनों भिन्न दिशागमी हैं, इसलिए इन्हें विरोधी धाराएं कहा जा सकता है किन्तु दोनों एक लक्ष्य (समाज-विकास) गमी हैं, इस स्तर पर इन्हें अविरोधी धाराएं भी कहा जा सकता है।

आत्मा का अस्तित्व और अहिंसा

कोई भी विकास एक पक्षीय धारा में अपना अस्तित्व बनाये नहीं सकता। हर विकास की प्रतिक्रिया होती है और उसके परिणामस्वरूप प्रतिपक्षी तत्त्व का विकासक्रम प्रारम्भ होता है। भौतिक अस्तित्व की प्रतिक्रिया ने मनुष्य को आत्मिक अस्तित्व की ओर गतिमान बनाया। उसे इस सत्य की दृष्टिप्राप्त हुई कि चेतन का अस्तित्व अचेतन से स्वतन्त्र है। यह जगत चेतन और अचेतन इन दो सत्ताओं का सांसारिक अस्तित्व है। उस समय सामाजिक विकास के सामने आर्थिक विकास और राजतन्त्र के सामने आत्मतन्त्र का प्रथम सूत्रपात हुआ। इस सूत्रपात ने अहिंसा आदि का मूल्य-परिवर्तन कर डाला। सामाजिक अस्तित्व के स्तर पर उनका मूल्य सापेक्ष और समीम था, वह आत्मिक अस्तित्व के स्तर पर निरपेक्ष और निःसीम हो गया। सामाजिक क्षेत्र में अहिंसा का अर्थ था प्राणातिपात का आशिक निषेध - मनुष्यों तथा मनुष्योपयोगी पशु-पक्षियों को न मारना और न मारने का लक्ष्य था - सामाजिक सुव्यवस्था का निर्माण और स्थायित्व।

आत्मिक क्षेत्र में अहिंसा का अर्थ हुआ प्राणातिपात का सर्वथा निषेध - किसी भी प्राणी को न मारना, न मरवाना और मारने वाले का अनुमोदन भी नहीं करना। प्राणातिपात के सर्वथा निषेध का लक्ष्य था मुक्ति अर्थात् आत्मोदय। मुक्ति का दर्शन जैसे-जैसे विकसित हुआ, वैसे-वैसे अहिंसा की मर्यादा भी व्यापक होती चली गयी।

हिंसा का मूल है अविरति

व्यापक मर्यादा में इस भाषा को अव्याप्त माना गया कि प्राणातिपात ही हिंसा है और अप्राणातिपात ही अहिंसा है। वहाँ



आत्मिक क्षेत्र में अहिंसा का अर्थ हुआ प्राणातिपात का सर्वथा निषेध - किसी भी प्राणी को न मारना, न मरवाना और मारने वाले का अनुमोदन भी नहीं करना। प्राणातिपात के सर्वथा निषेध का लक्ष्य था मुक्ति अर्थात् आत्मोदय। मुक्ति का दर्शन जैसे-जैसे विकसित हुआ, वैसे-वैसे अहिंसा की मर्यादा भी व्यापक होती चली गयी।

हिंसा और अहिंसा की परिभाषा की आधारभित्ति अविरति और विरति बन गयी। अविरति अर्थात् वह मानसिक ग्रन्थि, जो मनुष्य को प्राणातिपात करने में सक्रिय करती है, जब तक उपशान्त या क्षीण नहीं होती, तब तक हिंसा का बीज उमूलित नहीं होता। इसलिए हिंसा का मूल अविरति है, प्राणातिपात उसका परिणाम है। यह व्यक्त हिंसा उस मानसिक ग्रन्थि या अव्यक्त हिंसा के अस्तित्व में ही सम्भव है। विरति-हिंसा-प्रेरक मानसिक ग्रन्थि की मुक्ति जब हो जाती है, तब हिंसा का बीज उमूलित हो जाता है। अहिंसा का मूल विरति है, अप्राणातिपात उसका परिणाम है। यह व्यक्त अहिंसा हिंसा-प्रेरक मानसिक ग्रन्थि की मुक्ति होने पर ही विकासशील बनती है। इस प्रकार आत्मा के अस्तित्व में अहिंसा के अर्थ, उद्गम और लक्ष्य में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। ■

तुलसी उचाच

मूल्यों पर आधारित जीवनशैली

मनुष्य की जीवनशैली पर उसकी सभ्यता, संस्कृति, परम्परा, वातावरण आदि का भी प्रभाव होता है। भोगप्राप्ति जीवनशैली समस्याओं की सर्जक होती है। उसमें हिंसा, कूरता, शोषण, आक्रमण, धोखाधड़ी, चोरी, कामुकता, संग्रहवृत्ति, नशा, दुर्व्यवस्था, अपव्यय आदि अवाञ्छनीय तत्त्वों की प्रधानता रहती है। इनके आधार पर जीवन-यापन करने वालों की जीवनशैली अच्छी नहीं हो सकती। अच्छी जीवनशैली वह है, जिसमें संयम की प्रधानता हो। संयम के परिपार्श्व में करुणा, मैत्री, सहिष्णुता, सहयोग भावना, नीति निष्ठा, परोपकार, आत्मानुशासन, नशामुक्ति, व्यवसनमुक्ति, मितव्ययिता, कर्तव्यनिष्ठा, व्यवस्था के प्रति जागरूकता, विनम्रता आदि मूल्यों को आत्मसात करने का लक्ष्य होता है। मूल्यों पर आधारित जीवनशैली का प्रशिक्षण शिक्षा के साथ दिया जा सके तो वह अधिक प्रभावशाली हो सकता है।





ELEVATE

EXPERIENCE THE REAL HIGH

आओ, जिंदगी की बात करें!!

Proud to be
Drug Free



ANUVIBHA

An initiative of

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY

f anuvibha.page • @ANUVIBHA www.anuvibha.org @elevate_therealhigh ☎ +91 993070 8888, 91166 34512



अनुव्रत | अक्टूबर, 2024 | 14

एकला चलो रे

काम और क्रोध जंगली भेड़िए के समान हैं। ये आदमी के गुणों को खा जाने वाले होते हैं। इसलिए आदमी अपने गुणों की रक्षा करने के लिए क्रोध की वृत्ति से बचने का प्रयास करे। लड़ाई-झगड़े में रहे या दुर्गुणी आदमी के साथ रहे, इसकी अपेक्षा तो अकेले रहना ज्यादा अच्छा होता है।

बौ द्वासाहित्यके महान ग्रन्थ धर्मपदमें कहा गया है-
चरंचे नाधिगच्छेद्य सेव्यं सदिसमत्तनो।
एकचरियं दल्हं कथिरा, नत्थि बाले सहायता।।

विचरण करते यदि अपने से श्रेष्ठ या अपने समान व्यक्ति को न पाये तो दृढ़ता के साथ अकेला ही विचरे। मूर्ख से मित्रता अच्छी नहीं। आदमी समूह में रहता है, समूह में साधना करता है। जब उसे यह लगे कि अब कोई मुझे सहायता देने वाला नहीं है, न मेरे बराबर का कोई साधक मेरे साथ है, न मेरे से कोई बड़ा साधक मेरे साथ है। ऐसी स्थिति में साधक आदमी को क्या करना चाहिए? उस संदर्भ में एक दिशा-निर्देश दिया गया - 'एकला चलो रे!' अगर अपने समान या अपने से बड़ा कोई सहायक न मिले तो फिर आदमी को अकेला चलना मंजूर करना चाहिए। मूर्ख या अज्ञानी को साथ में नहीं लेना चाहिए। संगत अच्छे आदमी की कर्म, सहायता लेने तो अच्छे आदमी की लें, अच्छा न मिले तो बुरे को अपना मित्र या अपना सहायक न बनाएं। उत्तराध्ययन सूत्र में भी ऐसी ही बात मिलती है-

न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एकको वि पावाइ विवज्जयंतो, विहरेज्ज कामेसु
असज्जमाणो ॥

यदि अपने से अधिक गुणवान या अपने समान निपुण सहायक न मिले तो वह पापों का वर्जन करता हुआ, विषयों में अनासक्त रहकर अकेला ही विहार करे।

सामूहिक साधना का महत्व है, परन्तु वह तब उचित है, जब योग्य व्यक्तियों का साथ मिले। व्यक्ति योग्य होता है तो सुंदर पथदर्शन भी दे सकता है और विपत्ति में सहायता भी कर सकता है। यदि व्यक्ति योग्य नहीं होता है तो वह विपत्ति में सहायता भी नहीं कर सकता और योग्य पथदर्शन भी नहीं दे सकता। आदमी को चाहिए कि वह स्वयं के सामर्थ्य का विकास करे और यथावश्यक दूसरों से सहायता भी ग्रहण करता रहे। जहाँ समाज है, वहाँ हितैषिता की भावना होनी चाहिए, न कि स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण होना चाहिए।

तीन मित्र थे। उनमें एक राजकुमार था और दो वणिक पुत्र थे। तीनों साथ में पढ़ते, साथ में रहते। एक बार दोनों वणिक पुत्र राजकुमार से बोले - "तुम तो कभी राजा बन जाओगे। क्या राजा बन जाने के बाद भी हमें याद रखोगे?" राजकुमार बोला - "तुम मेरे अच्छे मित्र हो। जब कभी मैंक आएगा, तुम दोनों को एक-एक बरदान दूँगा, जो तुम मौंगोगे।" समय बीता, राजा का देहावसान हो गया। ...राजकुमार अब राजा बन गया था। वे दोनों





भले कोई राजा हो या सामान्य आदमी, जितना संभव हो सके, किसी का कल्याण करे, परन्तु किसी का बुरा न करे। कल्याण करने के लिए अनुकम्पा की चेतना का विकास करना आवश्यक है।

बणिक पुत्र आये और बोले - "अब हमें वरदान दीजिए।" राजा - "आप क्या वरदान माँगना चाहते हैं?" दोनों बणिक पुत्र बोले - "हम एक-एक दिन का राज माँगना चाहते हैं।" राजा ने कहा - "तथास्तु।" अगले रोज पहले बणिक पुत्र को एक दिन का राजा बना दिया गया। उसने राजा बनते ही व्यापारियों आदि पर जितना कर था, उसको दुगुना कर दिया। जो कर्मचारी थे, उनका वेतन आधा कर दिया। उसने सोचा, मैं एक दिन में राज्य का भंडार भर दूँगा। एक दिन बाद उसे पद से उतार दिया गया। उसके साथ इतना निकृष्ट व्यवहार किया गया कि द्वारपाल ने हाथ पकड़कर उसको अपमान के साथ बाहर निकाल दिया। दूसरे दिन दूसरे बणिक पुत्र को एक दिन का राजा बना दिया। उसने गही पर बैठते ही जिनका जितना वेतन था, उसको दुगुना कर दिया और कर को आधा कर दिया। जनता के हित का काम किया। एक दिन के बाद उसे पद से मुक्त होना ही था, किन्तु जनता ने बड़े सम्मान के साथ उसको घर तक पहुँचाया।

आदमी को दूसरों का हित करने का प्रयास करना चाहिए। भले कोई राजा हो या सामान्य आदमी, जितना संभव हो सके, किसी का कल्याण करे, परन्तु किसी का बुरा न करे। कल्याण करने के लिए अनुकम्पा की चेतना आदमी में पृष्ठ होती है, वह उतना दूसरों का बुरा करने से बचता है और भला करने का प्रयास भी करता है।

काशी नरेश और कौशल नरेश का प्रसंग आता है। कौशल नरेश बड़ा परोपकार की भावना रखता था। बड़ा दान-पुण्य करता, दूसरों के दुःखों का हरण करता। काशी नरेश ने कौशल नरेश की प्रशंसा सुनी, किन्तु वह उसे सहन नहीं कर सका। उसने कौशल नरेश पर आक्रमण कर दिया। कौशल नरेश वहाँ से भाग गया। काशी नरेश ने सोचा कि यदि कौशल नरेश जीवित रहेगा तो फिर कभी वह हमारे ऊपर आक्रमण कर देगा। इसलिए कौशल नरेश को पकड़ना चाहिए। काशी नरेश ने धोषणा कर दी कि कोई भी व्यक्ति जीवित या मरे हुए पूर्व कौशल नरेश को मेरे पास लाएगा, उसे हजार स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी।

एक राहगीर जा रहा था। उसका व्यापार ठप्प हो गया था। वह गरीबी का जीवन जी रहा था। जंगल में ही पूर्व कौशल नरेश से उसकी मूलाकात हुई। वह आश्वस्त हुआ कि मुझे आज कुछ जरूर मिल जाएगा। चूंकि व्यापारी ने सुना था कि कौशल नरेश बड़ा दयालु राजा है। कौशल नरेश ने कहा - "मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है, पर एक बात है, काशी नरेश ने यह धोषणा की है कि जो कोई कौशल के पूर्व नरेश को मेरे पास लाएगा, उसे हजार स्वर्ण मुद्राएं देंगा। तुम मुझे पकड़कर वहाँ ले जाओ, तो तुम्हें हजार स्वर्ण मुद्राएं मिल जाएंगी।" देखिए, कितनी दयालुता कि मुझे पकड़वाकर भी तुम पैसा प्राप्त कर लो। राहगीर कौशल नरेश को साथ लेकर आया और काशी नरेश से कहा - "यही है कौशल नरेश। आप इसे पकड़ लो और मुझे हजार स्वर्ण मुद्राएं दे दो।" व्यापारी को हजार स्वर्ण मुद्राएं मिल गयीं।

खैर... बात का सार इतना है कि कौशल नरेश ने स्वयं को विपत्ति में डालकर भी दूसरों का भला करने का प्रयास किया। यह है अनुकम्पा की भावना। अनुकम्पा दो प्रकार की होती है - लोकेतर अनुकम्पा और लौकिक अनुकम्पा। किसी की आत्मा का कल्याण करना लोकेतर अनुकम्पा है और किसी गृहस्थ की देह संबंधी सेवा करना लौकिक अनुकम्पा है। लौकिक अनुकम्पा का अपना महत्व है और लोकेतर अनुकम्पा का अपना मूल्य है।

मूल बात है कि आदमी को दूसरा कोई साथी न मिले तो अकेले चलने का पथ स्वीकार करना चाहिए, किन्तु बुरे आदमी की संगत नहीं करनी चाहिए। बुरे आदमी से सहायता की इच्छा भी नहीं करनी चाहिए। हमारी दुनिया में सज्जन आदमी भी मिलते हैं और बुरे आदमी भी मिल जाते हैं। मनुष्य जहाँ रहे, जिस समूह में रहे, वहाँ सौहार्द के साथ रहे, अहिंसा के साथ रहे, अनुकम्पा के साथ रहे और मैत्री के साथ रहे। मैत्री भावना में जो आनन्द है, अनुकम्पा में जो आनन्द है, वह आनन्द काम-क्रोध की वृत्तियों में नहीं मिलता।

संस्कृत साहित्य में कहा गया - 'कामक्रोधी मनुष्याणां खादितारौ वृक्षाविह' अर्थात् काम और क्रोध जंगली भेड़िए के समान हैं। ये आदमी के गुणों को खा जाने वाले होते हैं। इसलिए आदमी अपने गुणों की रक्षा करने के लिए क्रोध की वृत्ति से बचने का प्रयास करे। लड़ाई-झगड़े में रहे या दुर्गणी आदमी के साथ रहे, इसकी अपेक्षा तो अकेले रहना ज्यादा अच्छा होता है। ■



जीवन की सफलता का मापदण्ड

आध्यात्मिकता और नैतिकता का तात्पर्य कर्तव्य-विमुखता नहीं है। पवित्रता के अभाव में कोई भी प्रवृत्ति सफल और सार्थक नहीं होती। आज के जन-मानस में साधन-शुद्धि का आदर्श गौण हो रहा है। सभी यैन-केन-प्रकारण सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। सत्य और प्रामाणिकता के अभाव में जो सफलता प्राप्त होती है, वह सुखद नहीं होती।

आ ज बौद्धिक और आर्थिक विकास की ओर सबका आर्कषण बढ़ रहा है। हर व्यक्ति उसी ओर तेजी से आगे बढ़ना चाहता है। बौद्धिक और आर्थिक प्रगति के साथ सद्गुणों और सत्संस्कारों का समन्वय भी होना चाहिए। उसके बिना कोई भी विकास न स्वयं के लिए कल्याणकारी होता है और न ही समाज के लिए लाभप्रद होता है।

जिस प्रकार भवन की ऊँचाई के साथ गहराई का संतुलन अपेक्षित है, उसी प्रकार जीवन में बाहरी ऊँचाई के साथ गुणों और आदर्शों की गहराई भी आवश्यक है। ऊँचाई के प्रति जितना उत्साह है, उतना ही गहराई के प्रति भी होना चाहिए।

एक विद्वान ने लिखा है - बुद्धि और शक्ति-संपत्ति मनुष्य मानवता के लिए वरदान भी हैं और अभिशाप भी। जिसके जीवन में सत्संस्कारों का विकास है, उसकी संपत्ति ही वरदान स्वरूप है। उसके अभाव में उसकी सम्पत्ता एक अभिशाप है।

सद्गुण शुक्ल पक्ष और दोष कृष्ण पक्ष के प्रतीक हैं। दोनों में निरंतर संघर्ष चलता रहता है। जब अक्षुण्णों का अधेरा बढ़ता है, तब सद्गुणों का प्रकाश विलीन हो जाता है। दोनों का सहावस्थान संभव नहीं है।

एक मनुष्य को मार्ग में चार बहनें मिलीं।

उसने पहली बहन से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा - "बुद्धि।"

"तुम कहाँ रहती हो?" - "मैं मनुष्य के दिमाग में रहती हूँ।"

दूसरी बहन से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा - "लज्जा।" - "तुम कहाँ रहती हो?"

उसने कहा - "मैं आँखों में रहती हूँ।"

तीसरी बहन ने अपना नाम हिम्मत बताया और कहा - "मैं मनुष्य के दिल में रहती हूँ।"

चौथी बहन ने कहा - "मेरा नाम तंदुरुसी है और मैं पेट में रहती हूँ।"

वह मनुष्य आगे गया तो उसे चार पुरुष मिले। उसने पहले पुरुष से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?"

व्यक्ति ने कहा - "क्रोध।" - "तुम कहाँ रहते हो?" उसने कहा - "मैं मनुष्य के दिमाग में रहता हूँ।"

व्यक्ति ने कहा - "दिमाग में तो बुद्धि रहती है, फिर तुम कैसे रहते हो?"





नर व्यक्ति के जीवन में गुणों और दोषों का संघर्ष अनवरत चलता रहता है। जीवन की सफलता का सच्चा मापदण्ड सद्गुणों और असंख्यकरण का जागरण है। जिसके जीवन में शांति, संतोष, पवित्रता और आनन्द है, उसका जीवन सफल और सार्थक है। जो व्यक्ति इसका अनुभवण करता है, उसका जीवन सुखद और सफल होता है।

उसने कहा - "जब दिमाग में मेरा प्रवेश होता है तब बुद्धि नौ दो ग्यारह हो जाती है।"

व्यक्ति ने दूसरे पुरुष से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा - "लालच।" "तुम कहाँ रहते हो?"

उसने कहा - "मैं मनुष्य की आँखों में रहता हूँ।"

उसने कहा - "आँखों में तो लज्जा रहती है, फिर तुम कैसे रहते हो?"

उसने कहा - "जब मैं आता हूँ, तब लज्जा वहाँ से बिदा हो जाती है।"

व्यक्ति ने तीसरे पुरुष से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा - "भय।" "तुम कहाँ रहते हो?"

उसने कहा - "मैं दिल में रहता हूँ।" व्यक्ति ने कहा - "दिल में तो हिम्मत रहती है, फिर तुम कैसे रहते हो?"

उसने कहा - "जब मेरा प्रवेश होता है तब हिम्मत वहाँ से प्रस्थान कर देती है।"

चौथे पुरुष से पूछा - "तुम्हारा नाम क्या है?" उसने कहा - "रोग।" "तुम कहाँ रहते हो?" - "मैं पेट में रहता हूँ।"

"पेट में तो तंदुरुस्ती रहती है, फिर तुम कैसे रहते हो?" उसने कहा - "मेरे आगमन के साथ ही तंदुरुस्ती वहाँ से बिदा हो जाती है।" यह कहानी एक प्रतीक है। हर व्यक्ति के जीवन में गुणों और दोषों का संघर्ष अनवरत चलता रहता है। जीवन की सफलता का सच्चा मापदण्ड सदगुणों और सत्संस्कारों का जागरण है।

गुणों का विकास कर अवगुणों को छोड़ना सीखो,
जीवन के बंधनों को साहस से तोड़ना सीखो।
मन ही उत्थान, पतन व सुख-दुःख का कारण है,
मन के घोड़े को सही दिशा में मोड़ना सीखो।

एक बार विद्वानों की सभा में जीवन की परिभाषा पर वित्तन-मंथन हुआ। उपस्थित लोगों ने विभिन्न प्रकार के विचार प्रस्तुत किये। एक अनुभवी विद्वान ने कहा -

शांतं तुष्टं पवित्रं च सानंदमिति तत्त्वतः।
जीवनं जीवनं प्राहुर्भारतीय सुसंस्कृतौ॥

जिसके जीवन में शांति, संतोष, पवित्रता और आनन्द है, उसका जीवन सफल और सार्थक है। जो व्यक्ति इसका अनुभव करता है, उसका जीवन सुखद और सफल होता है।

शांति

शांति का तात्पर्य क्रोध और भावावेश का अभाव है। किसी भी प्रकार के भावावेश से हमारी शांति भंग हो जाती है। हर व्यक्ति को नाना प्रकार की समस्याओं का समाना करना पड़ता है। जिसका मरित्यक शांत होता है, वह उनका समाधान खोजने में सफल हो जाता है। जो क्रोधी और अशान्त होता है, वह उन समस्याओं को और अधिक उलझा लेता है। उसके कारण परिवार का वातावरण नरक के समान हो जाता है।

एक बहन बहुत गर्म स्वभाव की थी। उसकी इच्छा के बिना कोई भी काम होता तो उसका पारा चढ़ जाता था। एक दिन वह बहुत भावावेश में थी। उसका पति जब घर पर आया तो उसे देखते ही वह आग-बबूला हो गयी और ऊँचे स्वरों में अपशब्दों का प्रयोग करने लगी। ऊँची आवाज सुनकर पड़ोसी एकत्रित हो गये। पति बहुत लज्जित हुआ। उसने पत्नी से मौन रहने का कई बार इशारा किया, पर वह बोलती ही गयी। तभी पति को रसोई में एक छोटी हाँड़िया दिखायी दी। उसमें पकाने के लिए खिचड़ी की सामग्री थी। पति ने पत्नी का ध्यान बदलने के लिए उस हाँड़िया को पत्नी के सिर पर रख दिया।

पत्नी ने कहा - "यह क्या कर रहे हो?" - "तुम्हारे मरित्यक में क्रोध की आग जल रही है, उसी का प्रयोग कर रहा हूँ। उस आग से पक्कर खिचड़ी तैयार हो जाएगी।"

पति के धैर्य और विवेकपूर्ण विनोद से पत्नी का क्रोध थोड़ा शांत हुआ। उसे अपनी गलती का अनुभव हुआ। हमारे मरित्यक में क्रोध की आग है तो शांति का अमृत भी है। दोनों के बटन हमारे हाथ में हैं। हमें क्रोध और अशांति के बटन को 'ऑफ' कर शांति और क्षमा के बटन को 'ऑन' करना चाहिए।



संतोष

संतोष का अर्थ जड़ता और अकर्मण्यता नहीं है। अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ से जो सहज प्राप्त है, उसमें प्रसन्नता का अनुभव करना संतोष है। संतोषी मनुष्य कर्तव्यनिष्ठ और अपने आदर्शों के प्रति जागरूक होता है। वह अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट रहता है। उसमें दूसरों के प्रति ईर्ष्या का विचार नहीं होता। हर मनुष्य में विविध प्रकार की इच्छाएं होती हैं। उनके साथ विवेक-चेतना भी जागृत होनी चाहिए। संतोषी के मानस में विवेक की ज्योति प्रज्वलित रहती है। वह इच्छाओं का दास नहीं होता, अपितु उनका परिष्कार कर वह उचित-अनुचित का निर्णय करता रहता है।

पवित्रता

हर व्यक्ति के समक्ष नाना प्रकार के कर्तव्य और दायित्व होते हैं। उनका निवाह करना भी आवश्यक है। आध्यात्मिकता और नैतिकता का तात्पर्य कर्तव्य-विमुखता नहीं है। पवित्रता के अभाव में कोई भी प्रवृत्ति सफल और सार्थक नहीं होती।

आज के जन-मानस में साधन-शुद्धि का आदर्श गौण हो रहा है। सभी येन-केन-प्रकारेण सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। सत्य और प्रामाणिकता के अभाव में जो सफलता प्राप्त होती है, वह सुखद नहीं होती। देखने, सोचने, बोलने, सुनने की जो शक्तियाँ हमें मिली हैं, हमें उनका सदुपयोग करना चाहिए, दुरुपयोग नहीं। पवित्रता के तत्त्व से हमें यह प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

इस सन्दर्भ में महात्मा गांधी के तीन बन्दरों की मृतियों का उदाहरण बहुत प्रेरणादायक है। एक बन्दर के मूँह पर हाथ रखा हुआ है। दूसरे के कानों पर तथा तीसरे की आँखों पर। गांधीजी ने उनको चाणी-संयम, श्रुति-संयम तथा दृष्टि-संयम का प्रतीक बताया था। हम इस उदाहरण से सीख सकते हैं कि न बुरा बोलें, न बुरा सुनें, न बुरा देखें।

आनन्द

शांति, संतोष, पवित्रता के बाद चौथा आदर्श आनन्द बताया गया है। भारतीय चिंतन में जहाँ वैराग्य और अनासक्ति के विकास पर बल दिया गया है, वहाँ आनन्दमय जीवन पर भी विशद प्रकाश डाला गया है। जो स्थूल दृष्टि से चिंतन करते हैं, उन्हें इसमें विरोधाभास का अनुभव होता है; पर वैराग्य के अभाव में सच्चे और स्थायी आनन्द का साक्षात्कार संभव नहीं है।

जो आनन्द के इस रूप का अनुभव कर लेता है, उसका चिंतन विधायक होता है। वह अभाव को भाव तथा दुःख को सुख में परिणत करने में सफल होता है। उसका हर दिन दशहरा और दीवाली पर्वों के समान होता है। जीवन की सफलता का अंकन सद्गुणों और विशिष्ट आदर्शों के आधार पर होना चाहिए। ■

सुख के दिन

■ मनोज जैन 'मधुर', भोपाल ■



सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुःख के बड़े-बड़े।

सबके अपने-अपने सुख हैं,
अपने-अपने दुखहड़।
फीकी हँसी, हँसा करते हैं,
सुन्दर-सुन्दर मुखड़।
रंक बना देते राजा को,
दुर्दिन खड़े-खड़े।
सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुःख के बड़े-बड़े।

सबकी नियति अलग होती है
दिशा दशा सब मन की।
कोई यहाँ कुबेर किसी को,
चिन्ता है बस धन की।
समझा केवल वही वक्त की,
जिस पर मार पड़े।
सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुःख के बड़े-बड़े।

हाँ यह तय है चक्र समय का,
है परिवर्तनकारी।
सबने भोगा सुख-दुःख अपना
चाहे हो अवतारी।
अंत नहीं होता कष्टों का,
जी हाँ बिना लड़।
सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुःख के बड़े-बड़े।



हृदय परिवर्तन से दानव भी बन सकता है मानव

वर्तमान युग प्रायोगिक युग कहलाता है। प्रयोग के द्वारा कुछ-कुछ लोगों में आमूलचूल परिवर्तन देखने में आता है। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने इसीलिए अणुब्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का आविष्कार किया था और जिन-जिन लोगों ने श्रद्धापूर्वक जीवन में इनको अंगीकृत किया, उनके जीवन में बहुत बड़ा अन्तर पाया गया। जो व्यसनी थे, वे निर्व्यसनी बने, जो दुराचारी थे, वे सदाचारी बने, जो दानव कहलाते थे, वे महामानव बने। समय-समय पर शिविरों का आयोजन किया जाता था। शिविर काल की चर्चा उनकी वृत्तियों के परिष्कार में बड़ी सहायक बनती।

वर्तमान में भी आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सात्रिष्ठ में शिविरों का आयोजन होता रहता है और यह देखा-सुना जाता है कि शिविर साधना से अस्त-व्यस्त लोग आत्मस्थ, तटस्थ, मध्यस्थ बन जाते हैं। जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों को लेकर आत्महत्या तक के लिए उतारू हो जाते हैं, वे सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा करके अमन-चैन की अनुभूति करते हैं।

मेरे यात्राकाल में कई ऐसे प्रसंग आये जिनके बारे में सुनकर देखकर लोगों को सहसा विश्वास नहीं होता कि क्या चन्द्र समय में ऐसे परिवर्तन हो सकता है? हमलोग नोख मर्यादा महोत्सव के पश्चात पंजाब की ओर गतिमान थे। मैंने मेरे सहयोगी मुनि मोहविजयजी से कहा - "हम पंजाब कई बार जा चुके हैं। प्रायः हिसार, टोहाना, नरवाना होकर पंजाब गये हैं। इस बार नये रास्ते से चलें जिससे नये क्षेत्रों को देखने-समझने का अवसर मिले।" उन्होंने कहा, "जैसा आप उपयुक्त समझें, वैसा करें, मुझसे पूछने की क्या आवश्यकता पड़ी? मैं तो जहाँ आप पथरेंगे, आपके पीछे-पीछे चलता रहूँगा।" उनका श्रद्धा-समर्पण भाव मेरे उत्साह को बृद्धिंगत बनाने वाला बना।

मैंने बीकानेर पहुँचने के बाद वहाँ के श्रावकों से चर्चा की। तब उन्होंने बताया कि लूणकरणसर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़ होकर

भटिडा पहुँचा जा सकता है। मैंने उसी आधार पर विहार का मार्ग तय कर लिया। बीकानेर से लूणकरणसर के बीच एक गाँव कस्तूरिया आया, जहाँ मेरे से पूर्व किसी साधु-साध्वी का जाना नहीं हुआ था। इसका मुख्य कारण था कि वह डाकुओं का गाँव कहलाता था। मुख्य सड़क पर होते हुए भी वह साधु-साध्वियों के चरणस्पर्श-प्रवास से अछूता था। हम जब वहाँ प्रवास की चर्चा कर रहे थे तो श्रावकों ने हमको भी रोका कि आप इससे पूर्व या अगले गाँव पधारें। यहाँ हम किसी साधु-साध्वी को नहीं ठहराते।

मैंने कहा, "हमें डाकू क्या कहेंगे?" हमने अपने चिन्तन को मूर्त रूप दिया और वहीं रुके। ज्यों ही मैं एक घर में गया, घर का मुखिया कहीं बाहर जाने की तैयारी में था। कपड़े पहन चुका था। जूते पहन रहा था। मुझे देखते ही उसने प्रणाम करके प्रसन्नता व्यक्त की और पूछा - "आपको क्या चाहिए?" मैंने कहा, "आज यहाँ थोड़ी देर प्रवास करना चाहते हैं।" उसने कहा - "रुकिये, यह घर आपका ही है।"

हम रुके, आहार-पानी किया। दोपहर को प्रवचन किया और प्रवचन में गीत गया - 'गुरु बिन धोर अंधार'। उस व्यक्ति ने कहा, "मैं निगुरा हूँ। आप मुझे गुरु मत्र दें।" मैंने गुरु धारणा के नियम बताये और पति-पत्नी दोनों ने गुरु धारणा कर ली। सभी आश्वर्यचकित रह गये।

दूसरे दिन वे जोड़े से प्रवचन सुनने लूणकरणसर आये और सामायिक प्रारंभ कर दी। उनका नाम था मनोहर सिंह राजपूत। जो डाकू कहलाता था, वह एक श्रावक रूप में अपनी सेवा देने लगा। प्रेक्षाध्यान शिविरों में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। वे जैन विश्व भारती से पुस्तकें मैंगते और सामायिक में स्वाध्याय करते। उनके जीवन में आये परिवर्तन को देखकर सारे आश्वर्यचकित रह गये। इसीलिए प्रयोग के द्वारा दानव को मानव ही नहीं, महामानव भी बनाया जा सकता है। ■



समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आन्दोलन की अपेक्षा का शून्य है उसकी उपादेयता, प्रासारणिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधार्यादी आन्दोलन की उपादेयता और प्रासारणिकता को मूकत करने से स्वीकार करते हैं तो आमजन भी उस आन्दोलन के दर्जनों का अनुभव करने की दिशा में जग्यार होते हैं। अनुब्रत आन्दोलन के प्रारम्भिक काल से ही तत्कालीन समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इस माह प्रस्तुत हैं नवभास्त टाइम्स मुम्बई के तत्कालीन अपादक के विचार:

अणुव्रत : भाव-क्रान्ति का प्रतीक

अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य गृहस्थों की मन-शुद्धि है। जिस मन में भोग से परहेज रखने की प्रवृत्ति छोटे रूप में भी जग जाएगी, उसमें धीरे-धीरे हिंसा के प्रवेश करने की आशंका भी कम होती जाएगी और जब भोग का स्थान त्याग ले लेगा, तब हिंसा का स्थान सम्पूर्ण अहिंसा ले लेगी।

अणुव्रत जैन धर्म के अनुसार गृहस्थ-धर्म का एक अंग है। जैन धर्म का मूल सिद्धान्त है - अहिंसा। अहिंसा को गृहस्थ जीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए जिन व्रतों की आवश्यकता है, वे अणुव्रत कहे जाते हैं।

आचार्य श्री तुलसी अपने अनुयायियों को, जिनकी संख्या हमारे देश में नगण्य नहीं है, अणुव्रतों में पूरी निष्ठा रखने की सलाह देते हैं। उन्होंने अणुव्रत सम्बन्धी विचारों के प्रचार के लिए कर्मठ प्रचारकों का जो संगठन बना लिया है, वह उनकी मौलिक सूझा एवं विशिष्टता का द्योतक है। इस संगठन को देखकर ही लोग अणुव्रत-प्रचार को 'आन्दोलन' की कोटि में स्वीकार करते हैं। प्रचारकों में केवल जैन मुनि ही नहीं, कोट्याधीश (करोड़पति) गृहस्थ भी हैं। जो स्वयं अणुव्रती न हों, उनके प्रचार का प्रभाव पड़ नहीं सकता, अतः बहुत-से धनी गृहस्थों को भी अणुव्रत आन्दोलन के संगठन में स्थान पाने के लिए अपने आचरण को सुधारने की ओर एक सीमा तक त्याग करने की आवश्यकता हुई।

समाज-हित की दृष्टि से अणुव्रत आन्दोलन का व्यक्तिगत व्यवहार-शुद्धि से सम्बन्धित यह पहलू काफी महत्व का है। जो गृहस्थ अणुव्रत के प्रचारक बने हैं, उन सभी के सारे व्यवहार शुद्ध हो गये, इस प्रकार का कोई दावा करना यद्यपि सम्भव नहो, तो भी अणुव्रत आन्दोलन का महत्व कम नहीं हो जाता। विचार और व्यवहार-शुद्धि के इस आन्दोलन के प्रति लोगों में थोड़ी भी निष्ठा पैदा हो जाना एक उत्तम लक्षण है। मन की भूमि में एक बार यह भाव रूपी बीज पड़ा तो बाद में वह बढ़ा बृक्ष भी बन सकता है। हिंसा हमारे हाथ, पाँव, जीभ अथवा आँख की क्रियाओं में नहीं रहती। तलवार, बन्दूक और तोप में भी वह नहीं रहती। उसका निवास स्थान मन में है। अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य गृहस्थों की मन-शुद्धि है।

भोग और हिंसा का अटूट सम्बन्ध है। अणुव्रती भोग को मर्यादित रखने के लिए स्वयं तैयार होता है तथा दूसरों को भी तैयार करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार वह हिंसा को मर्यादित





अणुव्रत आन्दोलन जैन धर्म के ही नहीं, संसार के सभी धर्मों के अनुकूल है। यदि किसी के भीतर भाव-क्रान्ति हो जाये, तो उसे क्रान्ति के अनुपात में वास्तविक ज्ञान प्राप्त होकर रहता है। अणुव्रत आन्दोलन भी तो भाव-क्रान्ति पर ही अधिक बल देता है। भाव सचमुच बदले तो व्यवहार अपरिवर्तित रह नहीं सकते।

करने का प्रयास करता है। मानव धर्म के प्रचार के लिए इससे उत्तम मार्ग हो ही क्या सकता है?

अणुव्रत आन्दोलन जैन धर्म के ही नहीं, संसार के सभी धर्मों के अनुकूल है। योगीराज श्रीकृष्ण ने अपने को वेदों में सामवेद माना है। सामवेद भाव प्रधान है। यदि किसी के भीतर भाव-क्रान्ति हो जाये, तो उसे क्रान्ति के अनुपात में वास्तविक ज्ञान प्राप्त होकर रहता है। सामवेद का उद्देश्य ही भाव-क्रान्ति है। योगीराज श्रीकृष्ण भी भाव-क्रान्ति पर इतना बल देते हैं कि वे अपने आपको भाव-क्रान्ति उत्पन्न करने वाला सामवेद मानते हैं। अणुव्रत आन्दोलन भी तो भाव-क्रान्ति पर ही अधिक बल देता है। भाव सचमुच बदले तो व्यवहार अपरिवर्तित रह नहीं सकते।

हमारे राग-द्वेषों का कारण कामनाएं बतायी गयी हैं। गीता में दुःख-नाप का एकमात्र कारण काम को माना गया है। अणुव्रत आन्दोलन मनुष्य की कामनाओं पर अंकुश खेने का आन्दोलन है। यही कारण है कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा संस्थापित अणुव्रत सम्बन्धी संगठन शैशवावस्था में होते हुए भी जिस किसी विचारशील व्यक्ति के सम्पर्क में आया, उसे ही अपनी ओर कुछ न कुछ आकृष्ट करने में समर्थ हो गया।

भरत : एक अद्वितीय चरित्र

■ डॉ. योगिता जोशी, जयपुर ■

भारतीय पौराणिक साहित्य में रामायण और रामचरितमानस ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं, जो नैतिक मूल्यों एवं अच्छे आचरण की शिक्षा प्रदान करते हैं। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत भाषा में रामायण की रचना की थी, वहीं गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना अवधी में की। दोनों ही ग्रंथों के एक महत्वपूर्ण पात्र हैं भरत, जो भ्रातृ-प्रेम, त्याग, संयम, समर्पण, सेवा-भाव, संस्कार, अनुशासन, दृढ़ता और आदर्शवाद के प्रतीक हैं।

भरत ने अग्रज श्रीराम के बनवास के दैरान चौदह वर्षों तक अपने स्वार्थ को पीछे रखकर जो त्याग किया, वह आज भी सबके लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने अयोध्या का राजा बनने से मना कर दिया तथा प्रभु श्रीराम की चरण पादुकाओं को चौदह वर्षों तक सिंहासन पर विराजमान रखा एवं खुद को उनका सेवक मानकर राजकाज सम्भालते रहे। जब तक प्रभु श्रीराम बनवास में थे, भरत ने किसी भी प्रकार के राजसी ठाठबाट का उपभोग नहीं किया। जब उन्होंने खुद के सोने के लिए गद्दा खुदवा लिया, जिससे वे अपने भाई के बराबर नहीं, बल्कि उनके कुछ नीचे सो सके।

भरत ने राजकाज के प्रबंधन के दैरान न्यायपूर्णता और धर्म का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। उनकी निष्ठा और न्यायप्रियता सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता के लिए प्रेरित करती है। भरत की वफादारी और बड़े भाई के प्रति समर्पण ने उन्हें एक अद्वितीय नायक बना दिया। भरत की नीति और न्यायबद्धता सही और गलत के बीच सही चयन करने की कला सिखाती है। उनकी संघर्षशीलता अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है। उनका चरित्र सामाजिक जिम्मेदारी और कर्तव्य के निर्वहन का अद्वितीय उदाहरण है। भरत का उदार दृष्टिकोण और संवेदनशीलता विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता का परिचायक है। हर घर में अगर भरत जैसे भाई हों, तो कभी किसी बात के लिए कोई झगड़ा न हो।



गांधी मार्ग और आत्मनिर्भर भारत

कोई भी प्रयोग छोटे पैमाने पर किया जाता है, उसके अनुकूल परिणामों के आधार पर उसे बड़े पैमाने पर अपनाया जा सकता है। गांधीजी ने भी इसी प्रकार की नीति अपनायी थी। गांधीजी की बातें उनके समय के लिए जिस रूप में प्रासादिक थीं, उसी क्रम में बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप आज भी प्रासादिक हैं।

गांधी मार्ग कोई सिद्धांत नहीं बल्कि सुस्पष्ट व्यवहार है। गांधी मार्ग व्यावहारिकता की कसौटी है। वह समाज के उत्थान के लिए निःसृत सर्वहितकारी सबक है। पारदर्शी जीवन व्यवहार के पक्षाधर होकर, पराहित के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले गांधीजी अपने देशवासियों को यही संदेश देते हैं कि स्वावलंबन सर्वहित का सार्थक सूत्र है। अपने पैरों पर खड़े होकर आत्मोन्नति और समाजोत्थान हेतु सक्षम व स्वस्थ इंसान के विकास के लिए, वे सदा अपने चिंतन व व्यवहार में तारतम्य बनाये रखते थे।

गांधीजी का जीवन हमारे लिए केवल आदर्श ही नहीं, अपनाने लायक व्यावहारिक मार्ग है जिस पर चलकर पराहित जैसे धर्म को अपनाने में हम सक्षम साबित होते हैं। परार्थ में सर्वहित की भावना को देखने वाले गांधीजी कल, आज और कल के लिए प्रासादिक हैं।

आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को यदि हम देखें तो स्पष्ट होता है कि गांधीजी शत प्रतिशत गाँवों की आत्मनिर्भरता की बात कहते थे। गाँवों को स्वच्छ और स्वावलंबी बनाने के तमाम उपाय वे करते रहे। ग्रामोद्योगों पर बल देते हुए ग्रामों के पुनरुद्धार की बात कहते हुए उन्होंने शहरों के अंधाधुंध विकास की आलोचना की

थी। उन्होंने ग्राम स्वराज की तरफदारी इसी आधार पर की थी कि आम जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर होना न पढ़े। इसी दृष्टि से उन्होंने परिवार के स्तर पर भी स्वावलंबन का मार्ग दिखाया था। ये बातें गांधीजी के बल कहते नहीं थे, वे स्वयं करते थे। गांधीजी के आश्रम में स्वावलंबन और आपसी सहयोग का सबक सीखने का अवसर हर किसी को सहज ही मिल जाता था।

विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता लाने की दृष्टि से बुनियादी शिक्षा के व्यावहारिक सिद्धांतों का प्रतिपादन जो गांधीजी ने किया था, दुर्भाग्य से हम उन्हें अपनाने में पछड़ चुके हैं। तभी आज शिक्षा का निजीकरण, व्यापारीकरण और सार्वजनिक शिक्षा-संस्थानों में कई कार्यों के लिए सरकारी अनुदानों का दोहन देखा जा सकता है। विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता की चेतना जगाने में हम कई दृष्टियों से असफल रहे हैं।

गांधीजी ने किसी संदर्भ में कोरी बातें नहीं कहीं। वे एक छोटा-सा प्रयोग करके ही हर किसी मुद्रे पर बात को व्यवहार में उतारने की संभावना प्रमाण के तौर पर दिखाते थे। कोई भी प्रयोग छोटे पैमाने पर किया जाता है, उसके अनुकूल परिणामों के आधार पर उसे बड़े पैमाने पर अपनाया जा सकता है। गांधीजी ने भी इसी प्रकार की नीति अपनायी थी। गांधीजी की बातें उनके समय के



अहं विसर्जन

■ हरदान हर्ष - जयपुर ■

करवा चौथ का दिन था। सरोज ऊहापोह में बिस्तर पर पड़ी-पड़ी विचार कर रही थी कि वह ब्रत करे या नहीं। बेचैनी में वह उठ बैठी। उसका शरीर बुखार से तप रहा था। देह दर्द से टूट रही थी। पिंडलियों की नसें अकड़ी जा रही थीं। पल्ली को बेचैन देखकर पति अखिलेश को पीड़ा हुई। पल्ली को मौसमी का रस देते हुए उसने कहा, "पी लो। शरीर को तुरन्त ताकत मिल जाएगी।"

सरोज हल्के-से मुस्कुरायी और बोली, "आज करवा चौथ है।"

अखिलेश ने कहा, "होने दो। तुम आज ब्रत नहीं रखोगी। सात दिन में तुम कितनी कमज़ोर हो गयी हो।"

सरोज ने निर्णय लेते हुए कहा, "हमारी शादी को इक्कीस वर्ष होने को है। बिना नागा मैंने हर वर्ष तुम्हारे लिए ब्रत रखा है। इस बार भी तुम्हारी लंबी उम्र की कामना के साथ मैं ब्रत रखूँगा।"

अखिलेश चुप कर गया। दिन छिपने को था। भूखी, प्यासी और दर्द से बेहाल सरोज ने पति से आग्रह किया, "पिंडलियों की नसें खिंची जा रही हैं। इन्हें थोड़ा दबा दीजिए।"

अखिलेश में सदियों से जड़ें जमाये पति का अहं नाम की तरह फुफकार उठा। मर्द होकर औरत के पैर दबाये। उसने कहा, "बैठकर अपने हाथों से अपनी पिंडलियों को दबा लो। मैं जरूरी काम से बाहर जा रहा हूँ।" सरोज पुरुष प्रथान समाज की जानती थी। वह धीरे-धीरे उठी और बैठकर अपनी पिंडलियों को सहलाने लगी।

करवा चौथ का चाँद उग आया था। सरोज ने पूरे विधि-विधान के साथ चाँद को अर्ध्य दिया और वह अखिलेश के चरणों में झुक गई। उसे अचानक चक्कर आ गया। अखिलेश ने उसको सम्भाला। बिस्तर पर लिटाया। माथे को सहलाकर वह सरोज की पिंडलियों को सहलाने लगा। होश आते ही सरोज ने देखा कि अखिलेश की चेतना में जमा पुरुष के दृढ़ अहं का विसर्जन हो गया था और प्रेम की पावन नदी हिलेरें ले रही थीं। वह आँखें बंद कर मन ही मन अपने पति की लंबी उम्र की कामना कर रही थी।

गांधीजी के विचारों को हम स्वयं अपने स्तर पर अवश्य अपनाएँ। स्थानीय स्तर पर छोटी इकाइयों में अपनाकर भी वहाँ अच्छे परिणाम देख सकेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर निष्ठापूर्वक अपनाने पर निष्ठय ही उसके सुफल आत्मनिर्भर भारत के रूप में सबको मिल सकते हैं। गांधीजी के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता पर कई सारी बातें कही जा सकती हैं, मगर उन्हें व्यवहार में उतारना ही महत्वपूर्ण पहल होगी। गांधी मार्ग पर चलते हुए आत्मनिर्भरता को साकार बनाने की बात को कागजों तक सीमित न करके व्यवहार में किसी हद तक उतारने की चेतना फैलाने और अपने स्तर पर अपनाने की बड़ी जरूरत है।

लेखक 'युग मानस' के संस्थापक संपादक और 'आंतर भारती' के प्रधान संपादक हैं। आप संप्रति पाडिच्चेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं।



जिन्दा समाज के लिए संवेदनशीलता बची रहे

समय के साथ-साथ चीजें बदलती हैं। आज के बच्चे बस्ते के बोझ तले दब गये हैं। वे अंकों की दौड़ में तो आगे हैं, लेकिन जीवन के अनुभव से बेहद दूर होते जा रहे हैं। वे भले ही सौ में से नब्बे अंक ला रहे हैं, लेकिन जीवन की पढ़ाई में वे लगातार पिछड़ रहे हैं। आज के बच्चे प्रकृति से दूर हो रहे हैं।

ध न्यवाद कि आप इसे पढ़ रहे हैं। संभव है कि हाथ में पत्रिका होगी। यह भी ही सकता है कि आप इसे मोबाइल या लैपटॉप की स्क्रीन पर पढ़ रहे हों। मैंने वायरलेस की-बोर्ड से इसे टाइप किया है। मुहत हो गयी कागज पर कोई लेख लिखे हुए। मौजूदा समय सूचना, जानकारी और तकनीक का है। हर समय अद्यतन रहने का युग है। घर हो या स्कूल। ऑफिस हो या पिकनिक स्पॉट। हर कोई, हर जगह मोबाइल पर आँखें गडाये मिल जाएगा। बच्चे भी पीछे नहीं हैं।

नयी पीढ़ी मोबाइल में वॉयस मैसेज पर आ गयी है। वह अब स्क्रीन पर भी लिखने की जहमत नहीं उतारी। सब कुछ त्वरित चाहिए। बाजार ने यह सब उपलब्ध कराया है। व्हाट्सएप, गूगल मीट, जूम एप, टीम और माइक्रोसॉफ्ट टीम एप्स जैसे मायम हैं जिन्होंने आमने-सामने की बैठकें भी न्यून कर दी हैं। ऑनलाइन लेन-देन और शांपिंग ने दुनिया ही बदल दी है। मुहल्ले की दुकान में जाने से बेहतर है मोबाइल से ही पेमेन्ट करो और दस मिनट में सुई से लेकर सब्लिं तक दरवाजे पर उपलब्ध हो जाएगा। समय की बचत। नक्कड़ी देने-लेने से छुट्टी। हिसाब-किताब रखने का झांझट भी खत्म। डायरी पर कलम से गुणा-जोड़-भाग करने का झामेला भी समाप्त हो गया है।

नयी पीढ़ी में खासकर स्कूली बच्चे मोबाइल के बारे में बड़े से ज्यादा जानते हैं। नित-नये उत्पादों-उपकरणों की खरीदारी को लेकर बच्चों की समझ कुछ हटकर है। वे ज्यादा मोल-भाव में यकीन नहीं करते। वे समय बचाना चाहते हैं। बचे हुए समय में भरपूर नींद लेना पसंद करते हैं। या बाइक-कार से फराटेदार तेज गति में किसी यात्रा पर जाना पसंद करते हैं। यदा-कदा नहीं, अक्सर खान-पान की सामग्री भी अपने दरवाजे पर मैंगना पसंद करते हैं।

सवाल उठता है कि यह सब सुविधा, सरलता और सुकून ही दे रहा है या इससे कुछ गडबड़ीयाँ भी पैदा हो रही हैं? केवल और केवल स्कूली बच्चों की जीवनशैली को देखें तो सुबह उठते ही बच्चे मोबाइल पर देखते हैं कि आज मौसम कैसा रहेगा? क्या छतरी ले जाने की जरूरत है? स्कूली व्हाट्सएप ग्रुप में देखना जरूरी है कि कहाँ कोई टीचर छुट्टी पर तो नहीं है? यदि है तो उस विषय की किताब और कॉपी क्यों ले जानी है!

स्कूल से जैसे ही बच्चे घर लौट रहे हैं तो ट्यूटर ग्रुप में देखना जरूरी है। ट्यूटर ने कोई एक्सरसाइज तो नहीं दी है? यदि स्कूल से या ट्यूशन से कोई होमवर्क मिला है तो मोबाइल में चेट जीपीटी जैसे कई एप्स हैं जो पलक झपकते ही सॉल्यूशन





ऐसे कई उदाहरण दुनिया के तमाम अभिभावकों के पास हैं, जो बच्चों की वास्तविक दुनिया के आस-पास रहते हैं और उनकी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान भी देते हैं। तस्वीर का दूसरा हिस्सा भी है, जो और भी अधिक चौंकाने वाला है। यह उस बात का भयावह संकेत है कि आज की पीढ़ी नवे को तो जानती है, पर पुराने से अनजान है।

उपलब्ध करा रहे हैं। झटपट उसे लिख डालना है। उतारना ही तो है। स्कूल के ब्लॉक्स-एप मूप्स में कुछ कहना है तो बॉय्स रिकार्ड कर भेजनी है। लिखने का डांगट कौन पाले? खाली बक्त है तो कार-बाइक, कुश्ती, दंगल, शूटर मैन जैसे गेम्स में समय बिताना है। रील्स, इंस्टाग्राम, स्टोरी, स्टेटस तो ही ही है। सेल्फी डे तो हर रोज है ही। बच्चे डियूलिंगो जैसे एप्स पर भी मशागूल हैं। वे हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य भाषाएं सीख रहे हैं। स्कूल-ट्यूशन-एग्जाम्स की तैयारी के लिए मोबाइल आज खाने-पीने जैसी आम जरूरत हो गयी है। घर-घर की कहानी। परिवार में जितने सदस्य, उतने मोबाइल। हर मोबाइल पर इंटरनेट डेटा। एक दिन बिना चपाती का भोजन चल जाएगा। एक दो दिन साबुन-शैम्पू नहीं है, काम चल जाएगा। बिना टमाटर-प्याज के सब्जी-दाल बन जाएगी, लेकिन किसी भी सदस्य के मोबाइल पर एक दिन भी बिना डेटा के समय कटना अब संभव नहीं है। बाजार, व्यवस्था और दैनिकी के केन्द्र में मोबाइल है। इससे बचने का कोई उपाय है ही नहीं।

तो? आगे क्या? आइए, समझते हैं कि आखिर बात कहाँ तक पहुँच रही है। कुछ बच्चों के मनोभावों पर नजर डालते हैं। नसरी की मेधा को मैडम अंग्रेजी का जी बनाना सिखा रही हैं। झल्लाकर मैडम ने कहा- “मेधा! तुम तो मेरा दिमाग ही चाट लिया।” मेधा

उठती है और मैडम का माथा चाटते हुए पूछ बैठती है- “दिमाग तो ऐसे चाटते हैं। मैंने पहले कब चाटा?”

पाँच बरस का एक बच्चा भोजन कर रहा है। आतुरता में वह जल्दी-जल्दी खा रहा है। माँ कहती है- “बेटा, आराम से। थाली कहीं भाग नहीं रही।” बच्चा तपाक से जवाब देता है- “थाली के कोई पैर होते हैं, जो वह भाग जाएगी।”

एक घर के पास से ट्रेन गुजरती है। चाचा भतीजे से कहता है- “बेटा! ट्रेन को टा-टा करो।” छह साल का भतीजा जवाब देता है- “क्यों करूँ? ट्रेन कौन-सा मेरे टा-टा का जवाब देगी।”

पाँच साल का सलीम जंगल बुक देखकर खुश हो जाता है। दो-तीन बार देखने के बाद वह पूछता है- “मोगली तो इंसान का बच्चा है, वह तो बोल सकता है तेकिन बधिरा, शेरखान, तबाकी तो जानकर हैं, वे इंसान की आवाज में कैसे बोल सकते हैं? यह तो झूठ है।”

ये उदाहरण आज के बच्चों की वाक्पटुता और समझदारी के हैं। ऐसे कई उदाहरण दुनिया के तमाम अभिभावकों के पास हैं, जो बच्चों की वास्तविक दुनिया के आस-पास रहते हैं और उनकी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान भी देते हैं।

तस्वीर का दूसरा हिस्सा भी है, जो और भी अधिक चौंकाने वाला है। यह इस बात का भयावह संकेत है कि आज की पीढ़ी नये को तो जानती है, पर पुराने से अनजान है। होश सम्भालने के बाद से ही अनिमेष ने डिब्बाबंद व पाउच का दूध ही घर में आता हुआ देखा। एक ग्रामीण क्षेत्र के घरमण के दौरान गाँव के तालाब में मैली-कुचली काली भैंस को देखा तो वह हैरान रह गया। मैडम ने बताया कि इसे भैंस कहते हैं और इसके चार थन हैं। इन थनों से ही दूध निकलता है। अनिमेष ने घर आकर कह दिया- “मैं अब दूध नहीं पीऊँगा। गंदी, काली और मैली भैंस का दूध होता है, आज पता चला। छिः!”

सिया के घर में पैकिंग बाला आटा आता है। एक दिन उसने बाजार में एक बिस्किट के पैकेट पर गेहूँ की बालियों का चित्र देखा। पूछने पर दुकानदार ने बताया कि बिस्किट गेहूँ से बना है। गेहूँ की बाली में गेहूँ को न देख सिया ने दुकानदार से कहा- “ये तो बालियाँ हैं।” इस पर दुकानदार ने समझाया, “गेहूँ इन बालियों के अंदर होता है। अरे! ये आटा है न! गेहूँ को पीसकर ही आटा बनाया जाता है।” सिया के लिए यह नयी जानकारी थी।

प्रांजल के घर में अत्याधुनिक डिजिटल घड़ियाँ लगी हैं। उसके हाथ में भी डिजिटल घड़ी है। किचन में इंडक्शन, ट्रैफिक लाइट्स के साथ-साथ उसका कैलकुलेटर भी डिजिटल है। एक दिन वह अपने ब्लास्टेट अफरोज के घर गया। वहाँ पारपरिक दीवार घड़ी थी। मैनुअल अंकों वाली इस घड़ी में प्रांजल टाइम नहीं देख सका।

जैसमाइन और मेगोलिया जुड़वां बहने हैं। वे एक विवाह में सुदूर किसी कस्बे की बारात में गयीं। रात में लालटेन देखकर वे



हैरान हो गयीं। शहर में बिजली गुल नहीं होती। उनके घर में तो इनवर्टर है, लेकिन लालटेन! कौच की चिमनी! चिमनी के अंदर बाती! केरोसिन तेल के साथ-साथ हवा में भी लालटेन का न बुझना उनके लिए किसी जादू से कम न था।

समय के साथ-साथ चीजें बदलती हैं। आज के बच्चे बस्ते के बोझ तले दब गये हैं। वे अंकों की दौड़ में तो आगे हैं, लेकिन जीवन के अनुभव से बेहद दूर होते जा रहे हैं। वे खले ही सौ में से नब्बे अंक ला रहे हैं, लेकिन जीवन की पढ़ाई में वे लगातार पिछड़ रहे हैं। आज के बच्चे प्रकृति से दूर हो रहे हैं। खेल-खिलौने बदल गये हैं। हाइटेक दुनिया में अधिकतर समय देने से उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो गयी है। फास्ट फूड ने बच्चों की नजरें भी क्षीण कर दी हैं। उनकी एकाग्रता भी कम हो रही है। सुनने, समझने, पढ़ने और लिखने के प्रति लगाव भी कम होता जा रहा है। माता-पिता के पास समय नहीं है। एकल परिवार के चलते दादा-दादी और नाना-नानी का अनुभव बच्चों से कोसाँ दूर हो गया है। जंगल दूर चले गये हैं। आस-पास और नाते-रिशेदारी सिमट गये हैं।

तो अब क्या किया जाये? कुछ समय मौखिक बातचीत के लिए निकाला जाये। टीवी और मोबाइल से हटकर गप-शप की जाये। एक साथ बैठकर बातचीत के लिए समय निकाला जाये। पैदल घूमा जाये। बच्चों की सुजनशीलता और काल्पनिकता को बचाये और बनाये रखने के लिए हाथ के छोटे-छोटे काम किये जाएं। कला, संगीत, क्राफ्ट जैसा कुछ किया जाये।

घर चाहे बहुत बड़ा है या बहुत छोटा, इसमें एक कोना किताबों-पत्र-पत्रिकाओं का जरूर होना चाहिए। घर में नियमित कुछ पत्रिकाएं जरूर आनी चाहिए। बाल साहित्य जरूर हो। याद रखिए। बच्चे सूचना तकनीक में एक्सपर्ट हैं, लेकिन वे कुदरती घटनाओं-प्रक्रियाओं, सामाजिक ताने-बाने, हाथ से किये जाने वाले काम और फौरी कामों में फिसड़ी होते जा रहे हैं। यूज एण्ड विवक थोकी मानसिकता उनमें मनुष्यता को कम कर रही है। वे संवेदनहीन समाज का हिस्सा हो रहे हैं। वे न मौलिक क्रिया कर पा रहे हैं न प्रतिक्रिया। जैसा चल रहा है, चलने दो - की भावना घर कर रही है।

सेवा, सहायता तो दूर, फौरी सरोकारों से भी बे दूर होते जा रहे हैं। बाजार उहें इस भावना से सराबोर करना चाहता है कि मोबाइल में डेटा हो, खर्च करने के लिए यूपीआई जैसी वैलेट में पर्याप्त रकम रहे तो आज का दिन आसानी से कट जाएगा। कल की छोड़ी। कल की कल सोचेंगे। यह धातक नहीं है तो सुकून भरा भी नहीं है। समाज जीवित तभी रहेगा जब जिन्दा शरीरों में भावनात्मक अपनत्व कायम रहे।

विधि एवं पत्रकारिता से वर्षों तक जुड़े रहे लेखक फिलहाल पौड़ी गढ़वाल में अध्यापक हैं। ये लोकप्रिय बाल साहित्यकार और समीक्षक हैं।

लघुकथा

कपाट

वीनु जग्मार - पुणे



प्रायः सुबह जल्दी नींद खुल जाती है सुष्मिता की। गहन आत्म-चिंतन में लीन वह सांसारिक विडब्बनाओं के अंदर छुपे सत्य को ढूँढ़ने का प्रयत्न करती है। एकांकते के यही चंद पल तो उसे उबार लेते हैं - सांसारिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत उद्देलनों के अंबार से, और वह दीपशिखा बन दीवारों से घिरी इस छत को "कविरा यह घर प्रेम का" बनाने की प्रक्रिया में पुनःपुनःजुट पड़ती है।

जुड़ने-टूटने की प्रक्रिया के मध्य उसे खिड़की के अंधखुले कपाटों के बीच से झाँकती कोहरे की धुंध दिखायी देती है, और देखती है वह उसमें एक आकृति। मन भागने लगता है प्रकृति की ओर...उस अज्ञात शक्ति की ओर...। कहती है कोहरे से...नहीं...कोहरे से नहीं, उस कपाट से - "खोलो तो कपाट अपने दोनों पट! जी भरकर देखने तो दो कोहरे की सुंदरता को, मेरी अनुभूतियों में भर तो लेने दो उसकी रुई-सी कोमलता को, बाँधने तो दो मुझी भर उसकी शीतलता को...।"

मन ही मन अनजाने में न जाने कितनी बार, झाँकने तो दो, सुनने तो दो, समेटने तो दो.. आदि शब्दों से दो-दो-दो कर ही रही होती है कि अचानक खिलखिला पड़ता है कपाट और कहता है- "जरा ठहरा, सुनो तो सही, मेरी भी बात। अपने हृदय-पट खुले रखना, अंतर्व्योम के चहुं ओर झाँकना, कोहरे की सुंदरता, धुंधलापन, इसके भीतर का छुपा हुआ आकाश, टिमटिमाते चाँद-तारे और सूर्य का प्रकाश...सभी तो हैं वहीं...।"



अपुवत अहिंसा अंतर्राष्ट्रीय शानि पुरस्कार से सम्मानित तुर्की की विज्ञा अनवर की संस्था 'द लाइट मिलेवियम ब्लॉकल' की ओर से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निकट भविष्य में आयोजित होने वाले 'द समिट ऑफ पश्चौर' की पूर्व तैयारी अवधि आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपुविस्ता के अंतर्राष्ट्रीय संवठन मंत्री जय बोहरा ने ऑनलाइन सहभागिता की। प्रस्तुत हैं संगोष्ठी में चर्चित विषय पर उनके विचार-

एआई, तू क्यों आयी !

स माज...अब तक शक्तिमानों द्वारा संचालित रहा है (यहाँ हम 'सर्वशक्तिमान' अर्थात् ईश्वर की नहीं बल्कि उस प्राणी की बात कर रहे हैं जिसे मनुष्य कहा जाता है)। हाँ! अब तक जो कुछ भी रचा या बनाया गया है, वह इस बेहतरीन होमो सेपियंस प्रजाति के मन मस्तिष्क की उपज है या इसी के 'माइडगेम' या 'हार्टगेम' का परिणाम है।

जिन भी तरीकों से हम जीते हैं, सोचते हैं, संवाद करते हैं, यात्रा करते हैं, कमाते हैं, उपभोग करते हैं, संघर्ष करते हैं या जीवित रहते हैं...इन्हीं सब तरीकों की अतिम परिणति ही हमारी सभ्यता कहलाती है। ये सभी क्रियाएँ अब तक स्वयं, परिवार, मित्र, रिश्तेदार, प्रभावशाली लोग, सरकार, संस्थान, व्यवसाय आदि के द्वारा मनुष्यों के विचारों, विचारधाराओं, भावनाओं, इरादों और कथानकों के माध्यम से संचालित होती रही हैं।

अब एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) क्रांति (जो अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है) के साथ, मनुष्य के इन गुणों को एक उपकरण के द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है, जिसे कंप्यूटर कहा जाता है। जी हाँ, एआई हमारे अस्तित्व के ताने-बाने को फिर से आकार देने में लगी है। मानव सभ्यता इस क्रांति के साथ एक विशाल छलांग ले रही है, जहाँ वह अपने ही नियंत्रण को अपने हाथों से हटा रही है। क्या किसी के मन में यह सवाल आया है कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं? नहीं! कुछेक की आशंकाओं को छोड़कर, अन्य सभी इसके बारे में सिर्फ कल्पनात्मक विचारों में लिप्त हैं। एआई के होने या न होने पर बहसें केवल किसी के अपने पक्ष या दृष्टिकोण को बनाये रखने तक सीमित हैं, न कि इस सभ्यता के पूरे पहलू को समझने के लिए।

एआई दोधारी तलवार की तरह है...इसके तथाकथित सभी सकारात्मक पहलू, जैसे - अत्यधिक रचनात्मक परिणाम, भविष्यवाणियाँ, गहन और बहु-दिशात्मक विश्लेषण, अत्यधिक जटिल तर्कों को सम्भालना, उन कार्यों को निष्पादित करना जो मानव मस्तिष्क की क्षमता से पेरे हैं, भी मानवता पर अप्रत्याशित प्रभाव डालने वाले हैं। आप और मैं अपनी जिंदगी जी रहे हैं...क्या आपने कभी सोचा है कि इस जीवन का आधार क्या है? कुछ

करना, संलग्न होना, आवश्यक होना, महत्वपूर्ण होना, या तो दूसरों पर निर्भर होना या दूसरों का आप पर निर्भर होना। अब सोचें आग अचानक ऐसी कोई संलग्नता न हो, हाँ! चीजों का खायाल एआई रखेगी, फैसले एआई लेगी। चाहे वह डिजाइनिंग हो, विकास हो, कार्यान्वयन हो, विध्वंस हो, निर्णय हो, बहस हो, इलाज हो... आपकी जरूरत नहीं होगी।

अब तक जो कुछ भी विकसित हुआ है, वह मानव बुद्धि का कार्य था। इसलिए इसे कुछ हद तक नियंत्रित या मर्यादित किया जा सकता था, पर अब जब चीजें इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से विकसित होना शुरू होंगी, तो भगवान भी नहीं जान पाएंगे कि इसे कैसे नियमित किया जाएगा या यह नियंत्रित किया जा सकेगा भी या नहीं?

यह अव्यावहारिक लग सकता है यदि मैं यह प्रस्ताव दूँ कि हमें यह तय करने के लिए एक आचार संहिता या एसओपी की आवश्यकता है कि हमें क्या विकसित करना है, क्या करना है और किस सीमा तक करना है।

हाँ, अब समय आ गया है कि हम अपने इस विकास की दौड़ द्वारा की गयी तबाही को महसूस करें क्योंकि पहले हमने अपनी जरूरत, आराम या किसी उपचार के लिए कुछ विकसित किया और अब हम उस तकनीक के दुष्प्रभावों, परिणामों या नकारात्मक प्रभावों का सामना करने के लिए नयी चीजें विकसित कर रहे हैं। यह नये किये हुए उपचार भी थोड़े समय बाद नये रोगों को जन्म देते हैं और फिर हम उनका इलाज ढूँढ़ने में लग जाते हैं। इस प्रकार तकनीकी की यह कभी न खत्म होने वाली दौड़ निरंतर मनुष्यता को चुनौती दे रही है।

मुझे पता है कि मानव जाति की कभी न खत्म होने वाली इच्छाओं या लालच के इस जवलंत प्रश्न पर कोई विचार नहीं करेगा। फिर भी, मेरा यह प्रबल सुझाव होगा कि अब समय आ गया है जब हमें एआई के गलत दिशा में आगे बढ़ने पर रोक लगाने के लिए एक सशक्त दृष्टिकोण तैयार करना चाहिए, अन्यथा जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, यह हमारे नियंत्रण से बाहर हो जाएगी, यह अजेय हो जाएगी, यह अकल्पनीय हो जाएगी। ■■■



क्षमा करना स्वयं पर उपकार करना है

क्षमा वास्तव में दृढ़ता का प्रतीक है न कि निर्वलता का। अपने प्रति की गयी दुष्टता से निपटने के लिए धैर्य और साहस की जरूरत होती है, साथ ही प्रेम की, जो क्षमा की वास्तविक प्रेरक शक्ति है। क्षमा के साथ दो सशक्त घटक जुड़े होते हैं - सम्मान और प्रतिवद्दता। श्रेष्ठ जीवन के लिए यही दो प्रमुख आधार स्तम्भ भी होते हैं।

एक लोककथा के अनुसार दो व्यक्तियों में एक आँगन के पेड़ को लेकर झगड़ा हुआ। आँगन का पेड़ न हुआ प्रतिष्ठा का सूचक बन गया। कुछ समय बाद बेचारा पेड़ हाशिये पर था और मध्य में था सिर्फ झगड़ा! झगड़ा बढ़ता गया। दोनों परिवारों में दुश्मनी की गांठें बंध गयीं और कहते हैं, उनका यह झगड़ा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहा और कलियुग में आकर सारे समाज में व्याप हो गया और आज के समाज की वास्तविकता हमारे समक्ष है। हम इस लोककथा की काल्पनिकता को झुठला नहीं सकते। उत्तरोत्तर प्रगति के साथ हमने चाँद-तारे तो छुलिये मगर सामंजस्य को अपने पास नहीं रख पाये। आमजन की कौन कहे, श्रेष्ठ और उदात्त भावनाओं वाले लोग भी इन्हीं सब पचड़ों में पड़े मिलते हैं। विवादों के तले समझतों पहले ही दब जाती है, साथ ही जीवन का रस, महत्व भी झुंझलाहट में बदल जाता है।

बहुत कुछ पाने का नाम है क्षमा

आंतरिक और वास्तविक सुखद प्रेम का प्रतीक है, क्षमा! हमारे द्वारा निर्मित अविश्वास, फसाद, सबेदनहीनता और संवादहीनता के घटाटोप भरे अंधेरे वियावान जंगल में आशा की किरण बिखेरता एक दीया है क्षमा! सामंजस्य और जीवन का रस

है क्षमा! बहुत कुछ पालेने का नाम है क्षमा! किसी पेड़ की जड़ें भी पेड़ को इसी आशा के साथ भोजन देती हैं कि वह 'पत्थर' की प्रतिक्रिया 'फल' के रूप में दें। क्षमा भी यही कहती है।

हमारे आसपास भी कई विवाद होते हैं। इनमें से कुछ हमारी गलती से, कुछ सामने वाले की, जो लम्बे समय से हमें परेशन किये रहते हैं या फिर हो सकता है, ऐसी ठेस जो हृदय में धैंसी हुई है, टीसती रहती है। इस मामले में हम कोई अलग नहीं हैं और इन सभी का सुखांत यही है कि क्षमा के मूल बिंदु को पहचान लिया जाये।

क्षमा करना आसान नहीं है

साधारण व्यक्ति के लिए क्षमा कर देना इतना आसान नहीं होता है। किसी के द्वारा अन्याय, धोखे, गलत व्यवहार की तीव्र प्रतिक्रिया यही होती है कि उसे दोगुनी सजा मिले। हमारे विवेक, बुद्धि और तन-मन में लगी आग हमेशा प्रेरित करती है कि 'उसे अपने किये की सजा मिलनी ही चाहिए।' ये सब विचार ऐसे बीज हैं जो कैंसर की भाँति फैलते हैं। इन्हीं सब चक्कर में पड़कर हम अपनी खुशियों का गला तो घोंटते ही हैं, आपसी माहौल को भी घुटन भरा बना लेते हैं। इससे तो अच्छा है कि हम सामने वाले को क्षमा कर दें और जीवन का मजा लें।





हम भी गुनाह करते हैं, उसी तरह का नहीं तो दूसरी तरह का और देव स्थलों पर जाकर उसी आशा में शीश नवाते हैं कि हमारे पापों का देवता क्षमा कर दें और हमें वाहित फल प्रदान करें। जब एक तरफ हम अपने लिए क्षमा की आशा रखते हैं तो उन्हें दूसरी तरह का और देव स्थलों पर जाकर इसी आशा में शीश नवाते हैं कि हमारे पापों को देवता क्षमा कर दें और हमें वाहित फल प्रदान करें। जब एक तरफ हम अपने लिए क्षमा की आशा रखते हैं तो हम दूसरे को क्षमा क्यों नहीं कर सकते? हम क्षमा किये बांहोंर क्षमा लेने की बात कैसे कर सकते हैं?

अक्सर विवाद होने पर गुब्बारे में हवा की तरह नफरत हमारे दिल में भर जाती है और हमें स्वयं इसका आभास नहीं होता है कि हम सामने वाले को नीचा दिखाने, हराने की कुसंसचनाओं को रचने में ही अधिकतम समय दे रहे होते हैं। हम स्वीकार नहीं कर पाते हैं कि हम नफरत के जाल में फँस चुके हैं। उस स्थिति में हम स्वयं से लड़ भी रहे होते हैं।

इस नफरत, विवाद का अंत संभव है, बशर्ते हम अपने आपसे लड़ना बंद कर दें, दोषी से सीधे मिलें और कहें कि 'तुमने मेरे साथ यह गलत व्यवहार किया है।' हो सकता है यह सब तत्काल असर न करें, परन्तु उसके विचारों के तंतुओं को हल्का-सा स्पन्दन तो मिल ही जाएगा, उसे इस दिशा में सोचने पर मजबूर किया जा सकेगा।

मुझे याद है, कॉलेज के दिनों में एक बदमाश लड़के ने परीक्षा में मेरे सहपाठी मित्र को धोखे से नकल के केस में फँसवा दिया। प्रतिक्रियास्वरूप मेरे मित्र के दिल में उसके प्रति नफरत उत्पन्न हुई और वह रात दिन उन्हीं बातों में उलझा रहने लगा।

फिर एक दिन शाम को उसने उसी बदमाश लड़के से मुलाकात की और सीधे उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया? इस

पर उसने तत्काल तो कुछ नहीं कहा, परंतु दूसरे दिन उसने अपना सारा गुनाह स्वीकार कर लिया और सभी के सामने मेरे मित्र से माफी भी माँगी।

क्षमा कायरता नहीं है

कई ऐसे विवाद होते हैं, जिनमें क्षमा कर देना कायरता लगती है। लगता है कि हमने किसी डर की वजह से क्षमा कर दिया है। कुछ विद्वानों का कहना है कि क्षमा अपने आपमें अन्यथा है, क्योंकि न्यायतः अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए। फिर भी इन सबसे इसलिए सहमत नहीं हुआ जा सकता है, क्योंकि हम भी गुनाह करते हैं, उसी तरह का नहीं तो दूसरी तरह का और देव स्थलों पर जाकर इसी आशा में शीश नवाते हैं कि हमारे पापों को देवता क्षमा कर दें और हमें वाहित फल प्रदान करें। जब एक तरफ हम अपने लिए क्षमा की आशा रखते हैं तो हम दूसरे को क्षमा क्यों नहीं कर सकते? हम क्षमा किये बांहेर क्षमा लेने की बात कैसे कर सकते हैं?

क्षमा कीजिए, अच्छा है!

किसी अपराध का बदला ले लेने से जीवन की तराजू का पलड़ा बराबर नहीं हो जाता है। वास्तव में हम अपने आपको ही कम तौलते हैं और हमारी विचारधारा भी अपराधी के समानांतर हो जाती है। अपराध करने वाला व सहन करने वाला दोनों ही प्रतिहिंसा के अंतीहीन चक्र में फँस जाते हैं। गांधीजी ने लिखा है "अगर हम सभी 'आँख के बदले आँख' वाले सिद्धांत पर चलें तो सारी दुनिया ही अधी हो जाएगी।"

किसी से नफरत हो और उस नफरत को दूसरे पल ही भुला दें, यह एक कठिन प्रक्रिया है। कई बार हमें भ्रम होता है कि हम किसी से नफरत नहीं करते हैं, परन्तु उसे जितनी गहरी होती है, उतना ही उसे मन से निकालने में समय लगता है। इसके बाद भी निरन्तर सकारात्मक एवं क्षमा के विषय में सोचते रहेंगे तो एक दिन हम उस लेस को क्षमा में बदल सकते हैं।

क्षमा हमारे मन पर पीड़ा की जकड़ को दूर करके सम्भावनाओं के द्वारा खोल देती है। क्षमा वास्तव में दृढ़ता का प्रतीक है, न कि निर्बलता का। निर्बल व्यक्तित्व क्षमा जैसा कार्य कर ही नहीं सकता है। और अपने प्रति की गयी दुष्टी से निपटने के लिए धैर्य और साहस की जरूरत होती है, साथ ही प्रेम की, जो क्षमा की वास्तविक प्रेरक शक्ति है। क्षमा के साथ दो सशक्त घटक जुड़े होते हैं - सम्मान और प्रतिबद्धता। श्रेष्ठ जीवन के लिए यही दो प्रमुख आधार स्तम्भ भी होते हैं।

बड़नगर निवासी लेखक शास्करीय चिकित्सा महाविद्यालय, रत्नाम में अध्यापन के साथ ही साहित्य सूजन में संलग्न हैं। इनकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।



हेल्थ इंश्योरेंस



10 लाख का मेडीकल
@ 39 प्रतिदिन मे पोलिसी 3 वर्षों मे
40 लाख हो जायेगी।

85 की उम्र तक हेल्थ इंश्योरेंस
व्हैग्नर मेडिकल चेकअप
लिमिटेड समय ऑफर !!!



हमारे द्वारा मेडिकलेम
में बेस्ट फैसिलिटी

- हाईस्प्रिटल कमरे की कोई सीमा नहीं
- डलाज राशि की कोई सीमा नहीं
- औल अंडिया कैनलेस हाईस्प्रिटल की सुधिया
- कंस्यूमर आइटम्स को कवर किया जाएगा
- क्लेम मे कोई वैसा नहीं कठेगा
- फास्ट क्लेम सेटलमेंट की गारंटी
- 3 वर्षीय प्रीमियम पे डिस्काउंट



पोर्टरबिलिटी
सुविधा क्या है ?

पोर्टरबिलिटी सुविधा से आप आपकी
पुरानी पॉलिसी को पुराने बेनिफिट
पॉलिसी की गारंटी तारीख एवं
बोनस के साथ, दूसरी कंपनी मे ट्रांसफर
कर सकते हैं. अगर आपकी पॉलिसी
2 साल से पुरानी है, तो आपकी पॉलिसी
मे यॉटिंग प्रीरियल नहीं आएगा और आप
अगले दिन से क्लेम कर सकते हैं.

ज्वेलर्स इंश्योरेंस

- कौन पॉलिसी ले सकता है?
- ज्वेलरी रेल्टेयर/होलसेलर
 - मैन्युफैक्चरर (फैक्ट्री)
 - गोल्ड बुलियन
 - हॉलमार्किंग
 - कारीगर (वर्कशॉप)
 - डायमंड कंपनी
 - सिल्वर कंपनी
 - प्लेटिनम कंपनी

व्या कवर मिलता है?

चोरी, डकेती, शॉप लिफिंग,
रस्ते मे लूट, लॉजिस्टिक, कारीगर,
स्टाफ द्वारा फिडेलिटी (धोखाधड़ी),
थर्ड पार्टी द्वारा फिडेलिटी,
हॉलमार्किंग, फर्माचर, मरीनरी,
कैश, आग, बाढ़, आतंकवादी हमला,
प्राकृतिक आपदाएं कवर है.

हम गारंटी देते है :

- 24/7 क्लेम सर्विस की
- बेस्ट टर्स कंडीशन की
- कम से कम प्रीमियम की
- बेस्ट कंपनी द्वारा पॉलिसी

टॉप क्लेम सेटलमेंट (2022-2024)

- 2 करोड़ - धनलक्ष्मी ज्वेलर्स (फिडेलिटी क्लेम)
 - 1 करोड़ - आगम ज्वेलर्स (ट्रांजिट क्लेम)
 - 1 करोड़ - धाकड़ ज्वेलर्स (फिडेलिटी क्लेम)
- और सेकंडो क्लेम सेटल किए है....

लाइफ इंश्योरेंस

फाइनेंशियल एक्सपर्ट के
मुताबिक आनेवाले 25 साल
भारत के भविष्य के लिए
प्रगतिशील है और बाजार
संबंधित स्कीम मे निवेश करना
लाभदायक हो सकता है.

इसलिए निम्नलिखित
ऐसे प्लान जो
लाइफ कवर के साथ
बाजार निवेश से
बेहतर रिटर्न्स भी देंगे:

25000 प्रति माह मे
1 करोड़*
का लाइफ कवर
25 वे वर्ष मे
5 करोड़* मैच्योरिटी राशि

41666 प्रति माह मे
25 वे वर्ष मे
5 करोड़* मैच्योरिटी राशि
4 लाख
हर वर्ष आजीवन पेशन
5 करोड़*
तक लाइफ कवर

शर्तें - नियम लागू*

300 से अधिक एवार्ड विजेता



Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A



One Stop Insurance Solution in India !

Since 40 Years | 30000+ Happy Clients | 12000+ Claims Solved

Policies : Health | Jewellers | Factory | Building | Travel | Mutual Funds

हमारी सेवाएं पूरे भारत मे ऑनलाइन द्वारा ले सकते हैं।



Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th floor, Dr. A. M. Road, Kabuter Kheria, Nr. Kalbedevi, Marine Lines (E), Mumbai - 400 002.
Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | 022 - 48090082/83/84 | Intercom: 5050

+91 98692 30444 | 98690 50031

क्लेम सर्विस 100% गारंटी पुरे भारत मे



अण्ड्रबत | अक्टूबर, 2024 | 31



कहानी

यात्रा

■ प्रगति गुप्ता ■

माँ-बाप बेटियों के लिए घर-परिवार अच्छा देखते हैं, ताकि लड़की को परेशानियों का सामना न करना पड़े। यही मेरे पापा ने भी किया। कोई भी पैरेंट्स दूसरे घर की बहुत कम जाँच-पड़ताल कर पाते हैं। इंसान रूपया-पैसा, घर-मकान तो देख सकता है, पर मानसिकताओं को कैसे देखेगा?

देणे न की बर्थ के नीचे सामान लगाकर अनुभा अपनी जुड़वाँ बेटियों के साथ तसल्ली से बैठ गयी। ट्रेन की रवानगी में अभी बीस-पच्चीस मिनट थे। उसी कम्पार्टमेंट में एक और संभांत महिला अपनी बेटियों के साथ आयीं। उनकी बेटियाँ बड़ी थीं। बेटियों ने बहुत शांत लहजे में अपनी माँ से कहा - "माँ! आप आराम से बैठिए। हम दोनों सामान लगा देंगे।"

सलीके से सारा सामान बर्थ के नीचे लगाकर उन्होंने माँ के पास बैठते हुए पूछा - "कल से आपकी तबीयत खराब थी। स्टेशन पर भी आपको काफी चलना पड़ा। माँ! आप थकीं तो नहीं? बहुत पसीना आ रहा है आपको। थोड़ा पानी पी लीजिए। अच्छा महसूस करेंगी।"

कुछ लोग स्वयं ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित करवा लेते हैं। कुछ ऐसा ही अनुभा के साथ हुआ। महिला की बेटियों की

आँखों में अपनी माँ के प्रति आदर और लाड के भाव थे। खुद की भी बेटियाँ होने के कारण अनुभा को उनकी बातें स्पर्श कर रही थीं। ज्यों ही ट्रेन ने धीरे-धीरे सरक कर रफ्तार पकड़नी शुरू की, उसकी बेटी प्राची को साथ में लाये हुए खाने की याद आ गयी। वह अनुभा से मचलते हुए बोली - "ममा! हम पूड़ी-सब्जी, नींबू के अचार से कब खाएँगे?" प्राची की बात सुनकर अनुभा के बजाय प्रज्ञा ने उसे टोकते हुए जवाब दिया - "हमने घर से चलते समय दूध पिया था न! मुझे तो भूख नहीं लगी है। तुम्हें कैसे लग गयी?"

प्रज्ञा की बात सुनकर प्राची बोली - "बुद्ध! मुझे दूध की भूख नहीं लगी है। मुझे तो पूड़ी-सब्जी और नींबू के अचार की भूख लगी है।" जैसे ही आसपास बैठे लोगों ने उनकी बातें सुनीं, खिलखिला उठे। आठ बरस की प्राची-प्रज्ञा जुड़वाँ होने की बजाए जहाँ भी जातीं, आकर्षण का केंद्र बन जातीं। ट्रेन के सफर का यही मजा है। आस-पास बैठे लोग अक्सर अपने से लगने लगते हैं। चलती



हुई ट्रेन की खड़खड़ाती आवाज में लोगों का आपस में जोर-जोर से बोलना, दूसरों को स्वतः ही बातों में शामिल कर लेता है। प्राची-प्रज्ञा की बातें सुनकर उस महिला ने बहुत सौम्यता से कहा- "बहुत प्यारी बेटियाँ हैं आपकी। बिल्कुल मेरी बेटियों का व्याप्ति और भव्या की तरह। बचपन में ये दोनों भी बहुत चटर-पटर करती थीं।" ज्यों ही प्राची और प्रज्ञा को लगा कि आंटी ने उनकी बातें सुन ली हैं, वे झोंपकर शराम गयीं।

ज्यों-ज्यों ट्रेन ने रफ्तार पकड़नी शुरू की, दोनों के बीच के अबोले शब्दों ने भी धीरे-धीरे सरक कर अपनी रफ्तार पकड़नी शुरू कर दी। ऐसे में बच्चियां बढ़ती हुई बातों का माध्यम बनीं। जब प्राची-प्रज्ञा ने अपने-आप ही काव्य-भव्या के पास जाकर कुछ-कुछ बोलना शुरू कर दिया, अनायास हमारे बीच का बातलाप भी परिचय के साथ बातों के सिरे बीधने लगा।

"मैं गीता अग्रवाल हूँ। भोपाल के एक स्कूल में टीचर थी। अब रिटायर हो चुकी हूँ। मेरी बेटियाँ भोपाल इंजीनियरिंग कॉलेज से इंजीनियरिंग कर रही हैं। जोधपुर मेरा पीहर है। मेरी माँ काफी समय से बीमार चल रही हैं। मैं उन्हें देखने आयी थी और आप?"... बोल कर गीताजी चुप हो गयीं।

"मेरा नाम अनुभा है। मैं और मेरे पति जोधपुर में ही चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े हैं। मैं मरीजों की काउन्सिलिंग करती हूँ। ये मेरी जुड़वाँ बेटियाँ हैं। आपके पति?" अपनी बात बोलकर न जाने क्यों अनुभा रुक-नी गयी। अनुभा के अंतिम बात पूछते ही गीताजी ने हल्के-से 'न' में सिर हिलाया। वह चुपचाप उनके जवाब का इंतजार करने लगी।

गीताजी के बाहरी व्यक्तित्व को देखकर उनके गांभीर्य के दर्शन हो रहे थे। उनकी सधी हुई बोली में छहराव था। दोनों की उम्र का अंतर अनुभा को प्रतीक्षा करने की हिदायत दे रहा था। थोड़ी देर बाद ही गीताजी हल्के से मुस्कुरायीं और बोलीं-

"क्या जानना चाहती हो तुम अनुभा?"...

"बस, आपको देखकर आपके बारे में जानने की इच्छा जागृत हो रही है।"

"तुम और तुम्हारे पति जिस प्रोफेशन से जुड़े हो, वह नेकी के कामों से जुड़ा है। मेरा अतीत भी डॉक्टर्स के बीच से होकर गुजरा है। मैं दिल से चाहती हूँ तुम उन सब बातों और घटनाओं को सुनो, पर ईश्वर न करे किसी की जिन्दगी में ऐसा समय आये।" गीताजी के इतना बोलते ही उनकी दोनों बेटियों ने अपना ध्यान प्राची-प्रज्ञा की ओर से हटाकर अपनी माँ की ओर केंद्रित कर लिया। थोड़ी देर पहले ही दोनों ने अनुभा से कहा था- "आंटी! ये दोनों कितनी प्रियी और स्वीट हैं। इनकी बातें और भी प्यारी।"

बेटियों का ध्यान अपनी ओर केन्द्रित होते देख गीताजी ने उन्हें प्यार से कहा- "मैं ठीक हूँ बेटा। तुम दोनों प्राची-प्रज्ञा के साथ टाइम स्पेंड करो। तुम दोनों को इनके साथ हँसते मुस्कुराते हुए देखकर मुझे अच्छा लग रहा है।" अपनी बेटियों को समझाकर गीताजी अनुभा की ओर देखकर बोलीं- "अनुभा! मेरी कहानी

बहुत लंबी है। उसका कुछ हिस्सा तुम्हें जरूर सुनाऊँगी। मेरी सारी पढ़ा-लिखाई जोधपुर की ही है। इंग्लिश में एम. ए. करने के बाद मैंने बी.एड. किया। फिर कुछ साल जोधपुर में ही टीचिंग की। मुझे बच्चों को पढ़ाना बेहद पसंद था। मेरे पापा बहुत पढ़े-लिखे थे। वे सरकारी नौकरी में थे। उन्होंने हमेशा मुझे पढ़ने और नौकरी करने के लिए प्रोत्साहित किया। समय आने पर मेरा विवाह भोपाल के ही एक इनकम टैक्स कमिश्नर के साथ हुआ। माँ-बाप बेटियों के लिए घर-परिवार अच्छा देखते हैं, ताकि रोजर्मार्ट की जरूरतों के लिए लड़की को परिशानियों का सामना न करना पड़े। यही मेरे पापा ने भी किया। अनुभा! मुझे महसूस होता है कि कोई भी पैरेंट्स दूसरे घर की बहुत कम जाँच-पड़ताल कर पाते हैं। इसान रुपया-पैसा, घर-मकान तो देख सकता है, पर मानसिकताओं को कैसे देखेगा? मेरे पति को रुपयों-पैसों की भाषा, भावों की भाषा से ज्यादा समझ आती थी। मेरे श्वसु भी इनकम टैक्स कमिश्नर थे। रुपये-पैसों की बहुतायत ने बस उसी का महत्व सिखाया। भावों की भाषा तो उसी को समझ आएगी, जिसने भावों को जीया हो। घर में रुपयों की कमी नहीं थी, मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी।"

अल्पविराम लेकर गीताजी ने एक लंबी सांस खींची और अपनी बात जारी रखी- "मैं सारा दिन घर में अपने सास-श्वसु से मिलने आने-जाने वालों की आवधात करती रहती था फिर अपने पति के साथ सामाजिक आयोजनों में शिरकत करती थी। यही मेरी दिनचर्या थी। दुनिया को दिखाने के लिए जब पति को मेरी प्रशंसा में कर्सीदे पढ़ते देखती, भीतर ही भीतर बहुत आत्मग्लानि होती। हकीकत में तो मिस्टर अग्रवाल जरा-सा ज्यादा बोलने पर गाली-गलौज पर उत्तर आते थे। कई बार तो हाथ भी उत्तर देते थे। कलह से बचने के लिए मैंने अपनी प्रतिक्रिया देनी बंद कर दी थी। जब मन कचोटा, लिखने-पढ़ने में दिमाग लगाती। कुछ इस तरह शादी के बाद के तीन साल गुजर गये। चाहने पर भी संतान-सुख प्राप्त नहीं हुआ था। पीहर में माँ-पापा को लगता था कि बच्चा होने के बाद शायद मिस्टर अग्रवाल का व्यवहार बदल जाये।

कुछ समय और गुजरने पर माँ बनने की खबर ने मुझे खुशियाँ दी, क्योंकि इससे मुझे अपने जीवन में तब्दीली की उम्मीद थी, पर ऐसा हुआ नहीं। पहले भव्या हुई, फिर डेढ़ साल के अन्तर से काव्य हुई। दोनों के जन्म से पहले पूरा परिवार अस्पताल पहुँचता, मगर बेटी के जन्म की सूचना मिलते ही उनका व्यवहार बदल जाता। वे समाज के डर से अस्पताल के चक्कर लगाते, मगर अकेले में प्रताङ्कित करने से नहीं चुकते।"

अनुभा बहुत ध्यान से गीताजी की बातें सुन रही थी। गीताजी अपनी कहानी आगे बढ़ाते हुई बोलीं, "मेरे पीरियड्स अनियमित थे। दोनों की प्रेमनेसी का देरी से ही पता लगा। अगर वे लोग धूण-लिंग का पता करवाते भी तो गर्भपात नहीं होता क्योंकि इससे मेरी जान को खतरा था। जब ये दोनों पैदा हुईं, तब मेडिकल साइंस में बहुत एडवांस तकनीक भी नहीं थी। दोनों बहुत चुलबुली थीं। घर में इनकी उपस्थिति सबसे प्यार करवा ही लेती थी, पर कोई इनसे दिल से जुड़ा हो, ऐसा मुझे कभी महसूस नहीं हुआ। भव्या और

काव्या के होने के बाद मुझे सुसराल वालों के पुत्र-भोह का पता चल गया था। जैसे ही दोनों बेटियां क्रमशः तीन और दो साल की हुईं, मेरे ऊपर दबाव बनना शुरू हो गया कि अब अगला बच्चा लड़का ही होना चाहिए...।"

अचानक गीताजी अपने ख्यालों में खो गयीं। इस बीच अनुभा अपने परिवार के बारे में सोचने लगी, जहाँ लड़का हो या लड़की, कर्ड फर्क नहीं पड़ता था। हालांकि गर्भ में जुड़वाँ बच्चों का पता चलने के बाद कई बार जाँच हुई जिससे उन्हें पता चल गया था कि उनके घर बेटियाँ आने वाली हैं। जब तक लिंग का पता नहीं चला था, अनुभा और उसके पाति के मन में एक ही विचार था। या तो दोनों बेटियाँ पैदा हों, या एक बेटा और एक बेटी हो। उन्हें दो बेटे नहीं चाहिए थे। परिवार के सभी सदस्यों ने बेटे से ज्यादा बेटियों की देखभाल की, क्योंकि सभी का मानना था... 'बेटियों को भविष्य में मातृत्व भी सम्भालना होता है, उनका विशेष ध्यान रखना चाहिए।'

अब गीताजी की बातें अनुभा को भावुक करने लगी थीं। गीताजी ने आगे बोलना शुरू किया- "अनुभा! इसके बाद मेरी जिन्दगी की असली लड़ाई शुरू हुई। इन दोनों के आने के करीब दो साल बाद मुझे वापस प्रेमन्तेसी हुई। पहले के जैसे ही इस बार भी देरी से पता चला। फिर मुझ पर बहुत दबाव ढालकर जाँच करवायी गयी। उस समय तक सोनोग्राफी का चलन शुरू हो गया था। सरकारी अस्पतालों में बहुत कड़े नियम नहीं थे। जाँच में लड़की आयी। चूंकि समय काफी ऊपर हो चुका था, फिर भी काफी रुपये देकर गर्भपात करवाया गया और मैं मरते-मरते बच्ची। ऐसा मेरे साथ दो बार हुआ। मेरा बचना शायद इन बच्चों के लिए ही था।

दो बार मरते-मरते बच जाने के बाद मैं बहुत डर गयी थी। मेरे इसी डर ने और मेरी पढ़ाई-लिखाई ने गजब की हिम्मत दी। मुझे जीना था इन बच्चों के लिए। बाकी हिम्मत मेरे पैरेंट्स ने दी। पापा कह चुके थे- "बहुत कर चुकी हो बेटा इस परिवार में निभाने के लिए। शायद सामर्थ्य से अधिक। मैं और तुम्हारी माँ तुम्हारी हर कोशिश में साथ हैं बेटा।"

उनके कहे हुए शब्द मेरे लिए आशीर्वचन ही थे। मैंने अपने पति से अलग रहने का फैसला कर लिया। इस विवाह-विच्छेद में भी कई अड़चनें आयीं। सिर्फ अपने अहं को शांत करने के लिए और दुनिया को दिखाने के लिए उन्हें बेटियों की कस्टडी चाहिए थी। शायद इधर अब मेरे साथ था। कोर्ट ने बेटियों को मुझे सौंपा, पर आज तक उनका मन अपनी बेटियों से मिलने का कभी नहीं हुआ। सुनते हैं मिस्टर अग्रवाल ने दूसरी शादी भी कर ली, पर शायद उससे भी दो बेटियाँ ही हुईं। अब वे तीसरी शादी नहीं कर सकते थे। नियति को स्वीकारना उनकी मजबूरी थी। हालांकि अकेले सब कुछ सम्भालना आसान नहीं होता, पर हर आती हुई नयी मुश्किल ने मुझे बहुत हिम्मत दी। आज तुम देखो न! दोनों कितनी समझदार हो गयी हैं। मुझे बहुत अच्छे-से समझती हैं, क्योंकि ये भी स्त्री ही हैं न।"

जैसे ही गीताजी की बातें उनकी बेटियों पर आयीं, अनायास उनकी आँखों में आँसू आ गये। इधर उनकी आँखों में आँसू थे, और उधर उनकी बेटियों के सिर अपनी माँ की तरफ धूम चुके थे। उन्होंने अपनी माँ के हाथों को थाम लिया। इस तरह का आमिक जुड़ाव देखकर अनुभा की आँखें नम हो आयीं। अनुभा ने उनकी दोनों बेटियों के सिर पर हाथ रखकर बहुत प्यार किया। फिर अपनी दोनों बेटियों को सीने से लगा लिया।

गीताजी की बातें सुनते-सुनते तीन-चार घंटे कब गुजर गये, पता ही नहीं चला। फिर सभी अपने-अपने बिस्तर लगाकर सो गये। मन हल्का हो जाने से गीताजी तो लेटते ही सो गयीं। उन्होंने तो खोने से ज्यादा प्यार करने वाली बेटियों के रूप में पा लिया था। बस यही बात समझने वाली थी।

जोथपुर में रहने वाली लेखिका मरीजों की काउंसलिंग के साथ ही साहित्य-सूजन में संलग्न हैं। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। इनकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।





परिचय

“हर वर्ष क्यों पैदा हो जाते हैं नये रावण?”

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

निरर्थक और नासमझ हरकत

युगांडा के कवि टिमोथी वांगुसा की कविताओं के मेरे द्वारा किये गये अनुवाद 'सुनो अफ्रीका' शीर्षक से प्रकाशित मेरी पुस्तक में हैं। पुतले जलाने की निरर्थक और नासमझ हरकत पर केंद्रित उनकी एक कविता का अनुवाद प्रस्तुत है-

मालिक और रसोइया

कहाँ रहा तु लड़के, पूछा मालिक ने रसोइया से
कहाँ रहा तु, सुबह से शाम तक
व्यासमझता है, किसने पकाया होगा मेरा नाश्ता
दोपहर और रात का भोजन
जवाब दे कहाँ था पूरा दिन ?
मैं भीड़ के साथ था मालिक, उत्तर दिया रसोइया ने
मैं भीड़ के साथ था वहाँ जहाँ मिलते हैं तमाम रास्ते
केले के तन्तुओं से बनाया हमने एक दैत्य
मार गिराने लायक
उसे जलाया और नाचे उसकी राख पर पूरा दिन
दूर हो जा मेरी नजरों से, गुलाम !
गुस्से से चिल्लाया मालिक रसोइया पर
दूर हो जा मेरी नजरों से अपनी टिह्हा-टांगों पर,
एकदम जा और जाकर जला असंख्य दैत्यों को,
जैसे जलाया केले के तन्तुओं से बना दैत्य -
पर मत आना कभी रोगते
और रसोइया-सा बखान करते यहाँ
जिसमें मंत्रिय है तेरा ।

दिविक गोप्ता दोषवा

नयी पीढ़ी के समक्ष अच्छा आचरण

प्रस्तात करें

समाज में जैसे-जैसे अर्थ की महत्ता बढ़ती गयी है, वैसे-वैसे मूल्यों का हास होता चला गया है। पैसे के लिए आदमी किसी भी

हद तक गिरने और कोई भी अनैतिक मार्ग अपनाने को तैयार है। रातोंगत धनवान बने अमीरों की जीवनशैली हमारी युवा पीढ़ी को दिखाप्रभित कर रही है। यही कारण है कि समाज में रावणी प्रवृत्ति वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। संस्कार का सम्बन्ध उपदेश अथवा पुस्तकीय शिक्षा से कम, आचरण से अधिक होता है। इसलिए जरूरत है कि हम नवी पीढ़ी के समक्ष शुद्ध वातावरण तथा अच्छा आचरण प्रस्तुत करें।

• अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन', लखनऊ

पवित्रता और सत्य का आचरण जरूरी

मानव हृदय में अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की वृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं। जब बुरी वृत्तियाँ अपना प्रभाव प्रबल करती हैं तो अच्छी वृत्तियाँ दबकर शिथिल पड़ जाती हैं। ऐसे में हल्कपट, झूठ, बेर्इमानी और असत्य आचरण प्रबल बन जाता है। व्यक्ति की आत्मा में रामत्व और रावणत्व के मध्य संघर्ष में विजयी होने के लिए हमें रावणत्व को त्याग कर रामत्व को मन पर आसीन करना होगा तभी समाज में मुख-शांति की स्थापना सम्भव हो सकेगी। श्रीराम के आदर्शों को अंगीकार करके राष्ट्रीय जीवन की मर्यादा को सुनिखित किया जा सकता है। सर्व के मुख को प्राथमिकता देना और नारी की प्रतिष्ठा एवं गरिमा को अक्षुण्ण रखना आज की आवश्यकता है। उदात्त चरित्र, पवित्रता और सत्य के सहारे हम राष्ट्र ही नहीं, विश्व के कल्पनायां का भी मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

- डॉ कैलाश चहल सैनी जयप

अपने अंदर के रावण को मारने
का प्रयास हो

विजयादशमी जैसे धार्मिक त्यौहार हों या स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय महत्व के अवसर, इनके वास्तविक महत्व को लोग भूल-से गये हैं। जब हम खुद ही अनेकिंव और गलत लोगों को महत्व देने लगा जाएँगे तब उच्चे लोगों के प्रति उदासीन रहने

लगेंगे तो रोज नये रावण पैदा होंगे ही। तभी तो हम समाज के तथाकथित रावणों से खीफ़जदा और स्वयं को उनके आगे लाचार ही पाते हैं। हम अपने अंदर के रावण को मारने का प्रयास कर सही मायने में विजयादशमी मना सकते हैं और दूसरों को भी इसकी प्रेरणा दे सकते हैं।

-शुभकरण बैद, लाडनू

असमानता और भेदभाव की खाई को पाटना होगा

असमानता और भेदभाव की बढ़ती खाई आज मनुष्यता के निर्माण में बड़ी बाधक बन गयी है। बढ़ते उपभोक्तावाद के कारण लोगों की जरूरतें बढ़ती जा रही हैं जिन्हें पूरा करने के लिए कई लोग अनैतिक रास्तों का प्रयोग करने लगते हैं। इस प्रवृत्ति के शमन के लिए ईमानदारी से प्रयास नहीं हो रहे। हम दूसरों की कमियाँ तो खूब ढूँढ़ लेते हैं, किन्तु अपने गिरहबान में नहीं झाँकते। स्वयं को बदलने की इच्छाशक्ति नहीं दिखाते। स्वयं के आचरण को उदाहरण बनाकर अपने नैतिक बल से अपने साथ ही दूसरों के भीतर के रावण को भी उभरने नहीं देना चाहिए।

- अरविंद कुमार साहू, रायबरेली

आध्यात्मिकता अपनाने से बदलेगी सूरत

मानव सदा प्रगति चाहता है, लेकिन उसकी प्रगति में जो सबसे बड़ी अङ्गतन आती है, वह है स्वयं की बुद्धि, स्वयं का विवेक एवं स्वयं का आचरण। अपने भीतर में ही राम बैठा है एवं रावण भी बैठा है। अपने मस्तिष्क को सकारात्मक रूप से प्रयोग करना ही राम है। अपने बुद्धि को विपरीत विनाश की ओर लेकर जाना ही रावण है।

हमारे देश में अहिंसा की बात चलती है, नैतिकता, प्रामाणिकता की बात चलती है, सद्भावना की बात चलती है, सहिष्णुता की बात चलती है लेकिन ये बातें केवल पुस्तकों में रह जाती हैं। असल जिंदगी में होता है इसका उल्टा। कैसे हमको एक अच्छा इंसान पिले, इस पर कोई चिंतन नहीं कर रहा है। भ्रष्टाचार, हिंसा, धोखाधड़ी के मामले कोर्ट-कवहरी में लंबे समय तक फाइलों में दफन रहते हैं, जिसका कोई हिसाब-किताब नहीं। राजनीतिक स्तर से लोगों का विश्वास उठ रहा है। जो आज रक्षक हैं, वही भक्षक बनेंगे।

इन सबसे दूर होने की राह केवल आध्यात्मिकता में है। आध्यात्मिकता का प्रवेश जब जीवन में होता है तो व्यवहार में सहजता आती है, सरलता आती है एवं व्यक्ति सही-गलत का निर्णय कर पाता है। अणुव्रत दर्शन सदैव मानव को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रयत्नशील है एवं विश्व को शांति देने के

लिए प्रयत्नरत है। जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान जैसे अणुव्रत के आयाम मानव मस्तिष्क में परिवर्तन लाने वाले हैं। विश्व को आज अणुव्रत की जरूरत है।

-राजेश चावत, बैंगलुरु

संकल्प शक्ति और हृदय परिवर्तन से बदलेगी सूरत

बुराई पर अच्छाई की जीत का त्यौहार एक दिन ही क्यों, यह तो हर समय साथ रहने योग्य उपहार है। चलो मान लें एक दिन बुराई को समाप्त करना है, फिर भी रावण का पुतला ही क्यों? रावण को जलाने से सिर्फ़ खानापूर्ति होगी, उससे बुराइयां समाप्त नहीं होंगी। रावण को जलाने का अनुसरण सबने किया, पर उसके लिए राम बना है, इसका ध्यान नहीं रखा गया। हम अपने आसपास देखेंगे तो पता चलेगा कि नये रावण पैदा नहीं हो रहे, वे तो स्वयं या आसपास ही हैं। ऐसे में हमें बस राम के आदर्शों को अपनाना है एवं रावण के आतंक को छोड़ना है। हमें आंतरिक रूप से काम, क्रोध, लोभ आदि बुराइयों का शमन करना है तथा ऐसा होगा हृदय परिवर्तन से। इसकी शुरुआत हमें स्वयं से ही करनी पड़ेगी। हम बदले तो यह संसार समूह जरूर बदलेगा एवं सुंदर बनेगा और वह संकल्पशक्ति एवं परिश्रम से ही होगा। वही सही मायने में विजयादशमी का त्यौहार होगा तथा सही मायने में रावण दहन भी।

-उषा सेठिया, बैंगलुरु

बच्चों को देने होंगे सुसंस्कार

आज घर, विद्यालय हर स्थान पर किताबी शिक्षा तो दी जा रही है, पर संस्कार की शिक्षा को ताक पर रख दिया गया है। पहले संयुक्त परिवारों में दादी-नानी बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा देती थी। संयुक्त परिवार तो अब सिर्फ़ कलानियों में रह गये हैं। एकल परिवारों में माता-पिता को फुर्सत ही नहीं है, फिर बच्चों को संस्कार कौन देगा? इसके लिए शुरू से ही बच्चों में सुसंस्कार और भारतीय संस्कृति के बीज बोना अनिवार्य है। ऐसे बच्चे बड़े होकर देश, समाज व परिवार का गौरव बनेंगे।

-डॉ. निशा नंदिनी भास्तीय, तिनसुकिया

अपने भीतर बैठे रावण को पहचानें

सत्युग में राक्षसों की अलग पहचान थी। आज इनकी पहचान बहुत मुश्किल हो गयी है। महाशक्तिशाली रावण ने सीता को उनकी इच्छा के बगैर हाथ नहीं लगाया था, आज तो उम्र और रिश्तों की मर्यादा को भूलकर किस व्यक्ति के अंदर बैठा रावण कब जाग जाये और अत्याचार की, जुल्म की इंतहा तक पहुँच जाये, कह नहीं सकते? आज रावण अहंकार के रूप में, अत्याचार



के रूप में हमारे अंदर पल रहा है। अपने भीतर बैठे रावण को हम पहचानें और उसे रामत्व की ओर मोड़ने की कोशिश करें।

-सीमा जैन 'भारत', ग्वालियर

कुछ बदिशें बेटों पर होनी चाहिए

हर वर्ष अनेक नये रावण आज की सीताओं का मान-मर्दन करते दिख जाते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए व्यक्ति के जन्म से लेकर स्कूल तक, समाज से लेकर समृद्धाय तक एक स्वस्थ और समझ वाली मानसिकता तैयार करने की आवश्यकता है। सादा जीवन-उच्च विचार, माता-पिता के उत्तम संस्कार और विद्यालयों में गुरुजनों के नैतिक विचार और आदर्श किसी भी बालक को रावण बनने से रोक सकते हैं। समाज में चोर-उच्चके, शराबी, दुराचारी, व्यभिचारी का बहिष्कार और तिरस्कार होना चाहिए। साथ ही कानून और पुलिस की तत्परता और निर्भीकता भी दुराचरण में कमी ला सकती है।

कुछ हिदायतें और बंदिशें, बेटों पर होनी चाहिए।

हर घर में बात-बात पर, बेटियां न रोनी चाहिए।

-नरेन्द्र सिंह 'नीहार', नयी दिल्ली

विचारों में सुधार लाना होगा

हर वर्ष दशहरे पर रावण का पुतला दहन कर बुराई पर अच्छाई की विजय बताकर इतिश्री करना अपने आपको धोखे में रखना है। आज गली-गली में ही नहीं अपितु अपने ही घर में रावण बैठे हैं और हमें पता भी नहीं है। जब कोई अनहोनी होती है तभी आभास हो पाता है, मगर तब तक काफी देर हो चुकी होती है। यह सब आदर्श संस्कारों के अभाव का ही परिणाम है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी मानसिकता को बदलें। अपने जीवन में संयम बरतें। सेवाभावी बनें।

-सुनील कुमार माथुर, जोधपुर

बुराई के खिलाफ मिलकर संघर्ष करना होगा

रावण के पुतले जलाने का उद्देश्य बुराई के खिलाफ संघर्ष को प्रेरित करना है, परंतु जब समाज में बुराई की नयी-नयी शक्ति उभरती हैं, तो यह सबाल उठता है कि नये रावण क्यों जन्म ले रहे हैं? इस समस्या के समाधान के लिए जेंडर सेंसिटिव शिक्षा को बढ़ावा देना जरूरी है। इसके साथ ही महिला सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनाना और उनका प्रभावी ढंग से लागू होना आवश्यक है। दोषियों को कड़ी सजा देने से अन्य अपराधियों में भय पैदा होगा। समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता की संस्कृति को बढ़ावा देना जरूरी है। यह केवल कानूनी उपायों से नहीं, बल्कि सामाजिक पहलुओं से भी संभव है। महिलाओं के लिए सुरक्षित हेल्पलाइन और काउंसलिंग सेवाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।

समाज के हर वर्ग को मिलकर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करनी होगी और बुराई के खिलाफ मिलकर लड़ना होगा।

-श्रुति पाण्डेय, जयपुर

आत्मनिर्भर नारी ही करेगी रावण का संहार

हर वर्ष लाखों-करोड़ों रुपये रावण के पुतलों को जलाने में फूँक दिये जाते हैं, पर क्या उस पुतलों को जला देने मात्र से हम अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो सकते हैं? दरअसल हमें नहीं पता चल पाता कि उस रावण के पुतले के पीछे और कितने रावण सदैर खड़े रहते हैं, जिन्हें पहचान पाना आसान नहीं होता। ऐसे में हर नारी को आत्मनिर्भर बनाना होगा, जिससे अपार शक्ति पाने के बाद वह ऐसे मायावी रावणों को पहचान सकती है और उनका संहार भी कर सकती है।

-आनंद मंजरी, हूस्टन

बनकर राम, मारें रावण को

व्यक्तित्व के तीन घटक हैं - विचार, आचार और व्यवहार। व्यक्ति स्वतंत्र है विचारने और आचरण करने में किन्तु जब वह व्यवहार के धरातल पर उतरता है, तब उसके साथ एक से अधिक व्यक्ति जुड़ जाते हैं और समाज का निर्माण हो जाता है। व्यवहार मधुर और कट्टुदोनों हो सकता है। राम का व्यवहार मधुर, मयादित एवं सर्व हितायथा जबकि रावण ने बुद्धिमान होते हुए भी सीता-हरण करने का जो जघन्य अपराध किया, वह सभ्य समाज की आँखों में आज भी खटकता है। इसीलिए प्रतिवर्ष विजयादशमी के अवसर पर प्रतीक रूप में रावण का पुतला बनाकर उसे अग्नि के हवाले किया जाता है और बुराई पर अच्छाई की विजय की खुशियाँ मनायी जाती हैं। किन्तु इस आयोजन को देखकर आत्मा उत्पीड़ित हो जाती है कि आज कितनी सीताओं को वासना के भूखे भेड़ियों के हाथों से मौत के घाट उतरना पड़ रहा है। अनगिनत द्रौपदियों का चीरहरण खुलेआम किया जा रहा है। कितनी ही पदमिनियों को चिंता और चिंता की आग में झाँका जा रहा है। हजारों युवतियों का यौवन कामान्ध राक्षसों की वासना की भेट चढ़ रहा है। ऐसी वीभत्स घटनाओं का उन्मूलन करने के लिए आवश्यक कदम उठाने जरूरी हैं -

सबसे पहले हमें स्वयं को परिष्कृत करना होगा। सही संस्कारों में ढलना होगा। पाश्चात्य संस्कृति, बॉलीवुड, अर्धनन्म भौड़े नाच-गाने को छोड़कर भारतीय सभ्यता के साथ जुड़ना होगा। घर-परिवार में माता-पिता और बजुर्ग अपनी संतानों व युवा दम्पती पर अपने अनुशासनीय अंकुश को न छोड़ें। उन्हें स्वच्छंद कदापि नहोनें।

अपने अन्दर विद्यमान अहंकार, ममकार, वासना व लोलुपता के भावों को जड़ से उखाड़ फेंकने का साहस पैदा करें। इन्द्रिय संयम, इच्छा परिमाण, वाणी संयम, खाद्य संयम आदि के



द्वारा स्वयं को मानवीयता से जोड़ें। अपने अन्तर्मन में निहित बुराइयों से लड़कर उन पर विजय प्राप्त करें। आजादी की प्राप्ति के साथ ही पूरा देश अणुव्रत के संकल्पों को स्वीकार करता तो आज समाज में इतने रावण देखने को नहीं मिलता। खैर अब भी समय है, सामूहिक प्रयासों द्वारा अणुव्रत के प्रचार-प्रसार व इसके अंगीकरण पर जोर देकर पुनः रामराज की स्थापना के सपनों को पूरा किया जा सकता है। सपने संकल्प से ही पूरे होते हैं।

जागे स्वयं, जगाएं जग को, बनकर राम, मारें रावण को।

-धर्मचन्द्र जैन 'अनजाना', थामला

अहिंसा हो जीवनशैली का अंग

अहंकार, क्रोध एवं कषाय व्यक्ति के सबसे बड़े दुश्मन हैं और ये ही उसे गवाये प्रवृत्ति की ओर ले जाते हैं। इसलिए भगवान महावीर द्वारा दिखाये गये अहिंसा के मार्ग को अपनी जीवनशैली का अनिवार्य अंग बनाना होगा। अहिंसा वह शस्त्र है जो बड़ी से बड़ी हिंसा एवं घातक व्यक्ति को भी मात देकर उसे सर्वप्रिय बना सकता है। तभी जीवन मुखी एवं शांतिमय होगा।

-सुभाष जैन, टोहाना

अगली परिचर्चा का विषय

"मेरे मन का 2025!"

नव वर्ष 2025 दस्तक दे रहा है। हम नये वर्ष के लिए नये सपने संजोते हैं, नये संकल्प लेते हैं। कुछ समय निकाल कर अपने मन में झाँकिए और हमें लिख भेजिए - कैसा चाहते हैं आप नव वर्ष 2025? स्वयं में क्या बदलाव लाना चाहते हैं? क्या हैं आपके नव वर्ष के संकल्प? अपने चिंतन से, आचरण से, व्यवहार से कैसे बनाएंगे इस दुनिया को और भी खूबसूरत?

'अणुव्रत' पत्रिका के दिसम्बर 2024 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्रों पर आर्मित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 10 नवम्बर 2024 तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत'/'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्यता शुल्क नीचे दिए विवरण के अनुसार जमा करा रहा/रही हूँ -

| अवधि | 'अणुव्रत' |
|----------------------|-----------|
| 1 वर्ष | ₹ 750 |
| 3 वर्ष | ₹ 1800 |
| 5 वर्ष | ₹ 3000 |
| 10 वर्ष | ₹ 6000 |
| 15 वर्ष (योग्यक्षमी) | ₹ 15000 |

| 'बच्चों का देश' |
|--|
| ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY CANARA BANK DDU MARG, NEW DELHI A/c No. : 0158101120312 IFSC Code : CNRB0000158 |
| ₹ 350 |
| ₹ 900 |
| ₹ 1500 |
| ₹ 3000 |
| ₹ 7500 |

| 'बच्चों का देश' |
|---|
| ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY IDBI BANK Branch Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC Code : IBKL0000104 |
| ₹ 350 |
| ₹ 900 |
| ₹ 1500 |
| ₹ 3000 |
| ₹ 7500 |

नाम

पता

नोकाशम

इमेल

फोन

'बच्चों का देश' पत्रिका

अणुव्रत पत्रिका संस्था सोसायटी (अणुविभा)

बिल्डर एवं बीम एंडरेस, बांगला सं. 28, राजसमान - 313324 (राजसमान)

फोनांक : 9414343100

bachchon_ku_desh@yahoo.co.in

'अणुव्रत' पत्रिका

अणुव्रत पत्रिका संस्था सोसायटी (अणुविभा)

अणुव्रत पत्रिका, 210, लंदनपाल व्यापार मार्क, नई दिल्ली-110002

फोनांक : 9116634512

anuvrat.patrika@anuvibha.org



अपुव्रत समाचार





अणुव्रत

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के तत्वावधान में आयोजित

75^{वाँ} अणुव्रत अधिवेशन

8-9-10 नवम्बर, संयम विहार, सूरत गुजरात



अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर हमने 21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024 तक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत अमृत महोत्सव मनाया था। च्वनात्मक कार्यक्रमों से भरपूर यह एक यादगार ऐतिहासिक आयोजन रहा। इसी कड़ी में 8 से 10 नवम्बर 2024 तक सूरत में 75वें अणुव्रत अधिवेशन की आयोजना एक विशिष्ट अवसर के रूप में हमारे समक्ष है। परम पूज्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में यह आयोजन अणुव्रत कार्यकर्ताओं में नयी ऊर्जा का संचार करेगा।

इस अधिवेशन का ध्येय वाक्य है - "अमृतम्! बढ़ें, अणुव्रत-शतक की ओर"। अणुव्रत आंदोलन को आने वाले वर्षों में और भी व्यापक व प्रभावी बनाने के लिए यह अधिवेशन नव-चिंतन के साथ नव-संकल्प का मार्ग प्रशस्त करेगा। अणुव्रत-साधना अणुव्रत-विचार को व्यवहार के धरातल पर उतारने का प्रशस्त मार्ग है। इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए 'अणुव्रत' पत्रिका के आगामी अंक को 'अणुव्रत-साधना' पर केंद्रित रखा गया है।

नवम्बर अंक ही में "बढ़ें, अणुव्रत-शतक की ओर" विषयक परिचर्चा भी पाठकों को इस चिंतन प्रक्रिया में शामिल होने का मंच उपलब्ध करा रही है। आइए, एक अहिंसक व शांतिमय समाज के निर्माण में हम सब अपना सार्थक योगदान दें।

अणुव्रत अधिवेशन में अणुविभा परिवार, अणुव्रत समितियों व अणुव्रत मचों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। अधिवेशन सम्बन्धी अधिक जानकारी हेतु सह-संयोजकगण से संपर्क किया जा सकता है।

निवेदक :

अविनाश नाहर
अध्यक्ष

भीखम सुराणा
महामंत्री

राजेश सुराणा
अधिवेशन संयोजक

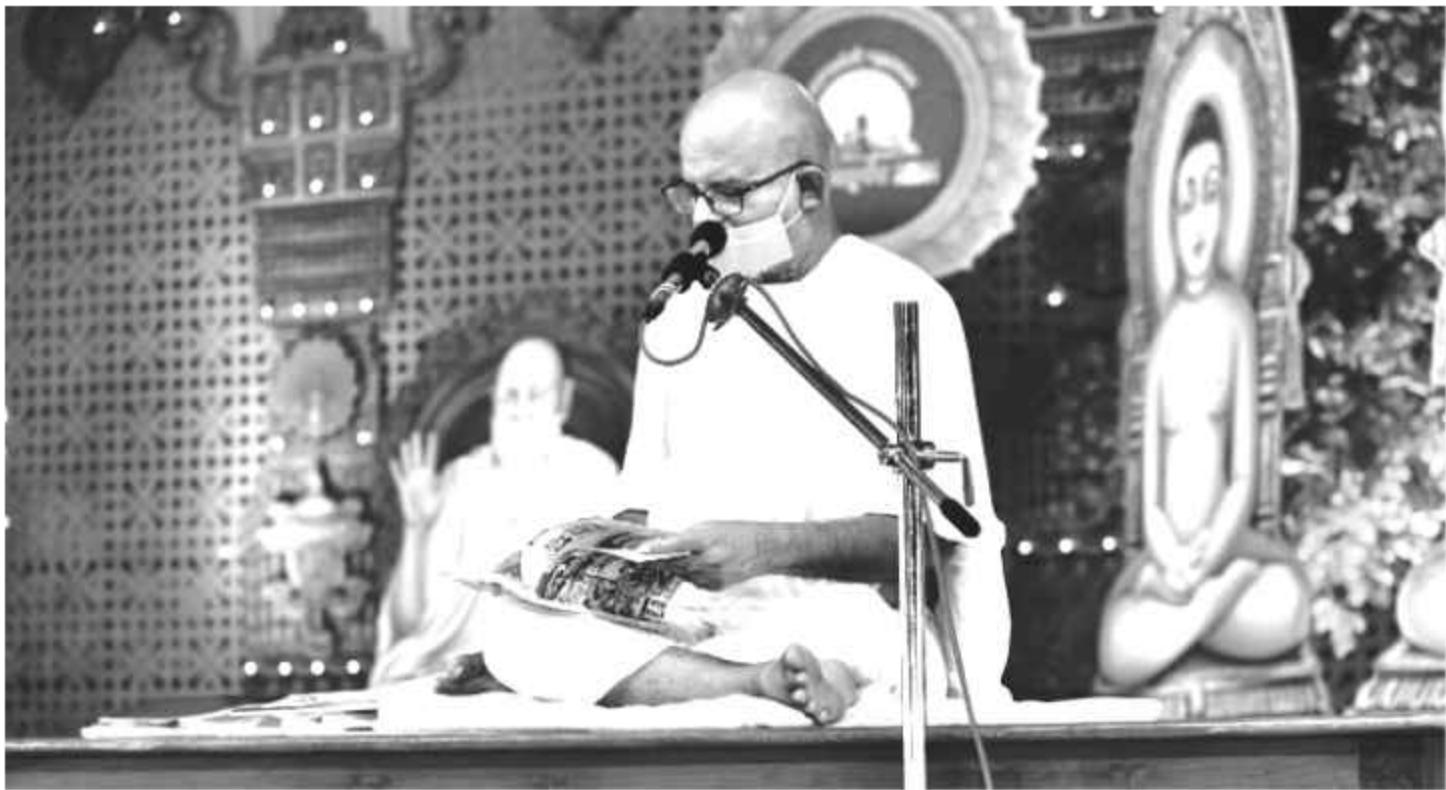
सह-संयोजक त्रय :

श्री अनिल समद्धिया
9374615000

श्री विमल लोढा
9825404433

श्री कमलेश गाडिया
9374512707





रजत जयंती विशेषांक के लोकार्पण समारोह में अणुव्रत अनुशास्ता के आशीर्वचन सुसंस्कृत नवी पीढ़ी के निर्माण में 'बच्चों का देश' की महत्वपूर्ण भूमिका : आचार्य महाश्रमण

सूरत। भगवान महावीर विश्वविद्यालय के निकट विकसित 'संयम विहार' में 29 अगस्त 2024 को आयोजित मुख्य प्रवक्ष्य कार्यक्रम में हजारों लोगों की उपस्थिति में अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने संस्था के गैरवशाली प्रकाशन 'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल मासिक पत्रिका का 'रजत जयंती विशेषांक' अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी को समर्पित किया। इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता ने अपने उद्वोधन में सुसंस्कृत नवी पीढ़ी के निर्माण में 'बच्चों का देश' की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। पत्रिका प्रकाशन के 25 वर्षों की सफल संपूर्ति के ऐतिहासिक अवसर पर अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा- अणुविभा के दो प्रकाशन हैं - 'अणुव्रत' और 'बच्चों का देश'। 'बच्चों का देश' रजत जयंती के प्रसंग से जुड़ गया है। 25 वर्षों की सम्पन्नता का प्रसंग है। बच्चे मानो भविष्य

होते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कार, अणुव्रत के संस्कार आ जाएं, बच्चों का ज्ञान भी प्रखर हो और अनेक दृष्टियों से उनमें योग्यता आ जाए तो बच्चे आगे जाकर बहुत कार्यकारी बन सकते हैं। 'बच्चों का देश' पत्रिका राष्ट्रीय बाल मासिक है। इसके माध्यम से बाल पीढ़ी का विकास हो, वो भी धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता का विकास। भौतिकता भी एक मायने में आवश्यक है, पैसा भी आवश्यक है। साथ में नैतिकता, आध्यात्मिकता, धर्म, आत्मा का विन्नन - ये भी महत्वपूर्ण हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण हो, ऐसा प्रयास होता रहे।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपने वक्तव्य में कहा - अणुव्रत आदोलन निश्चित ही अणुव्रत अनुशास्ता के मार्गदर्शन में दिन प्रतिदिन चरण न्यास कर रहा है। एक विशेष प्रकल्प हम गुरुदेव आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं - 'बच्चों का देश' बाल



पत्रिका का जिसके 25 साल पूरे हो गये हैं। नवी पीढ़ी के निर्माण में यह पत्रिका विशिष्ट भूमिका निभा रही है। देशभर से इसे जो समर्थन मिल रहा है, उसे देख कर आन्ध्रिक प्रसन्नता होती है। हाल ही में राजसमंद में आयोजित रजत जयंती समारोह में देश के कई राज्यों से आये बाल साहित्यकारों की प्रभावी सहभागिता इस तथ्य को रेखांकित कर रही थी।

'बच्चों का देश' पत्रिका के संपादक संचय जैन ने पत्रिका की रजत जयंती के उपलक्ष में राजसमंद में आयोजित तीन दिवसीय 'राष्ट्रीय बाल साहित्य समागम' की जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा - बच्चों को कैसे एक उज्ज्वल भविष्य प्राप्त हो? अणुव्रत अनुशास्ता के चिन्तन में यह बात हमेशा प्राथमिकता में रही है और उसी का परिणाम है कि अणुव्रत विश्व भारती के साथ लगभग ऐसे 10 प्रकल्प जुड़े हुए हैं जो बाल सरोकार को केन्द्र में रखकर काम कर रहे हैं। इन्हीं में एक महत्वपूर्ण नाम है 'बच्चों का देश' पत्रिका का, जिसने इसी महीने में अपने प्रकाशन के 25 वर्ष पूर्ण किये हैं।

उन्होंने पत्रिका के स्वप्नदृष्टा मोहनभाई और प्रथम सम्पादिका कल्पना दीदी को याद किया जिन्होंने अथक परिश्रम से इसे एक उत्कृष्ट पहचान पूरे देश में प्रदान की। वर्ष 2018 को उन्होंने 25 वर्षों की इस यात्रा में बड़ा मोड़ बताया जब यह पत्रिका अणुव्रत आंदोलन के साथ जुड़ी। अणुव्रत अनुशास्ता का सीधा-सीधा आशीर्वाद उसे प्राप्त हुआ और तब से लेकर आज तक निरन्तर यह पत्रिका प्रगति कर रही है।

कार्यक्रम में उपस्थित हजारों श्रीताओं से अपील करते हुए संचय जैन ने कहा कि बच्चों के भविष्य के प्रति हम सब चिन्तित रहते हैं। बच्चों का भविष्य कैसे उज्ज्वल बने? कैसे हमारे बच्चे संस्कारी हों? लेकिन उसके लिए हम प्रयास कितना करते हैं? क्या केवल स्कूली पढ़ाई पर हम निर्भर होकर रह जाएँगे? अणुव्रत के जितने बच्चों को केंद्रित प्रकल्प हैं, उनमें अपने बच्चों को आप निश्चित रूप से जोड़िए। हरेक परिवार में बच्चों की यह पत्रिका रहेगी तो बच्चा उसे अवश्य पढ़ेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बच्चों को एक उज्ज्वल भविष्य देने के संकल्प में हम अवश्य सफल होंगे।

इस अवसर पर अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा, व्यवस्था समिति सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा व महामंत्री नानालाल राठौड़, अणुविभा संपोषक रतन दुगड़ व अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा भी उपस्थित थे। विशेषांक की प्रति साध्यीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा, मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार, साध्यीवर्या श्री संबुद्धयशा व अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार को भी भेट की गयी। सभी ने 'बच्चों का देश' पत्रिका की सुदीर्घ यात्रा की प्रशंसा की व बाल पीढ़ी के लिए इसे उपयोगी बताया। उल्लेखनीय है कि साधु-साध्वी व समणी वर्ग में पत्रिका पढ़ने के प्रति उत्सुकता रहती है एवं वे बच्चों को मार्गदर्शन देने में इसकी रचनाओं का उपयोग करते हैं।

रजत जयंती विशेषांक उपलब्ध



'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल पत्रिका का रजत जयंती विशेषांक अब उपलब्ध है। 260 पृष्ठ के इस विशेषांक में आप पाएंगे गत 25 वर्षों में पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं का संकलन, पत्रिका के 25 वर्षों के सफर की यादें और राजसमंद में 16 से 18 अगस्त 2024 को आयोजित राष्ट्रीय बाल साहित्य समागम की रिपोर्ट।

**नीचे दिये मोबाइल नंबर पर बात करें और अपनी प्रति आज ही मँगवाएँ - 9414343100
विशेषांक के बारे में अपनी राय से हमें इस नंबर पर अवगत कराएँ - 9351552651**



अणुव्रत पुरस्कार 2023

प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा को प्रदत्त



मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित अणुव्रत पुरस्कार वर्ष 2023 के लिए प्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी रतन टाटा को मुम्बई स्थित उनके आवास पर 27 अगस्त को घेंट किया गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर के साथ वहाँ पहुँचे प्रतिनिधिमण्डल ने रतन टाटा को पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र सहित 1.51 लाख रुपये की राशि का चैक भेंट किया।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने रतन टाटा को अणुव्रत पुरस्कार सौंपते हुए मानव जाति को उनके सकारात्मक योगदान की प्रशंसा की एवं दुनिया में मानवीयता का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए अणुविभा परिवार की ओर से बधाई दी। नाहर ने बताया कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने रतन टाटा के प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगल कामनाएं प्रेषित की हैं। रतन टाटा ने अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति सम्मान व्यक्त किया तथा मानव मात्र की भलाई के लिए अणुव्रत आंदोलन द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की।

अणुविभा प्रतिनिधिमण्डल ने रतन टाटा को अणुव्रत साहित्य, 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं के विशेषांक भेंट करने के साथ ही उन्हें अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के विभिन्न प्रकल्पों – चुनावशुद्धि अभियान, अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स, एलिवेट, पर्यावरण जागरूकता अभियान, नशामुक्ति अभियान, जीवन विज्ञान आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखुम सुराणा, मुम्बई कस्टम कमिशनर व एलिवेट कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक अशोक कुमार कोठारी, अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी व सहमंत्री

मनोज सिंघवी उपस्थित थे। अणुव्रत पुरस्कार की शृंखला में अभी तक देश के जिन गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित किया गया है, उनमें डॉ. आत्माराम, जैनेन्द्र कुमार, शिवाजी भावे, गुलजारीलाल नंदा, डॉ. शंकरदयाल शर्मा, शिवराज पाटिल, भैरोसिंह शेखावत, टी. एन. शेषन, लालकृष्ण आडवाणी, प्रकाश आमटे, नीतीश कुमार, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, डॉ. मनमोहन सिंह इत्यादि शामिल हैं।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने मुम्बई में रतन टाटा को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान करने के पश्चात् 29 अगस्त को सूत में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी को इसकी अवगति दी। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा - "अणुव्रत आंदोलन निश्चित ही अणुव्रत अनुशास्ता की सत्रिधि में, मार्गदर्शन में दिन-प्रतिदिन चरण न्यास कर रहा है। गुरुदेव, इसका साक्षात् प्रमाण हमने देखा जब 27 अगस्त को आदरणीय रतन टाटा को वर्ष 2023 का अणुव्रत पुरस्कार दिया जाना था। हमारे पास यह संवाद आया कि संभवतः रतन टाटा साहब अस्वस्थता के कारण अणुव्रत पुरस्कार स्वयं नहीं ले पाएंगे।

हमने अणुव्रत अनुशास्ता की स्मृति की और उसी दौरान हमारे पास में एक संवाद आया कि रतन टाटा जी ने कहा है कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के यहाँ से अगर कोई प्रतिनिधिमण्डल आया है तो वह मेरे सामने आकर ही सम्मानित करे। हमारे लिये तो यह निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा चमत्कार जैसा था। जहाँ अणुव्रत अनुशास्ता का आशीर्वाद हो और कोई आंदोलन पीछे रह जाये, यह संभव नहीं होता।



संस्कारों की सृजन शाला है बालोदय शिविर

तीन दिवसीय शिविर में श्रीकृष्ण पब्लिक सीनियर
सेकंडरी स्कूल, बदनोर के 42 बच्चे हुए अभिभूत



राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी मुख्यालय में आयोजित बालोदय शिविर प्राकृतिक सौंदर्य के बीच बाल संस्कारों की सृजन शाला है। यह बात उभर कर आयी निदिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर के समापन अवसर पर बच्चों के साथ हुए वार्तालाप के दौरान।

13 से 15 सितम्बर तक आयोजित तीन दिवसीय शिविर के दौरान श्रीकृष्ण पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, बदनोर (भीलवाड़ा) के उच्च प्राथमिक स्तर तक के 42 बच्चों को विभिन्न रोचक क्रियाकलापों के माध्यम से नेतृत्व क्षमता वर्द्धन, पठन प्रवृत्ति के प्रति रुचि, सांस्कृतिक स्तर पर बौद्धिक प्रशिक्षण सहित स्वास्थ्य संचेतना और प्रकृति-पर्यावरण से जुड़ाव के साथ ही उन्हें केवल आचार नहीं, आचरण की शिक्षा के लिए अवसर प्रदान किये गये।

शिविर की मूल भावना 'बोलोगे तो सीखोगे, पूछोगे तो सीखोगे, करोगे तो सीखोगे' के लक्ष्य को ध्यान में रख सूक्ष्म आदतों को व्यवहार में उतारने के रोचक मौके पा बच्चों को अपने अंदर नया रचनात्मक संसार विकसित करने में सहयोग मिला। मौन और संयमित भोजन ऐसे ही संप्रयोग थे। विभिन्न सत्रों में मनोनीत बाल नेतृत्व रौपन जीनगर, भव्य जायसवाल, अलिचरा बानो, प्रेक्षा बुढ़ानिया, भूमित टांक के निर्देशन में बच्चों ने सीखने

योग्य प्रकल्पों में सहभागिता की तथा बोलने, संवाद करने और अपनी सांस्कृतिक रुचियों को सामने लाने के अवसर पाये।

अणुविभाके बालोदय प्रकल्प की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया के निर्देशन और शिक्षाविद् डॉ. राकेश तैलंग के मार्गदर्शन में अणुविभाके राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया का प्रबोधन और अणुविभापरिवारके देवेन्द्र आचार्य व जगदीश बैरवा का प्रबंधन निहित उद्देश्यों को पाने में सहायक रहा। बदनोर से आये गोविंद सिंह व कैलाश शर्मा के नेतृत्व और नौदिनी सहित अन्य शिक्षिकाओं की उपस्थिति में बच्चों ने रुचिकर कलात्मक एवं विक्रिटीज में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

जीवन विज्ञान के विविध सत्रों में संप्रयोग के माध्यम से डॉ. सीमा कावड़िया ने प्रेरित किया। बाल संसद बच्चों को प्रजातंत्रीय मूल्यों की सीख देने वाला सत्र रहा जिसमें 'नो बैग्स डे' पर बच्चों ने सार्थक सुझाव भी दिये। अणुविभापंचमण्डल सदस्य गणेश कच्छरा, राजमसंद अणुव्रत समिति अध्यक्ष अचल घर्मावत एवं रमेश माण्डोत की भी उपस्थिती रही। तीनों दिवसों की शिविर संयोजिका मोनिका बापना रहीं जिन्होंने बच्चों द्वारा अर्जित अनुभवों का मूल्यांकन कराया। बच्चों की प्रस्तुतियों से समापन समारोह सुन्दर बन पड़ा।





अणुव्रत वाटिकाओं की बढ़ती श्रृंखला

पौधरोपण से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

■ ■ संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■ ■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में चलाये जा रहे पर्यावरण जागरूकता अभियान के तहत देशभर की अणुव्रत समितियां अपने-अपने क्षेत्र में कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व से अवगत कराने में जुटी हैं। इसके तहत पौधरोपण के साथ ही अणुव्रत वाटिका का भी निर्माण किया जा रहा है।

फरीदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा गवर्नमेंट सीनियर सेकंडरी स्कूल खेड़ी कलां में 200 पौधे लगाये गये। समिति अध्यक्ष ने अणुव्रत पटका पहनाकर प्रिंसिपल का सम्मान किया एवं अध्यापक/अध्यापिकाओं को साहित्य व बच्चों को पारितोषिक प्रदान किये। कार्यक्रम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं समाजसेवी श्याम सुंदर जैन का सहयोग प्राप्त हुआ।

आमेट अणुव्रत समिति द्वारा तुलसी अमृत विद्यापीठ हिंदी मीडियम प्रांगण में पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति अध्यक्ष, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष आदि की उपस्थिति रही।

जोधपुर अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में श्री सीमा मॉटेसरी स्कूल के अध्यापकों व विद्यार्थियों ने अणुव्रत वाटिका में पौधरोपण किया। सिरियारी अणुव्रत समिति द्वारा आचार्य भिक्षु समाधि स्थल पर अध्यक्ष के नेतृत्व में पौधरोपण किया गया।

दालखोला अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत चेतना दिवस के अवसर पर इको फ्रेंडली कैरी बैग बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गयी। उपासिका प्रेमलता चौराड़िया एवं अनीता सुराणा के मार्गदर्शन में आयोजित प्रतियोगिता में खुशी बैद प्रथम, दृश्या गढ़ैया द्वितीय तथा पलक बच्छावत तृतीय रही।

दिनहटा अणुव्रत समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के मंत्री उदयन गुहा, म्युनिसिपैलिटी चेयरमैन गौरीशंकर माहेश्वरी, बाइस चेयरमैन साबिर साहा चौधरी, एसडीपीओ धीमान मित्र, इंवार्ज जयदीप मोदक आदि ने इको फ्रेंडली कैरी बैग का विमोचन किया। इस अवसर पर समिति की ओर से 50 कैरी बैग्स वितरित किये गये। कार्यक्रम में डॉक्टर्स, समाजसेवी, स्कूल प्रिंसिपल, सकल मारवाड़ी समाज व अन्य समाज के अध्यक्ष-मंत्री शामिल हुए।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति द्वारा ईको फ्रेंडली कैरी बैग का विमोचन साध्वीश्री कीर्तिलता के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में हुआ। साध्वीश्री ने श्रावक-श्राविकाओं से इस बैग का इस्तेमाल करने का आह्वान किया। समिति द्वारा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल में ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण किया गया। समिति द्वारा वृंदावन बाग, सेक्टर 7, आरसी व्यास कॉलोनी में पौधरोपण भी किया गया।

मंडीगोविंदगढ़ अणुव्रत समिति की ओर से भारत विकास परिषद् की परिवार मिलन बैठक और तीज उत्सव में पहुँचे सभी सदस्यों को ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण किया गया। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर समिति ने हरियावल पंजाब के साथ मिलकर तहसील परिसर में कट्टबं और बहेड़ा के पौधे लगाये। समिति की ओर से हरियावल पंजाब के कार्यकर्ताओं को ईको फ्रेंडली कैरी बैग वितरित किये गये।

जसोल अणुव्रत समिति द्वारा मुनिश्री यशवन्त कुमार व मुनिश्री मोक्षकुमार के सान्निध्य में पुराना ओसवाल भवन में ईको फ्रेंडली कैरी बैग का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल व अणुव्रत समिति के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। समिति द्वारा आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में पर्यावरण की रक्षा हेतु कपड़े की थैली का विमोचन बाड़मेर सांसद उमेदाराम बेनीवाल ने किया। कार्यक्रम में बालोतरा पार्क चंद्रा बालड, महावीर इंटरनेशनल के जोन चेयरमैन पवन नाहटा, डिप्टी डायरेक्टर प्रमिला सालेचा, अणुव्रत समिति जसोल के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व सदस्य उपस्थित थे।

बालोतरा अणुव्रत समिति द्वारा कलेक्ट्रेट में ईको फ्रेंडली कैरी बैग का विमोचन राजस्थान सरकार की उच्च स्तरीय विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष डॉ. ललित के. पंवार, जिला कलेक्टर सुशील कुमार, जिला पुलिस अधीक्षक कुन्दन कंवरिया, अतिरिक्त जिला कलेक्टर नानूराम सैनी, उप जिला कलेक्टर

अणुव्रत समाचार

राजेश बिश्नोई, पूर्व मंत्री अमरासाम चौधरी तथा पूर्व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दामोदर व्यास ने किया। डॉ. पंवार ने समिति के इस अभियान को सार्थक कहा।

जयपुर अणुव्रत समिति द्वारा साध्वीश्री मंगलप्रभा के सान्त्रिय में अणुविभा केंद्र में ज्ञानशाला के बच्चों तथा श्रावक-श्राविकाओं को 200 ईको फ्रेंडली कैरी बैग्स का वितरण किया गया। वापी अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण किया गया।

राजकीय आयुर्विज्ञान महाविद्यालय में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन

पाली अणुव्रत समिति द्वारा सुमेरपुर रोड स्थित राजकीय आयुर्विज्ञान महाविद्यालय में विकसित अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन किया गया। सचिव प्रियंका चोपड़ा ने बताया कि मुख्य अतिथि एडीएम डॉ. राजेश गोयल, विशिष्ट अतिथि एसडीएम अशोक बिश्नोई एवं भामाशाह परिवार ने अणुव्रत वाटिका के बोर्ड का अनावरण किया। पाली अणुव्रत समिति अध्यक्ष मुबुद्धि समदड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया। भामाशाह परिवार भारत कुमार, पीयूष कुमार गोगड़, केवलचंद, नरपतकुमार सूर्यप्रकाश, राजेंद्रकुमार चोपड़ा एवं राजेंद्र कुमार, आशीषकुमार, अकिंतकुमार, अमितकुमार समदड़िया का अणुव्रत समिति एवं मेडिकल कॉलेज प्रधानाचार्य द्वारा माला, दुपट्ठा एवं शॉल से बहुमान किया गया। अणुव्रत आचार सहित का बोर्ड भी उद्यान में लगवाया गया। कॉलेज प्रभारी पर्यावरण प्रभारी रीना मालवीय ने उद्यान की देखरेख की बागडोर सम्भाली।

समिति की ओर से आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में कपड़े की थैली का विमोचन जिला कलेक्टर राजेश गोयल व यूआईटी सेक्रेटरी पूजा सरसेना ने किया। इस मौके पर समिति अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के संभागीय प्रमुख मौजूद रहे। समिति द्वारा तेरापंथ भवन के आगे स्टॉल लगाकर ईको फ्रेंडली कैरी बैग का वितरण किया गया। समिति के तत्त्वावधान में राजकीय माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने पौधरोपण किया।

सिलीगुड़ी में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन

सिलीगुड़ी। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी ने दुम्बाजोत ट्राइब्ल हिन्दी हाई स्कूल में द्वितीय अणुव्रत वाटिका का निर्माण किया है। वाटिका प्रायोजक विठ्ठामोड़ नेपाल के फिन्दु उमा जोधानी के पारिवारिक सदस्य संजय कोमल बंसल ने 9 सितम्बर को वाटिका का उद्घाटन किया। स्कूल परिसर में आम, लीची, नीम, कटहल के लगाभग 25 पौधे लगाने के साथ ही इनकी

सुरक्षा के लिए बांस एवं नेट द्वारा घेराबंदी भी की गयी। समिति की ओर से विद्यालय में पर्यावरण संरक्षण के संदेश वाला होर्डिंग भी लगाया गया। समिति अध्यक्ष डिम्पल बोथरा ने स्कूल के प्रधानाचार्य पंकज शर्मा को अणुव्रत आचार संहिता का पट्ट भेंट किया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी संभाके अध्यक्ष किशन आचलिया, महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष बजरंग सेतिया, लॉयसंस क्लब से कोषाध्यक्ष मेघराज सेतिया, अणुव्रत समिति से वीरेन्द्र धाढ़ेवा, दीपक बोथरा, उपाध्यक्ष एवं वाटिका संयोजिका सुनिता बोथरा, संगठन मंत्री लिलि धाढ़ेवा उपस्थित रहीं।

अणुव्रत वाटिका में पौधरोपण के साथ ग्रीन वॉकथॉन शुरू

नवी मुंबई। नेरुल से नाकोड़ा जी (राजस्थान) के लिए ग्रीन वॉकथॉन पर्यावरण यात्रा का शुभारंभ नेरुल स्थित अणुव्रत वाटिका में पौधरोपण से हुआ। लोकनेते गणेश नाईक और एन.एम.एम.सी. कमिशनर कैलाश शिंदे ने तिरंगा झंडा दिखाकर ग्रीन वॉकथॉन को रवाना किया। इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, महाराष्ट्र पर्यावरण प्रभारी सीमा सोनी, इंजी. विराग मध्य मालती, कल्याण मित्र अर्जुन सिंधवी, मुंबई अणुव्रत समिति अध्यक्ष रोशन मेहता, मंत्री राजेश चौधरी, कोषाध्यक्ष ख्याली कोठारी, जसराज छाजेड़, देवेंद्र लोद्धा आदि उपस्थित रहे। नाकोड़ा जी तक की यात्रा के दौरान मार्ग में एक लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। ग्रीन वॉकथॉन के रूप में आने वाली अणुव्रत समितियाँ पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान में सक्रिय रूप से सहयोग करेंगी। क्षेत्रीय समिति नवी मुंबई ने भी इसमें अपनी भागीदारी निभायी।

अणुव्रत वाटिका का लोकार्पण

नवी दिल्ली। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के पर्यावरण जागरूकता अभियान के तहत दिल्ली अणुव्रत समिति द्वारा आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय छत्तरपुर में निर्मित अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन 17 सितम्बर को किया गया।

अणुविभा के प्रबन्ध न्यासी तेजकरण सुराणा ने उद्घाटन करते हुए बच्चों से कहा कि वे इस वाटिका को अपने श्रम से और निखरें। महामंत्री भीखम सुराणा ने अणुविभा द्वारा चलाये रहे प्रकल्पों की जानकारी दी। विद्यालय के प्रधानाचार्य मनदीप कुमार ने समिति के कार्यों की प्रशंसा की।

इसके साथ ही विद्यालय के बच्चों ने डिजिटल डिटॉक्स परलघु नाटिका का मंचन भी किया। इसके माध्यम से डिजिटल डिवाइस के प्रति बढ़ते आकर्षण और इससे होने वाले नुकसानों को दर्शने के साथ ही इसे कम करने के लिए जागरूकता लाने का संदेश दिया गया। इसमें विद्यालय के वाइस प्रिंसिपल

अणुव्रत समाचार

अशोक जी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर बाबूलाल दूगड़, अणुविभा के प्रकाशन प्रभारी सुरेन्द्र नाहटा, दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा, मंत्री राजेश बैंगानी, निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटाकरी, कोषाध्यक्ष विनोद चोरडिया, सह मंत्री मनोज खटेड़, प्रदीप चोरडिया, एसीसी सेण्ट्रल जोन के संयोजक चन्द्रकांत कोठारी, मोहित शर्मा, कल्पना सेठिया, मंजु बांठिया समेत अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।





बाल साहित्य क्षमाग्राम

16 से 18 अगस्त 2024
राजसमंद

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

बचपन फिर तू आ जाना, सबको गले लगा जाना...

बालमन से सराबोर काव्य गोष्ठी ने सबका मन मोहा

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'बच्चों का देश' की रजत जयंती के तहत तीन दिवसीय बाल साहित्य समागम के दौरान 17 अगस्त की शाम गाढ़ीय काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। कोटा से आये वरिष्ठ साहित्यकार भगवती प्रसाद गौतम और कांकरोली की कुसुम अग्रवाल के संयोजन में कवियों ने बाल कविताओं की प्रस्तुति से श्रोताओं को आनंदित कर दिया।

जोधपुर की अर्चना त्यागी ने अपनी प्रस्तुति में बचपन की विसंगति का मार्मिक वित्रण कुछ इस तरह से किया - "कवरा बीनता बचपन पूछता है किताबों का पता। पत्थर तेझता बच्चा पूछता है भगवान का पता।" सिरसा निवासी डॉ. शील कौशिक ने गौरीया की महिमा और आवश्यकता पर बल देते हुए कहा - "छोटी-सी होती गौरीया, हमको पाठ पढ़ाती, जरूर हो उतना ही खाओ, खुद भी थोड़ा खाती।" सहारनपुर से आये आर. पी. सारस्वत ने श्रोताओं को नानी के गाँव की सैर कुछ इस तरह से करवायी - "नानी के गाँव चलें, बड़ा मजा आएगा। मामा के संग-संग धूमेंगे खेत में, बम्बा की पटरी में दैड़ेंगे रेत में, नंगे ही पाँव चलें, बड़ा मजा आएगा।"

लखनऊ से पथारे गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने पक्षियों को सुसंस्कारी बताते हुए कहा- "नदन उपवन में चिड़ियों की खुली पाठशाला है। तीतर, मोर, बया, गौरीया, बुलबुल, मुरां आये, शिक्षक प्रमुख मोर के सम्मुख सबने शीश झुकाये, संस्कार, अनुशासन, श्रम का अधिक बोलबाला है।" शिमला के हरदेव सिंह धीमान की कविता में वह संदेश छिपा था - "खुब पछताया चुगलखोर, रोये मूर्खता पर मुरां-मोर, सभी पक्षियों ने कसम ये खायी, चुगली किसी की करो न भाई।" बरेली के गुडविन मसीह

ने मैजुदा दौर में उपेक्षा से उपजी पुस्तकों की पीड़ा को यूं बयां किया - "जोर-जोर से बोली पुस्तक, अलमारी से मुझे निकालो, दीमक मुझको काट रही है, दीमक से तुम मुझे बचा लो।"

पटियाला के डॉ. दर्शन सिंह आशट चिड़ियों की चहचहाहट कम होने से चिंतित दिखे। उन्होंने सुनाया, "बात समझ न आयी अम्मा, चिड़िया कहाँ गयी? देती नहीं दिखायी अम्मा चिड़िया कहाँ गयी?" मथुरा के संतोष कुमार सिंह ने बच्चों के मन के भाव को कुछ इस तरह से व्यक्त किया - "पापाजी को मिले नफुस्त, साथ निभाते दादाजी। पास बिटाकर अच्छी-अच्छी, बात सिखाते दादाजी।" दिल्ली के वरिष्ठ कवि सीताराम गुप्ता ने दोहों से श्रोताओं की मंत्रमुग्ध किया - "सुंदर सुंदर तितलियाँ आएँगी उड़ पास। फूलों जैसे रंग खबूलों सी बृ-बास।। ऊँचाई को जगत की गर करना है स्पर्श। जीवन में रखिए सदा, कुछ ऊँचे आदर्श।"

लखनऊ के अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' ने धरती के भूगोल की महिमा कुछ यूं सुनायी - "अक्कड़-बक्कड़ बन्धे बोल, भैया यह धरती है गोल, आओ बंटी आओ बबली, खोलें इस धरती की पोल।" दिल्ली के किशोर श्रीवास्तव ने बचपन को कुछ इस तरह से याद किया - "बचपन फिर तू आ जाना, सबको गले लगा जाना। अब्दुल, राम बहादुर से, फिर से मेल करा जाना। बचपन फिर तू आ जाना।"

वित्तीड़गढ़ के यशपाल शर्मा 'यशस्वी' ने सौर मंडल को बहुत ही सुन्दर ढंग से कुछ इस तरह प्रस्तुत किया - "धरती को है जीवन देता, सूरज नामक तारा, चाँद उजाला इससे पाकर, लगता प्यारा-प्यारा।" भीलवाड़ा की रेखा लोद्धा 'स्मित' ने इक्कीसवीं सदी के जीवों की बैठक को कुछ इस तरह से दर्शाया - "कुत्ता, बिल्ली, कागा जी ने बैठक एक बुलायी, प्रदूषित पर्यावरण पर



चिंता बहुत ज्तायी।" मुरादाबाद के राकेश चक्र ने मोबाइल की महिमा को कुछ इम तरह से व्यक्त किया - "जब लौटूं विद्यालय से मैं, तब आ, फिर किससे बतियाँ हैं प्रभु! मोबाइल बन जाऊँ, सबके मन में ही बस जाऊँ।" 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह संपादक प्रकाश तातेड़ की कविता 'पहेली' की पंक्तियाँ थीं - "कौन था वह भारतवासी, जिसने अलख जगायी, भारत की आजादी हेतु, अपनी फौज बनायी।" उदयपुर के गोपाल राज गोपाल की रचना में बालमन की कथा-व्यथा बयां हुई - "फर्स्ट रैंक सबकी नहीं आती, क्योंकि बात को देते तूल, शाम को दृश्योन सुबह स्वरूप, कितना बिजी मेरा शेड्यूल।" कांकरोली की कुसुम अग्रवाल ने सुनाया - "जब वर्षा की बूँदें जाकर धरती बीच समाईं हो-भरे पौधों से माँ की हो गयी गोद भराई।"

'बच्चों का देश' पत्रिका के सम्पादक संचय जैन ने बचपन की प्रासंगिकता को इन शब्दों में प्रस्तुत किया - "मेरी नजरों से ओझाल हो जाओ, उससे पहले भगवान रुको! ऐसी समझदारी मुझे नहीं गवाया / जो मुझे तुमसे जुदा कर दे, मैं नासमझ ही अच्छा / तुम मुझे फिर से बच्चा बना दो! जरा रुको मेरे भगवान / तुम मुझे फिर से सच्चा बना दो!"

भगवती प्रसाद गौतम ने बालमन की पीड़ा को यूं शब्दों में ढाला - "बस्ते भारी, कठिन किताबें, दूँदें कब तक बेल्ट-जुराबें, प्राण खा गया होमर्क भी, छीन लिया बचपन अनमोल।" देर रात तक आयोजित काव्य गोष्ठी के केन्द्र में बाल कविताएँ ही थीं। कमोबेश सभी रचनाकारों ने बालमन की जिज्ञासा, स्वभाव और कौतूल को अपना विषय बनाया। नये-पुराने भाव-बोध के विषयों से ओतप्रोत काव्य गोष्ठी बेहद सफल रही।

-प्रस्तुति : मनोहर चमोली 'मनु'



द्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के अधिकारियों संग अणुविभा प्रतिनिधिमंडल की बैठक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा संचालित नशामुक्त अभियान 'एलिवेट - एक्सपरियंस द रियल हाई' के सन्दर्भ में 16 सितंबर को दिल्ली रियल इम्पेरियल हॉटेल में द्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (UNODC) में क्षेत्रीय प्रतिनिधि मार्कों टेक्सेरा और



उप प्रतिनिधि सुरक्षि पंत के साथ अणुविभा प्रतिनिधिमंडल की प्रभावी बैठक हुई। इसमें अणुविभा की ओर से प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, एलिवेट के राष्ट्रीय संयोजक आईआरएस अशोक कोठारी, सह-संयोजक सीए मुदित भंसाली और श्रीराम कॉर्मस कॉलेज के पूर्व प्राचार्य पी. सी. जैन की महभागिता रही।

अशोक कोठारी ने अभियान की वर्तमान स्थिति का एक व्यापक परिदृश्य प्रस्तुत किया और भविष्य के विस्तार के लिए रणनीतिक योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की। मुदित भंसाली ने मुंबई, पुणे और मुरत में अभियान की उपलब्धियों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। एलिवेट के स्टॉप (S.T.O.P.) मॉडल के बारे में भी चर्चा हुई जिसके अनुसार S - स्टूडेंट्स, T - टीचर्स, O - ऑर्गनाइजेशन्स एवं P - पैरेंट्स मिलकर सामूहिक रूप से नशीली दवाओं के खतरे से मानव समाज को बचा सकते हैं।

तेजकरण सुराणा और भीखम सुराणा ने 75 वर्षों से गतिशील अणुव्रत आंदोलन, अणुव्रत की संयम प्रधान जीवनशैली व अणुविभा के जनहितकारी के विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों की जानकारी साझा की। पी. सी. जैन ने विश्वविद्यालयों सहित अन्य शिक्षण संस्थानों की भूमिका पर विचार रखे। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने अभियान में गहरी रुचि दिखायी और कहा कि वे अपनी टीम के साथ चर्चा कर आगे की सम्भावना तलाशेंगे। उन्होंने नशामुक्त भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए विभिन्न सामाजिक संगठनों के बीच सामूहिक कार्रवाई और सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। नियमित संपर्क व एक रणनीतिक विस्तार योजना पर काम करने की सहमति के साथ बैठक संपन्न हुई।



"नैतिक मूल्यों का केन्द्र है अणुव्रत भवन"
अणुव्रत भवन में आचार्य श्री तुलसी तल
का लोकार्पण

नयी दिल्ली। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के अणुव्रत भवन स्थित नवीनीकृत द्वितीय तल (जिसे आचार्य श्री तुलसी तल का नाम दिया गया है) के साथ ही प्रथम तल (आचार्य महाप्रज्ञ तल) में सेवा भावना केन्द्र व स्वास्थ्य केन्द्र का लोकार्पण समारोह साध्वीश्री डॉ. कुन्दनरेखा के पावन सात्रिष्ठ्य में आयोजित किया गया। शासनश्री कन्हैयालाल जैन ने इसका लोकार्पण किया।

इस अवसर पर साध्वीश्री डॉ. कुन्दनरेखा ने कहा कि जीवन में नैतिकता के विकास के लिए आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया और अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने के लिए एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर गाढ़प्रभ्रमण किया। अणुव्रत भवन अनेक लोककल्याणकारी कार्यक्रमों का साक्षी है। यहाँ से नैतिकता का संदेश जन-जन तक पहुँचे, यही अपेक्षा है। साध्वीश्री सौभाग्यशा व साध्वीश्री कल्याणशशा ने गीतिका व नाविका जैन ने कविता प्रस्तुत की।

मुख्य अतिथि गाढ़ीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक अनिल अग्रवाल ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन चरित्र निर्माण का आंदोलन है। इस आंदोलन के माध्यम से सच्ची गाढ़ सेवा हो रही है। इससे पहले अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी के, सी. जैन ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि अणुव्रत भवन अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। समाज भूषण मार्गीलाल सेठिया ने अणुव्रत भवन को बनाने में श्रावक पद्मश्री प्रमुदयाल डाबडीबाल के योगदान को याद किया। तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि अणुव्रत भवन प्रारंभ से ही अणुव्रत के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में सतत प्रयत्नशील रहा है। पूर्व प्रबन्ध न्यासी के, एल. जैन ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन एक विश्वव्यापी आंदोलन है। इसके माध्यम से चरित्र निर्माण व नैतिक मूल्यों के कार्य को बल मिल रहा है।

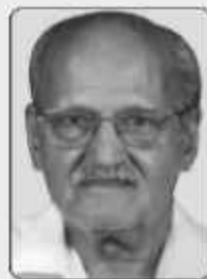
प्रभारी न्यासी शांति कुमार जैन ने कहा कि अणुव्रत भवन व अध्यात्म साधना केन्द्र धर्मसंघ के महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। न्यासी डालमचन्द बैद ने कहा कि अणुव्रत भवन में आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ और आचार्य श्री महाश्रमण के चतुर्मास दीर्घ प्रवास रहे हैं। अनेक संतों का प्रवास इस स्थान पर रहा है। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के वरिष्ठ प्रशिक्षक रमेश काण्डपाल ने कहा कि अणुव्रत भवन के कण-कण में ऊर्जा का स्रोत है। यहाँ संतों के विराजने से सकारात्मक ऊर्जा हर समय प्रवाहित रहती है। इस अवसर पर हल्दीराम गुप्त के अध्यक्ष मनोहरलाल अग्रवाल व मधुसूदन अग्रवाल समेत सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे।

अणुव्रत संरक्षक



श्री अमृतलाल जैन (खांटी)

खिंवाड़ा-नवी मुम्बई



श्री माणकचंद जैन (आच्छा)

बड़ाखेड़ा-चेन्नई



श्री सी.एल.नाहर

जाणिंदा-बैंगलुरु

अणुविभा के अर्थ संबल अधियान में आपने 1 लाख रुपये अनुदान की सहभागिता कर अणुव्रत आंदोलन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।



हावड़ा में अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम का आयोजन

हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा मुनिश्री जिनेशकुमार के सान्निध्य में 5 सितम्बर को प्रेक्षा विहार में अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम



का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा कि दुनिया में अनेक प्रकार के नशे हैं। उनमें एक नशा है मोबाइल का। मोबाइल एवं डिजिटल गैजेट्स के अति उपयोग ने इंसान को बहुत नुकसान पहुंचाया है। अगर समय रहते सावचेत नहीं हुए तो यह डिजिटल युग इंसान को कहाँ ले जाएगा, कुछ कहा नहीं जा सकता।

मुनिश्री ने कहा कि स्मार्टफोन पास में होने से कोई स्मार्ट नहीं होता, स्मार्ट होना है तो जीवन में गुणों का विकास करना होगा। सुविधा का दुरुपयोग आज शारीरिक स्वास्थ्य व मानसिक प्रसन्नता का हरण कर रहा है। अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स के माध्यम से सभी को डिजिटल गैजेट्स उपयोग का संयम सीखना चाहिए। इसके छोटे-छोटे ब्रत सभी को ग्रहण करने चाहिए। अणुव्रत समिति का यह आयाम युग की उभरती समस्या के समाधान के रूप में देखा जा सकता है। मुनिश्री परमानंद ने कहा कि मोबाइल के अति उपयोग ने इंसान को शारीरिक, मानसिक व्याधियों से ग्रसित किया है। संबंधों में दूरियां उत्पन्न की हैं। इसका संयम व्यक्ति को अनेक समस्याओं से बचा सकता है। बाल मुनिश्री कुणाल कुमार ने मुझुर गीत का संगान किया।

मुख्य वक्ता पूजा बोथरा व लावण्या कोठारी ने प्रभावी तरीके से अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स की जानकारी दी। उन्होंने भोजन के समय, सोने के समय और ड्राइविंग करते समय डिजिटल गैजेट्स का उपयोग नहीं करने का आहवान किया। अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुग्ध, अणुव्रत समिति कोलकाता के मंत्री नवीन दुग्ध ने भी विचार व्यक्त किये। एलईडी पर अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स गीत व उसकी जानकारी भी प्रदर्शित की गयी। अणुव्रत समिति द्वारा मुख्य वक्ताओं का सम्मान किया गया। इससे पहले अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने स्वागत भाषण

दिया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विरेन्द्र बोहरा व कार्यक्रम संयोजक सुनील दुग्ध ने किया। हितेन्द्र बैद ने अतिथियों का आभार जताया। कार्यक्रम जेठी देवी, मदनचंद कोठारी (सरदारशहर, साउथ हावड़ा) के सौजन्य से आयोजित किया गया।

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

चूरू। अणुव्रत समिति चूरू द्वारा अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन 5 सितम्बर को तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवार्तित अणुव्रत आंदोलन के बारे में बताने के साथ ही जीवन में इसकी



उपयोगिता बतायी। समणी डॉ. मानसप्रज्ञा ने अणुव्रत की महत्ता पर प्रकाश डाला।

नोरतमल कोठारी की अध्यक्षता में आयोजित काव्यधारा में ओमप्रकाश तंबर, एडवोकेट हकीम अहमद खान, इदरीश खन्नी 'राज', अब्दुल मन्नान 'मजहर', बाबू खान 'नूर', कमल सिंह कोठारी, दीपक चंदेलिया 'कामिल', पिंटू शर्मा 'भारतीय', इंदिरा सिंह, नीलम मुकेश वर्मा, संदीप जागिंड, महेंद्र सैनी, सरला राव, शशि कोठारी व मुबारक अली भाटी ने कविताएं सुनायी। कार्यक्रम में राजकीय रूहिया महाविद्यालय, रामगढ़ शेखावाटी के प्राचार्य डॉ. जे. बी. खान व ओमप्रकाश तंबर का शौल व अणुव्रत साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। अणुव्रत समिति की ओर से कवियों को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे। इससे पहले समिति अध्यक्ष रचना कोठारी ने अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री ताहिर खान ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन रमेश सोनी ने किया।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए कार्यशाला

चूरू। अणुव्रत समिति द्वारा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी बाल विहार विद्यालय में बच्चों के व्यक्तित्व विकास हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा ने विभिन्न प्राणायामों एवं मुद्राओं को समझाते हुए मानसिक नियंत्रण

अणुव्रत समाचार

के बारे में बताया तथा पाँच अँगुलियों पर आधारित विभिन्न अभ्यास करवाये। उन्होंने बताया कि सकारात्मक पहलुओं को अपनाकर जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाया जा सकता है।

डॉ. समणी मानसप्रज्ञा ने कहानियों के माध्यम से जीवन में फाइव एच का महत्व बताया तथा इन्हें जीवन में अपनाने हेतु प्रेरित किया। डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा एवं डॉ. समणी मानसप्रज्ञा ने छात्र-छात्राओं से प्रश्न पूछे तथा सही जवाब देने वाले विद्यार्थियों प्रथम भालेरीवाला, गौरवी गटीड, लक्षा गटीड, हर्षित शर्मा सहित अच्यापक मनीष शर्मा को भी पुरस्कृत किया गया। प्रधानाचार्य प्रेमसिंह राठौड़ ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम छात्र-छात्राओं में नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं। कार्यक्रम में कक्षा 10वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी उपस्थित रहे। संचालन अध्यापिका कविता प्रजापत ने किया।

भीकम कोठारी 'भ्रमर' देवेन्द्र पुरस्कार से सम्मानित

राजसमन्दा। स्वतंत्रता सेनानी एवं अणुव्रत महारथी देवेन्द्र कुमार कर्णाविट की स्मृति में आयोजित समारोह में व्यावर जिले के लोक प्रचेता एवं अणुव्रत सेवी भीकमचन्द कोठारी 'भ्रमर' को



'देवेन्द्र पुरस्कार - 2024' से सम्मानित किया गया। गांधी सेवा सदन के पदाधिकारी ललित बडोला, मधुसूदन व्यास, गणपत धर्मावित, शिक्षाविद् चतुर कोठारी, गुणसागर कर्णाविट और अफजल खां 'अफजल ने 'भ्रमर' को 21 हजार रुपये, साहित्य प्रशस्ति पट्ट भेंट करने के साथ ही शाल्यार्पण किया।

बाल निकेतन की प्रतिभाशाली विद्यार्थी निकिता रेवारी एवं विशाखा पालीवाल को पाँच-पाँच हजार रुपये, बाल साहित्य तथा प्रशस्ति पट्ट भेंट कर देवेन्द्र बाल प्रतिभा पुरस्कार-2024 से सम्मानित किया गया।

समारोह के प्रमुख अतिथि वयोवृद्ध साहित्यकार एवं शिक्षाविद् चतुर कोठारी ने कहा कि देवेन्द्र काका ने आचार्य तुलसी के साथ पचास वर्षों तक यात्रा कर अणुव्रत को देशव्यापी बनाया। डॉ. महेन्द्र कर्णाविट और मधुसूदन व्यास ने देवेन्द्र काका के जीवन के अद्भूत प्रसंगों को शब्द दिये।

तिरंगा रैली में दिया अणुव्रत का संदेश

अजमेर। स्वतंत्रता दिवस पर अजमेर की विभिन्न संस्थाओं ने तिरंगा वाहन रैली निकाली, जो आनासागर चौपाटी के पुष्कर रोड रीजनल कॉलेज कॉर्नर से रवाना होकर भास्कर कार्यालय



होते हुए आनासागर सर्कुलर रोड स्थित पुरानी चौपाटी पर पहुँच कर विसर्जित हुईं। अजमेर अणुव्रत समिति ने कई स्थानों पर रैली का स्वागत किया और स्थान-स्थान पर बैनर के जरिये पर्यावरण जागरूकता अभियान का संदेश दिया। समिति अध्यक्ष बी. एल. सामरा ने कहा कि अणुव्रतों को अपना कर भ्रष्टाचार एवं अराजकता के खिलाफ जंग द्वारा असली आजादी के आचार्य तुलसी के स्वप्न को साकार कर सकते हैं।

डॉ. विनीत कुमार को अणुव्रत पत्रिका भेंट

बीकानेर। 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के उपलक्ष में बाफना स्कूल में दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, मीडिया



विश्लेषक, साहित्यकार एवं लेखक डॉ. विनीत कुमार का आगमन हुआ। इस अवसर पर अणुविभा के पर्यावरण जागरूकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन ने उन्हें अणुव्रत पत्रिका भेंट कर अणुविभा के प्रकल्पों के बारे में जानकारी दी।



अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी





अणुव्रत अमृत विशेषांक पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरकशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्णि पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। हमारा विनम्र प्रयास रहा कि इस विशेषांक को पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बनाया जा सके।

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। कुछ संवाद तो इतने विस्तृत हैं कि स्थानाभाव के कारण उन्हें जस का तस प्रकाशित करना संभव नहीं हो पा रहा है। आप सब के स्नेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आगामी अंकों में आप कुछ और प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

अणुव्रत की विश्वकोशीय प्रस्तुति

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' को पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा। यह अणुव्रत की एन्साइक्लोपेडिक (विश्वकोशीय) प्रस्तुति और अणुव्रत दर्शन के बिखरे रूपों को एक खजाने में संगृहीत करने का अपूर्व प्रयास है। सात भागों में विभक्त इस विशेषांक में सम्पूर्ण अणुव्रत वाङ्मय को समाहित करने का भागीरथ प्रयत्न किया गया है।

संचय जैन का सम्पादकीय 'अणुव्रत का अमृत' न केवल अणुव्रत के स्वरूप एवं उसके फलित की सारणीर्भित व्याख्या है अपितु व्रतों के संकल्पों से निष्पत्र 'अमृत' का भी बोध कराता है। विशेषांक का दूसरा भाग परिवाजकों-संत-सतियों की अनुभूति परक वाणी से समृद्ध है। इसमें अभिव्यक्त 'अणुव्रत का अच्यात्म बल' अणुव्रतियों को स्वरूपान्तरण और प्रज्ञा के ऊर्ध्वारोहण की प्रेरणा देगा।

असंयम ही व्यक्ति को युद्ध पिपासु एवं निर्दयी बनाता है। अणुव्रत आत्म संयम का दर्शन है। विशेषांक के तीसरे भाग में अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति पर विद्वानों के आलेख हैं। इस शृंखला में डॉ. गुलाब कोठारी का लेख 'शरीर से आत्मा का मार्ग अणुव्रत' अणुव्रत दर्शन पर एक नयी दृष्टि डालता है। युद्ध के विरुद्ध सशक्त संदेश को समेटे गांधीवादी चिंतक कुमार प्रशांत का आलेख दिल को छू जाने वाला है।

विशेषांक के अन्य भागों में अणुव्रत के आलोक में जीने वाले अणुव्रतियों की आपबीती घटनाएं, उनकी दृष्टि में सामाजिक सौष्ठुव का अणुव्रत अभियान, अणुव्रत के प्रारंभिक

पुरोधाओं के संदर्भ में जुटायी खोजपूर्ण सामग्री, अणुव्रत दर्शन के विभिन्न पक्षों पर आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के मौलिक विचार, अणुव्रत इतिहास की विरल घटनाएं, दशकों से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार को समर्पित संस्थाओं का परिचय, अणुव्रत आंदोलन की अमृत यात्रा, अणुव्रत का अंतरराष्ट्रीय अभियान तथा अणुविभा के आविर्भाव एवं विकास की आविस्मरणीय यात्रा जैसी सामग्री को समेटे यह ऐसा बहुमूल्य एवं संग्रहणीय कोश है जो आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शक बनेगा। सम्पादक संचय जैन एवं उनके नेतृत्व में अथाह परिश्रम करने वाली सम्पादकीय टीम को ढेरों बधाइयाँ।

-डॉ. सोहनलाल गांधी, जयपुर

लिखे नया इतिहास

अणुव्रत ने सबको दिया, जीवन का आधार।

शांति, अहिंसा, प्रेम है, मानव का उपहार।

फैलाया है देश में, सदा प्रेम संदेश।

पढ़कर देखो तुम जरा, अणुव्रत अंक विशेष।

अणुव्रत की महिमा बड़ी, दिखा रहा यह अंक।

जिसने अपनाया इसे, वही हुआ निशंक।

मानवता के पाठका, देता अद्भुतज्ञान।

जीवन सुखद बना रहा, अणुव्रत अंक महान।

जीवन को सुरभित करे, जगे आत्मविश्वास।

अणुव्रत अंक विशेष यह, लिखे नया इतिहास।

-इकराम राजस्थानी, जयपुर



सहेजकर रखने लायक

लगभग सात दशकों से अनवरत प्रकाशित हो रही अहिंसक - नैतिक चेतना की प्रतिनिधि पत्रिका 'अणुव्रत' का यह महाविशेषांक उत्कृष्ट संपादन-प्रकाशन का कीर्तिमान स्थापित करता है। पहला भाग शुभकामनाओं का है, और इसके बाद क्रमशः जो सामग्री आपको मिलती है वह बौद्धिक और नैतिक रूप से समृद्ध करने वाली है। कुछ कहानियां और कविताएं भी हैं। विशेषांक के लेखकों में विचार और साहित्य जगत के प्रतिष्ठित हस्ताक्षरों के साथ ऐसे अन्य अनेक विद्वज्जन हैं जिनके विचार आपको उनकी मेधा और वैचारिक समृद्धि का प्रशंसक बना देते हैं। एक समीक्षक के रूप में मेरा संकेत यह है कि मैं इस विशेषांक के अनेक लेखों पर विस्तार से बात करना चाहता हूँ परंतु स्थानाभाव मुझे ऐसा करने की अनुमति नहीं देता है। यह एक ऐसा विशेषांक है जिसे हर जागरूक नागरिक को न केवल पढ़ना बल्कि सहेज कर भी रखना चाहिए। सम्पादक गण और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी इस बड़े काम के लिए हमारे आभार व अभिवादन के पात्र हैं।

-डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल, जयपुर

अणुव्रत दर्शन-इतिहास की जीवंत कहानी

अणुव्रत अमृत विशेषांक अमृत के समान है, सभी दृष्टियों से पठनीय और संग्रहणीय। अणुव्रत का दर्शन-इतिहास-संघ का श्रम सभी की जीवंत कहानी इस विशेषांक में प्राप्त होती है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की दूरदर्शिता के एहसास से पाठक अभिभूत होता है जो आज 75 वर्ष बाद भी इस आंदोलन की प्रासंकिता को जीवंत रखे हुए है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का प्रेरणा पाथेय अणुव्रत दर्शन के साथ-साथ इसकी विश्व व्यापकता का बोध करवाता है। आचार्य श्री महाश्रमण का प्रेरणा पाथेय अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए पथ प्रदर्शक है। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी और साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी के आलेख अणुव्रत के माध्यम से होने वाले सामाजिक परिवर्तन, विशेषकर नरी जागृति को रेखांकित करते हैं। अनेकानेक लेख अणुव्रत आंदोलन के शुरुआती दौर की दुर्धारियों, कार्यकर्ताओं की श्रम निष्ठा, अणुव्रत प्रवर्तक-अनुशास्ता की अणुव्रत यात्राएं ये सब मिलकर इस विशेषांक को अणुव्रत के इतिहास का जीवंत दस्तावेज बना देता है।

अणुव्रत आंदोलन के प्रत्येक वर्ष की चित्र दीर्घ विशेषांक को और मनोरम बनाती है। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक वर्ष से तपे साधु-साधियों, श्रावक-श्राविकाओं का उल्लेख इसे और प्रासारिक बनाता है। पूरी संपादकीय टीम को संग्रहणीय विशेषांक के प्रकाशन की हार्दिक बधाई।

-जिनेन्द्र कोठारी, अंकलेश्वर

अणुव्रत का एनसाइक्लोपीडिया

अणुव्रत अमृत विशेषांक अपने आप में अणुव्रत की एनसाइक्लोपीडिया जैसा है। तप और साधना इसके संपादन में पूरी तरह दिखायी पड़ते हैं। सभी लेख और कविताएं अत्यंत सारगम्भित हैं। शांति पर आचार्य महाप्रज्ञ के विचार अत्यंत सारगम्भित और उपयोगी हैं।

आचार्य महाश्रमण का 'विकास के शिखर पर आरोहण' शीर्षक आलेख अत्यंत मनोभावों से लिखा गया है। मुनिश्री सुखलाल, गुलाब कोठारी, गिरीश पंकज, मनोहर चमोली मनोज, रेनू सैनी, प्रकाश मनु, समीर उपाध्याय, सुकीर्ति भट्टनागर की कथाएं तथा जय चक्रवर्ती, वसीम अहमद नगरामी, डॉ. विष्णु शास्त्री सरल की कविताएं प्रभावित करती हैं। ऐसे सर्व उपयोगी विशेषांक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई।

-अखिलेश आर्यन्दु, दिल्ली

जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना का स्वर्णम सफर

'अणुव्रत' पत्रिका पिछले 69 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इसके हर अंक में नैतिक मूल्यों के उत्थान, श्रेष्ठ जीवनशैली से जुड़ी सामग्री प्रकाशित होती है। पत्रिका का 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' अपने आप में हर पहलू से समृद्ध है। संस्कार, संयम, नैतिक मूल्यों की स्थापना, रिश्तों-नातों की जीवन में महत्ता और उन्हें संजोकर रखने के उपाय, भाषा की श्रेष्ठता से गुणिकत मूर्धन्य सुखिभ्यात लेखकों, विचारकों, साहित्यकारों के आलेख पढ़कर आत्मिक सुख के साथ वैचारिक धरातल भी निर्मित हो जाता है। आलेखों के एक-एक शब्द जीवन में उतारने को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद।

-रामस्वरूप रावतसरे, शाहपुरा (जयपुर)

गागर में सागर

498 पृष्ठों में गागर में सागर साबित हो रहा अणुव्रत अमृत विशेषांक ऐसा ग्रंथ बन पड़ा है, जिसका हर पृष्ठ हमें एक नयी सीख दे जाता है। इसमें हर वह विषय उठाया गया है जो आज के हर वय, वर्ग एवं प्राणी मात्र के कल्याण के लिए आवश्यक है। संपादक संचय जैन, सह संपादक मोहन मंगलम एवं समस्त सहयोगी बन्धुओं ने इस ग्रंथ को धरोहर बनाने में महती भूमिका निभायी है। इसके लिए जितना आभार व्यक्त किया जाये, कम ही होगा। साधुवाद!

-वसीम अहमद नगरामी, लखनऊ

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional



International



AkashGanga®

— *Integrity at work* —

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat





अणुक्रत उद्बोधन सप्ताह

2024

01 अक्टूबर से 07 अक्टूबर

01 अक्टूबर सांप्रदायिक सौहार्द दिवस

02 अक्टूबर अहिंसा दिवस

03 अक्टूबर अणुक्रत प्रेरणा दिवस

04 अक्टूबर पर्यावरण शुद्धि दिवस

05 अक्टूबर नशामुक्ति दिवस

06 अक्टूबर अनुशासन दिवस

07 अक्टूबर जीवन विज्ञान दिवस

तत्वावधान :

अणुक्रत विश्व भारती सोसायटी

आयोजक :

अणुक्रत समितियां एवं अणुक्रत मंच

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
October, 2024

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2024-26
Licence No. U(C)-215/2024-26
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/09/2024
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Advance Month



अनुविभा

अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के तत्वावधान में आयोजित

75^{वाँ} अनुव्रत अधिवेशन

अमृतम्



बढ़ें...

अनुव्रत-शतक की ओर

सानिध्य - अनुव्रत अनुशास्ता

आचार्य श्री महाश्रमण

8-9-10 नवम्बर 2024

संयम विहार, सूरत (गुजरात)

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी को ऊपर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बॉ-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फैज़-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डॉ-55/बॉ, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फैस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दोनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन